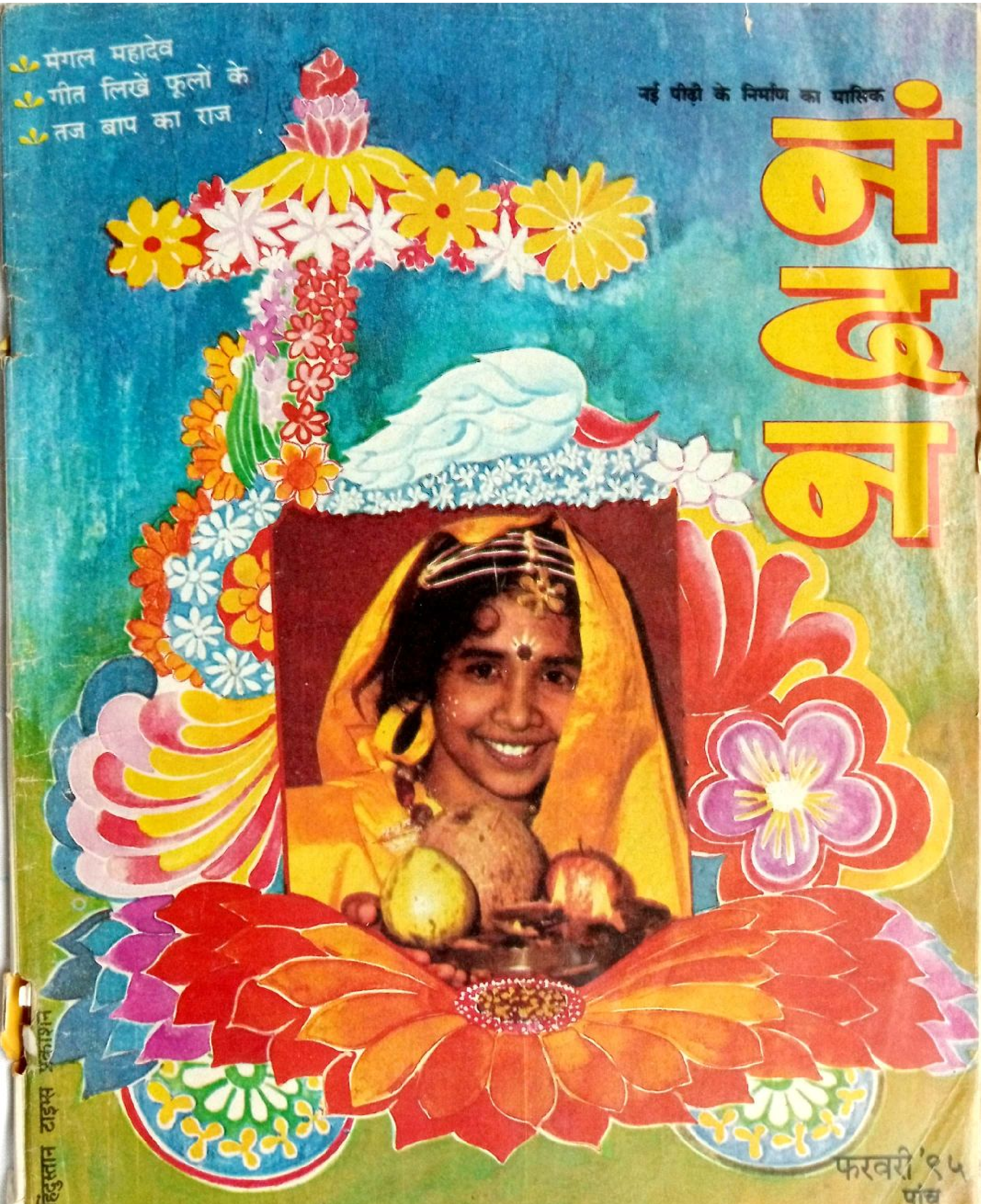
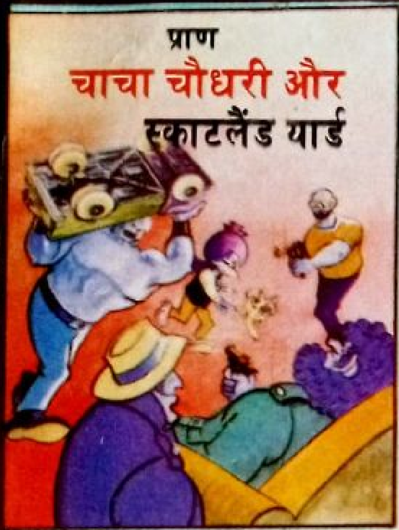
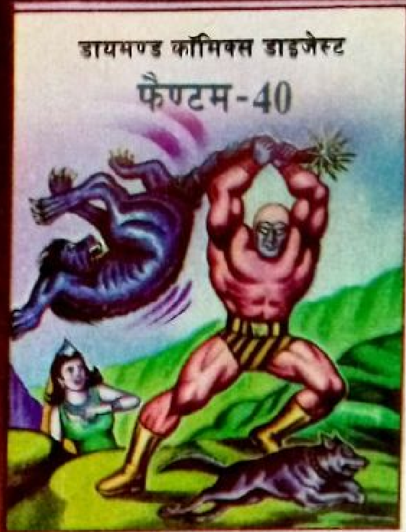

मंगल महादेव
गीत लिखें फूलों के
तज बाप का राज
नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
फरवरी '९५
पांच
रुपए
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन

भा र त में स र्वा धि क बि क ने वा ले कॉ मि क्स

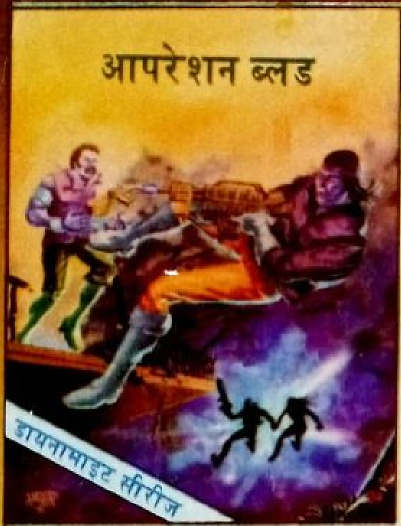
डायमण्ड कामिक्स



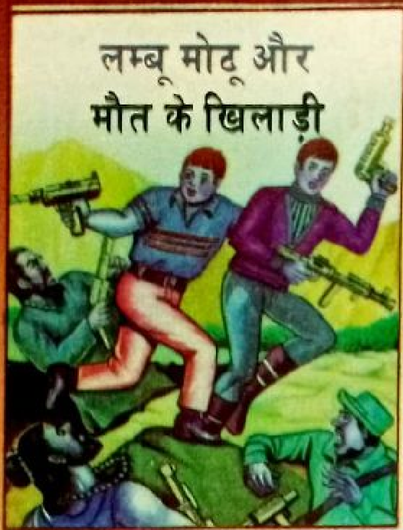
कम्प्यूटर से तेज दिमाग वाले चाचा चौधरी और विश्व के सबसे ज्यादा ताकतवर इंसान साबू का नया कॉमिक
चाचा चौधरी और स्काटलैंड यार्ड



फैण्टम कामिक्स जगत का एक अद्भुत पात्र, जो सैकड़ों वर्ष से जिन्दा है। जिसने दुनिया भर से बुराई को खत्म करने का संकल्प लिया हुआ है। जो रहता तो घने जंगल में है, पर उसका कार्य क्षेत्र पूरे विश्व भर में फैला है। वह दोस्तों का दोस्त है दुश्मनों के लिए साक्षात् मौत।



डायनामाइट जो दुनिया को दहकते अंगारों पर नचाने का शैतानी इरादा रखता था। डायनामाइट खलनायक का खतरनाक अन्दाज, शोले बरसाता, आतंक फैलाता, विनाश का लाया-- डायनामाइट सीरीज का नया कॉमिक
आपरेशन ब्लड



लम्बू मोटू दो जासूस हैं जिनकी मदद इंसपेक्टर अंकल करते हैं। लम्बू मोटू ने आतंकवादी व नशीले पदार्थों का व्यवसाय करके नई पीढ़ी को गुमराह करने वालों का भांडा फोड़ने का संकल्प ले रखा है। उनकी बुद्धि और चातुर्य से आपके भी रोंगटे खड़े हो जायेंगे।
एक सनसनीखेज कॉमिक
लम्बू मोटू और मौत के खिलाड़ी

नये डायमण्ड कामिक्स (दिसम्बर 94)

प्राण का—चाचा चौधरी और स्काटलैंड यार्ड	8.00
प्राण का—जाब और सूर्यदूत	8.00
ताऊजी और नरकवासी शैतान	8.00
फौलादी सिंह और आतंक दूत	8.00
आपरेशन ब्लड (डायनामाइट सीरीज)	8.00
लम्बू मोटू और जहरीला खून	8.00
फैण्टम-39 (डाइजेस्ट)	15.00
मैण्ड्रेक-26	8.00
जेम्स बाण्ड-29	8.00

नये डायमण्ड कामिक्स (जनवरी 95)

प्राण का—श्रीमतीजी और साड़ी	8.00
प्राण का—रमन का उपकार	8.00
अग्निपुत्र अभय और ब्लैक बॉल	8.00
चाचा भतीजा और काली दुनिया	8.00
महाबली शाका और आदमखोर जंगली	8.00
लम्बू मोटू और मौत के खिलाड़ी	8.00
फैण्टम-40 (डाइजेस्ट)	15.00
मैण्ड्रेक-27	8.00
जेम्स बाण्ड-30	8.00

डायमण्ड कॉमिक्स प्रा. लि. X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020

अम्लरोग? भूख की कमी? कब्ज़?

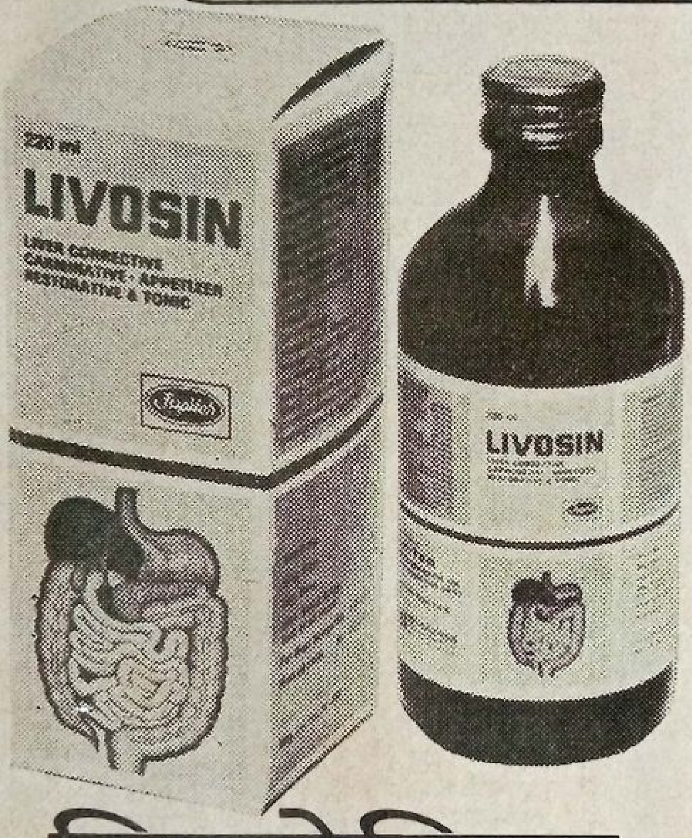
पेट की गड़बड़ी?

स्वास्थ्य और सुन्दरता का रक्षक-लिवर।

सर्वाधिक रोगों का कारण – पेट की खराबी, अस्वस्थ्य लिवर, और अनिद्रा। स्वस्थ्य लिवर हर रोग का निदान।

....डा. सरकार





पेट की गड़बड़ी दूर करने और लिवर सुरक्षित रखने के लिए

डा. सरकार का एक अनोखी खोज आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक।

लिवोसिन

लिवोसिन

एक आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक

सेवन विधि :

जब तक सीने की जलन, पाचन शक्ति में वृद्धि, अम्लरोग, कब्ज़ियत, भूख की कमी, पेट की गड़बड़ी, यकृत की अस्वस्थ्यता दूर न हो तब तक एक ग्लास गुनगुने पानी के साथ **लिवोसिन** सुबह खाली पेट और रात को सोने के समय नियमित सेवन करें।

आर्निकाप्लस-ट्रायोफर निर्माता का सहयोगी संस्था Jupiter - की आयुर्वेदिक खोज का एक अनोखा उपहार।

जुपिटर फार्मासिटिकल्स प्रा० लि०
२५, इडन हॉस्पिटल रोड़, कलकत्ता-७३
दूरभाष-२६०१५६/२७-०२२४

Jupiter · Emars · Allen · allen's india · Dr. Sarkar Group

एलोपैथिक
आयुर्वेदिक
होमियोपैथिक
औषध प्रस्तुतकारक

जिसके सहयोग से आपको मिले आरोग्य में विश्वास।

Marketed by :
Allen's India Marketing Pvt. Ltd.
ArnikaPlus Apartment, Sealdah
35, A. P. C. Road, Calcutta-9
Phone : 350-9026

Allen's Ad. India

Branch Office : Duggal House, Bank Road, Patna-800 001, Ph : 23-4953
Branch Office : 84/77B, Narayan Bagh, G. T. Road, Kanpur-208003, Ph : 24-2844



अपनाइए चिलड्रन्स कॉलेज एंड कैरियर फंड

यू टी आई के चिलड्रन्स कॉलेज एंड कैरियर फंड में निवेश, पढ़ाई-लिखाई का बढ़ता हुआ खर्च भी जुटाए, और आपके बच्चे के कैरियर के सपनों को सच बनाए.

वि शि ष्ट ता एं :

● खुली अवधि-वाली योजना. ● 15 वर्ष की उम्र तक के बच्चों के लिए विशेष योजना ● प्रति. यूनिट रु. 10/- न्यूनतम निवेश राशि रु. 2000/- और इसके बाद रु. 1000/- के गुणकों में ● इस फंड से होने वाली वृद्धि बोनस यूनिट के रूप में समय-समय पर निवेशकर्ता के खाते में जमा की जाएगी. ● वर्ष में दो बार आंशिक रकम निकालने की सुविधा- 18 वर्ष की उम्र में 50% और अतिरिक्त 10% हर वर्ष, 23 वर्ष की उम्र तक. ● दूसरे बच्चे को नामांकित करने की सुविधा.

CHILDREN'S COLLEGE AND CAREER FUND
UNIT PLAN-93
क्योंकि आपके बच्चे के भविष्य की जिम्मेदारी है आप पर

UNIT TRUST OF INDIA

भारतीय यूनिट ट्रस्ट
आपके बेहतर कल के लिए

म्युच्युअल फंड और सिक्योरिटी निवेश के साथ बाज़ार का जोखिम होता है तथा सिक्योरिटी बाज़ार को प्रभावित करनेवाले घटकों एवं शक्तियों के अनुसार योजनाओं के एन ए वी घट-बढ़ सकते हैं, पिछला कार्यनिष्पादन अनिवार्यतः भावी परिणामों का द्योतक नहीं है. चिल्ड्रन्स कॉलेज एंड कैरियर फंड केवल योजना का नाम है यह किसी भी रूप में योजना की गुणवत्ता, उसके भविष्य की संभावनाओं या आमदनी की ओर इंगित नहीं करता है. निवेश करने से पूर्व ऑफर डॉक्यूमेंट पढ़ने की कृपा करे

मुख्य कार्यालय : बम्बई. आंचलिक कार्यालय : जीवन भारती, 13वीं मंजिल, टावर-II, 124, कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001. **शाखा कार्यालय :** ❑ **नई दिल्ली :** तेज बिल्डिंग, 8-बी, बहादुरशाह जफ़र मार्ग, फोन : 3318638, 3319786. ❑ **जयपुर :** आनंद भवन, तीसरा तल, संसार चंद्र रोड, फोन : 365212. ❑ **कानपुर :** 16/79 ई, सिविल लाईन्स, फोन : 311858. ❑ **लुधियाना :** सोहन पैलेस, 455, माल रोड, फोन : 400373. ❑ **लखनऊ :** रिजैंसी प्लाज़ा बिल्डिंग, 5, पार्क रोड, फोन : 232501. ❑ **चंडीगढ़ :** जीवन प्रकाश, सैक्टर 17-बी, फोन : 543683. ❑ **शिमला :** 3, माल रोड, फोन : 4203. ❑ **आगरा :** सी-ब्लाक, जीवन प्रकाश, संजय प्लेस, महात्मा गांधी रोड, फोन : 350551. ❑ **इलाहाबाद :** यूनाईटेड टावर्स, 53, लीडर रोड, फोन : 53849. ❑ **वाराणसी :** पहला तल, डी-58/2ए-1, भवानी मार्किट, रथयात्रा, फोन : 63970. ❑ **देहरादून :** दूसरा तल, 59/3 राजपुर रोड, फोन : 26720. ❑ **यूटीआई संग्रहण केन्द्र फरीदाबाद :** बी-614, नेहरू ग्राउन्ड, एनआईटी, फरीदाबाद-121001.

❑ bdkhanna\4604-H

आओ बात करें

गणतंत्र यानी जनता के राज की बात जब भी उठती है, तो रूसो का नाम सामने आ जाता है। पौने तीन सौ साल पहले एक बालक जेनेवा शहर में भटकता फिरता था। छुटपन में मां मर गई। बाप घड़ीसाज था और बहुत गुस्सैल। उसने इस बालक को चाचा को सौंप दिया और स्वयं देश छोड़कर चला गया। चाचा ने उसे चित्रकला सीखने के लिए एक कलाकार के पास रखा। लेकिन रूसो कुछ खास सीख नहीं पाया। उसमें कई बुरी आदतें भी आ गईं। सोलह बरस का हुआ तो घर छोड़ दिया। फिर बीस बरस तक जहां-तहां भटकता रहा। भिखमंगों की तरह जीवन बिताता और तरह-तरह के कष्ट भोगता। वह कोई महापुरुष न था लेकिन इतिहास में उसका नाम अमर है।

रूसो को जीवन में पग-पग पर असफलता मिली। उसे दुत्कारा गया, उसकी निंदा की गई। न जाने कितनी-कितनी बार अपमान सहने पड़े। लेकिन आज कहा जाता है कि रूसो न होता तो फ्रांस में राज्य न पलटता। दुनिया की अनोखी क्रांति न होती। फ्रांस पर उन दिनों लुई वंश का शासन था। राजा अत्याचारी और बहुत कठोर थे। शासन में प्रजा की कोई सुनवाई न थी।

रूसो ने पहली बार कहा कि प्रजा को सताने का राजा को कोई अधिकार नहीं है। प्रजा ही राष्ट्र की देवता है। उसकी इच्छा के विरुद्ध राजा सिंहासन पर नहीं रह सकता। वहां राजवंश समाप्त हुआ। गणराज्य की स्थापना हुई। प्रजा का, प्रजा के लिए, प्रजा द्वारा राज्य किए जाने की घोषणा की गई। इस बदलाव का असर पूरी दुनिया पर पड़ा।

लेकिन यह भी अनोखी बात है कि रूसो पुस्तकें लिखता था धन कमाने के लिए। वह पेरिस आ गया था। कई बड़े साहित्यकारों से उसकी दोस्ती हो गई। कई नौकरियां भी उसे मिलीं, पर वह कहीं भी ठीक से जमकर काम न कर पाया। पत्र-पत्रिकाओं में उसके लेख छपने लगे। उसका नाम लोग जानने लगे। रूसो ने ही पहले-पहल कहा था—"मनुष्य स्वतंत्र उत्पन्न हुआ है परंतु वह सब जगह जंजीरों में जकड़ा हुआ है।"

रूसो को प्रकृति से बहुत प्रेम था। वह बगीचे में चला जाता। घंटों वहां फूलों को खिलते देखा करता। तितलियों को उड़ते देखता, चिड़ियों का चहचहाना सुनता। उसने 'स्वर्गीय ग्राम' पुस्तक लिखी। पुस्तक की हर तरफ चर्चा हुई। फ्रांस के दरबार ने उस रचना का आदर किया। रूसो को जीवन भर वजीफा देना तय किया। रूसो को तो धन की तंगी रहती ही थी, पर उसने सहायता लेने से इंकार कर दिया। वह अपनी स्वतंत्रता को बेचना नहीं चाहता था।

उसकी पुस्तक 'एमली' यानी शिक्षा तो बेजोड़ मानी गई। उसी के कारण उसे दुनिया का महान शिक्षा-शास्त्री कहा जाता है। रूसो का कहना है— 'माता-पिता ही बालक के सच्चे गुरु हैं। घर में बालक पर जो संस्कार पड़ते हैं, वे अमिट होते हैं। स्कूली शिक्षा से उन्हें बदला नहीं जा सकता।'

लेकिन लोगों ने रूसो की बातों की खिल्ली उड़ाई। उनका कहना था कि रूसो ने अपने पांच बच्चों के लिए क्या किया? उसने उन्हें राम भरोसे छोड़ दिया। वह उनके प्रति अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा पाया। विद्वानों ने उसका डटकर विरोध किया। उसके कई विचारों को बेहूदा तक बताया। हालत यहां तक बिगड़ी कि फ्रांस में उसका रहना ही कठिन हो गया। रूसो लंदन आ गया। वहां उसका अच्छा स्वागत हुआ। मान-सम्मान भी मिला। वहीं रूसो ने अपनी 'आत्मकथा' लिखी जिसमें अपनी कमजोरियों और मूर्खताओं के बारे में साफ-साफ लिख दिया। लेकिन कुछ बरस बाद अंग्रेज मित्रों से उसके झगड़े हुए। उसे अपने देश लौटना पड़ा।

रूसो के अंतिम दिन भी सुख से नहीं बीते। लेकिन साहित्य, कला और शिक्षा में नए विचारों के लिए उसे हमेशा याद किया जाता है।

— तुम्हारे भइया

नंदन

फरवरी '९५

वर्ष : ३१ अंक : ४

सम्पादक

जयप्रकाश भारती



कहां क्या है

मुखपृष्ठ : दिलीप बनर्जी **एलबम : संजय शर्मा**

सहायक सम्पादक : **देवेन्द्रकुमार**
मुख्य उप-सम्पादक : **रत्नप्रकाश शील**
वरिष्ठ उप-सम्पादक : **क्षमा शर्मा**; उप-सम्पादक : **डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्रकुमार**; चित्रकार : **नारायण**

फूल लाओ

— भारतप्रकाश भाटिया

चंद्रनगर के विक्रमसिंह पराक्रमी एवं उदार हृदय वाले राजा थे। उनका राज्य चंद्रनगर धरती पर स्वर्ग-धाम जैसा था । प्रजा बहुत सुखी थी । किसी को कुछ भी अभाव न था । उनकी कीर्ति-पताका दूर-दूर तक लहराती थी ।

चंद्रनगर की प्रसिद्धि का एक और कारण था । वह था वहां का वसंत उत्सव । राजा विक्रमसिंह को तो फूलों से बेहद प्यार था ही, उनकी प्रजा भी इस उत्सव को दिलो-जान से मनाती थी ।

तीन दिन तक चलने वाला यह उत्सव हर साल मनाया जाता थां । वसंत आगमन से कुछ समय पूर्व प्रजा स्वयं अपने हाथों से क्यारियां बनाती, पौधे लगाती । हर रोज पूजा-अर्चना के साथ उन्हें ज़ल से सींचती । प्रत्येक नगर वासी का अपने घर-आंगन एवं निकट के उद्यान से अपार लगाव हो जाता था । इन तीन दिनों में राज्य के हर उद्यान में रंग-बिरंगे फूल खिलते थे । इस तरह के असंख्य पौधों को साथ-साथ देखकर, प्रकृति के सभी रंगों का एक साथ चमत्कार दिखाई दे जाता था । ऐसा लगता था मानो प्रकृति ने धरती पर सतरंगी चादर बिछा दी हो ।

राजा विक्रमसिंह अपने दरबारियों के साथ तीनों दिन प्रजा के बीच रहते । प्रजा द्वारा उगाए फूलों की साज-सज्जा के अनुरूप पुरस्कार देते और सराहना करते थे ।

इस बार के उत्सव का आज आखिरी दिन था । सारे नगरवासी खुशी में झूम रहे थे । उत्सव समाप्त हुआ । राजा ने अचानक घोषणा कर दी—' अगले साल यह उत्सव नगर में नहीं, राजमहल में मनाया जाएगा और प्रजा भी उसमें भाग लेगी ।'

प्रजा ने प्रसन्नता प्रकट की । उसे लगा कि जब यह उत्सव राजकीय स्तर पर मनाया जाएगा तो और भी अच्छा होगा ।

समय बीतते क्या देर लगती है ? वह दिन भी



निकट आने लगा और प्रजा बेसब्री से वसंत उत्सव के आयोजन का इंतजार करने लगी । लेकिन इस बार भी प्रजा ने अपने स्वभाववश,अपने-अपने आंगन में और निकट के बगीचों में फूलों को उगाया था ।

उधर राजमहल में उत्सव की तैयारियां जोर-शोर से चल रही थीं । उत्सव का आयोजन मंत्री के कंधों पर था । उसकी इच्छा थी कि आयोजन ऐसा हो कि लोग देखते रह जाएं । राजा चाहते थे कि उत्सव के दिन समूचा राजमहल फूलों से ढक दिया जाए । किंतु इतने फूल कहां से आएं ?

वसंत का आगमन हुआ । नगर में चारों ओर फूल ही फूल खिले थे। क्या घर, क्या उद्यान, क्या आंगन—चारों दिशाएं सतरंगे फूलों से सजी थीं ।

अचानक राजा ने आज्ञा दी—'राज्य में जहां कहीं भी फूल खिले हों, उन्हें तोड़ लाया जाए । उन फूलों से राजमहल को इतना सजाया जाए, इतना सजाया जाए, कि लोग वर्षों तक याद रखें ।'

मंत्री ने कहा—"महाराज ! इसका शुभारम्भ इस बार नगर के किसी उद्यान में से एक फूल तोड़कर, उसे महल में सुसज्जित कर देने से किया जाए, तो अच्छा रहेगा।"

राजा को यह बात पसंद आ गई। वह रथ पर सवार होकर नगर के प्रमुख उद्यान में गए। एक सुंदर-सा फूल उन्होंने स्वयं अपने हाथ से तोड़ा और उसे लेकर राजमहल में आ गए। राज्य के मुख्य द्वार पर उसे सजा दिया।

सभी राजकर्मचारियों ने और नगरवासियों ने हर्ष-ध्वनि की। राजा का जय-जयकार भी किया।

राजा ने फूल अपने महल में सुसज्जित कर, वसंत उत्सव का शुभारम्भ कर दिया था। अब देखते ही देखते राजकर्मचारी नगर में जहां कहीं भी फूल देखते, उन्हें तोड़कर और टोकरियों में भर-भरकर लाने लगे, राजमहल को सजाने लगे। देखते ही देखते सारा नगर बिना फूलों का हो गया। कहीं फूल नहीं बचे। लेकिन राजमहल फूलों की सुगंध से भर उठा। ऐसा लगा जैसे यहां वसंत देवता का वास हो गया हो। सारा नगर राजमहल में उमड़ पड़ा। राजमहल की फूलों से सजावट देखकर, लोग दांतों तले उंगलियां दबाने लगे।



उत्सव का दूसरा दिन भी हंसी-खुशी से बीत गया। तीसरा दिन आया तो राजमहल में सजे फूलों में उतनी सुगंध नहीं रह गई थी। तीन दिन में वे सब भी मुरझा गए थे। राजमहल पर टंगे, उन मुरझाए फूलों से महल भी बदरंग दिखाई देने लगा। राजा के साथ-साथ लोगों के मुख भी मुरझा गए। उन्होंने बहुत भारी मन से तीसरे दिन के उत्सव में भाग लिया।

फिर भी हर साल यह उत्सव इसी तरह राजमहल में ही मनाया जाने लगा। मगर अब वह तीन दिन के स्थान पर दो दिन का रह गया था। तीसरे दिन, मुरझाने से पूर्व फूल उतारकर फेंक दिए जाते और उत्सव समाप्त हो जाता था।

धीरे-धीरे लोगों के मन में इस उत्सव के प्रति उत्साह कम होने लगा। अब वे अपने आसपास फूल उगाने में कोताही बरतने लगे। पहले फूल कई-कई दिन तक डालों पर मुसकाते रहते थे, किंतु अब उत्सव के दिन से ही कहीं कोई फूल दिखाई न देता था। प्रजा का उत्साह ऐसा कम हुआ कि एक बार वसंत के अवसर पर, राज्य में कहीं कोई सतरंगी फूल नहीं खिला।

राजा को चिंता हुई। यदि फूल नहीं उगेंगे तो यह उत्सव कैसे मनाया जाएगा ! लोगों ने भी बड़ी कोशिश की लेकिन फूल उगाने के लिए उनमें उत्साह समाप्त हो चुका था। राजा की चिंता दिनों-दिन बढ़ती गई।

राजा ने अनेक निपुण एवं दक्ष मालियों को बुलाया। दूसरे राज्यों से भी इनाम के लालच में लोगों को बुलवाया गया, लेकिन कोई भी सतरंगे फूलों को उगाने में सफल न हो सका। राजा ने अनेक पूजा अनुष्ठान भी किए, किंतु उद्यान तो अपनी सुंदरता खो चुके थे। अब वसंत आने पर भी कोई फूल नहीं मिलेगा, ऐसा राजा को भान हुआ तो वह कांप उठे।

एक दिन राजा अपने सिंहासन पर उदास मन से



बैठे सोच रहे थे कि मंत्री ने कहा—"महाराज, एक जटाधारी साधु आए हैं। वह आपसे मिलना चाहते हैं।"

राजा ने साधु महाराज को बुलवाया। साधु महाराज को राजा का चिंता-मग्न रहना अच्छा नहीं लगा। उन्होंने पूरी बात जानकर राजा से कहा—"राजन ! मैं आपके चंद्रनगर को फिर से फूलों भरा बना सकता हूं।"

राजा के शरीर में जैसे अपार शक्ति का उदय हो गया। वह सिंहासन से तत्काल उतर कर सीधे साधु महाराज के पास आए और बेसब्री से पूछा—"कैसे ?"

—"मेरे पास उपाय है।"

—"आप जल्दी उपाय बताइए। मेरी नगरी को फूलों भरी कर दीजिए।"

—"लेकिन राजन, आपको मेरा साथ देना होगा।"

—"मुझे मंजूर है। आप जो कहेंगे, वही मैं करूंगा।"

साधु महाराज ने हवन सामग्री मंगवाई और यज्ञ प्रारम्भ किया। यज्ञ एक महीने तक चलना था। रोज राजा को यज्ञ में आहुति देनी थी। राजा साधु के आदेशानुसार यज्ञ में आहुति देते। राजमहल के उद्यान के एक कोने में क्यारी-सी बना कर गुलाब की पौध को सींचते भी थे। उधर यज्ञ अपनी चरम अवस्था में था और आश्चर्य ! उद्यान में,उस कलम में से पत्ते निकलने लगे थे। देखते ही देखते कुछ ही दिनों में उसमें गुलाब के फूल खिलने लगे।

आज यज्ञ की समाप्ति का दिन था। साधु महाराज ने कहा—"राजन ! अब अंतिम आहुति है। उठिए। जाकर वे फूल तोड़कर ले आइए, जो आपने अपनी मेहनत से सींचकर इतने बड़े किए हैं।"

राजा उठे। फूलों के पास पहुंचे। उन्हें तोड़ने के लिए हाथ आगे बढ़ाना चाहा, किंतु उनका हाथ उठ ही नहीं रहा था। उन्होंने पुनः कोशिश की लेकिन इस बार भी सफल नहीं हुए। उन्हें लगा—इतने दिनों तक अपने हाथों से सींचकर जिन फूलों को इतना बड़ा किया है, उन्हें तोड़ने में तो बड़ा कष्ट होता है।

राजा को सोच में डूबा देखकर,साधु महाराज बोले—"महाराज ! जिन फूलों को इतने दिनों तक आपने अपने हाथों सींचा है, उन्हें तोड़कर इस यज्ञ में डाल देने से कष्ट हो रहा है ? लेकिन दूसरों के उद्यानों में अन्य लोगों की मेहनत से उगे फूलों को तोड़ने में तो आपको कभी कोई कष्ट न हुआ।"

राजा की आंखें खुल गईं। अब सारी बात उनकी समझ में आ गई। वह साधु महाराज के पैरों पर गिर पड़े। क्षमा मांगने लगे।

राजा ने घोषणा की कि अब से नगरवासी स्वयं वसंत उत्सव मनाएंगे। कोई भी राजकर्मचारी फूलों को नहीं तोड़ेगा। ऐसा करने वाले को सजा दी जाएगी।

कहते हैं कि वह साधु कोई और नहीं, फूलों की नगरी का देवता था, जो फूलों की दुर्दशा देख, राजा को सबक सिखाने आया था। •



मंगल महादेव
बिरला कानन, नई दिल्ली



दे दो हार

—रचनाकुमार

महर्षि उत्तंक ने घोर तपस्या की। भगवान विष्णु प्रसन्न हुए। विष्णु ने उत्तंक को वर दिया कि वह सदा ही सत्य और धर्म के पथ पर चलेंगे। उन्हें भविष्य में ऐसी शक्ति मिलेगी कि वह तीनों लोकों के लिए अनूठा काम करेंगे।

उत्तंक के आश्रम के पास जलहीन समुद्र था। वहां रेत ही रेत थी। उसी में छिपकर धुंधु दैत्य रहने लगा था। धुंधु को ब्रह्मा से वर मिला हुआ था कि देवता, राक्षस, गंधर्व या नाग उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। वह वर्ष में एक बार सांस लेने के लिए रेत से बाहर निकला करता था। उसके सांस लेने पर सात दिन तक सारी धरती पर भूकंप-सा आ जाता था। रेत, धुआं और चिंगारियां उड़ने से हर ओर धुंध छा जाती थी। सूरज की रोशनी न होने पर ठंड बढ़ जाती थी। लगता, जैसे घना कुहरा छा गया हो।

ऐसा होने पर ऋषि-मुनि अपना भजन-पूजन और यज्ञ न कर पाते। उत्तंक भी धुंध से बहुत परेशान रहते थे। वह हाथी, सूअर, शेर या बाघ बनकर आश्रम में घुस आता। तरह-तरह से उत्पात मचाया करता।

एक बार उत्तंक ऋषि ने जप-तप किया। उस दैत्य से मुक्ति की प्रार्थना की। विधाता ने कुवलय नाम का एक घोड़ा उन्हें दिया। वह दिव्य घोड़ा कभी थकता नहीं था। ऐसी कोई जगह नहीं थी, जहां वह न जा

सके। कोई उसे रोक भी नहीं सकता था।

महर्षि उत्तंक कुवलय घोड़े को लेकर राजा वृहदश्व के महल में गए। राजा अपने पुत्र को राजपाट सौंपकर वन को जा रहा था। उसने उत्तंक को अपने पुत्र ऋतध्वज के पास भेज दिया।

ऋतध्वज ने उत्तंक का स्वागत किया। महर्षि से कहा कि आप हमें दो दिन का समय दीजिए, ताकि इस घोड़े पर सवारी का अभ्यास कर सकें।

दो दिन बाद ऋतध्वज कुवलय पर सवार होकर महर्षि उत्तंक के आश्रम में जा पहुंचे। शाम को ज्योंही ऋषि-मुनियों ने संध्या शुरू की, एक मोटा सूअर वहां आ गया। वह हुंकार मारने लगा और चीजों को उथल-पुथल करने लगा। बालक उस सूअर को देखते ही चिल्लाने लगे। ब्रह्मचारी डरकर इधर-उधर छिपने लगे। वास्तव में वह सूअर धुंधु ही था।

घोड़े पर सवार ऋतध्वज ने सूअर का पीछा किया। फरसे की शक्ल के बाण उस पर छोड़ने लगे। सूअर की सारी हेकड़ी गायब हो गई। वह अपना बचाव करने के लिए भागा। धरती, आसमान, वन, पहाड़ जिधर भी वह जाता, ऋतध्वज को अपना पीछा करते पाता। हजार योजन तक वह दौड़ता-फिरता रहा। फिर एक खड्ड में कूद गया। राजा ऋतध्वज ने उसमें देखा, तो वहां अंधेरा ही अंधेरा था।

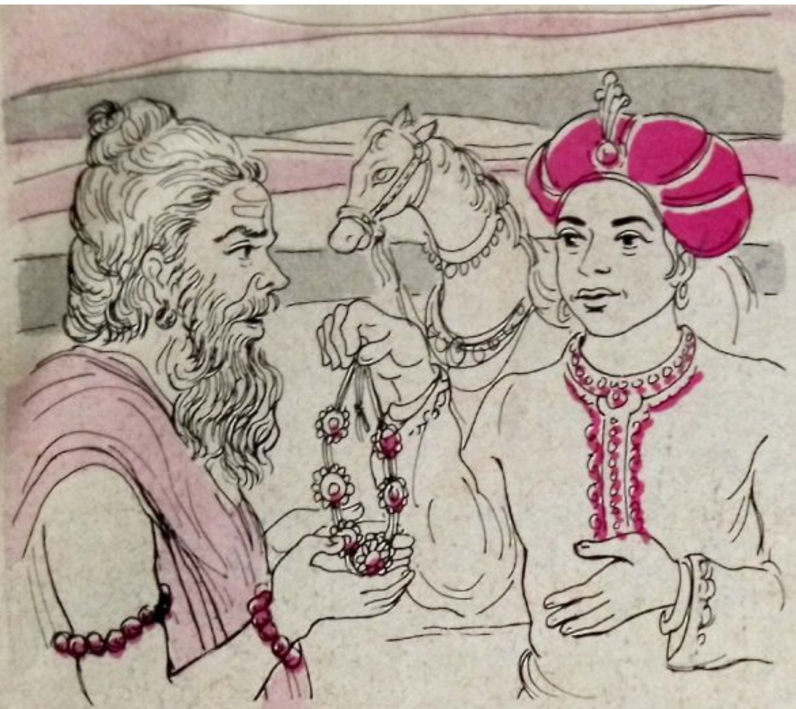
लेकिन ऋतध्वज ने परवाह न की। वह भी उस खड्ड में कूद गए। दूर तक धुंध ही धुंध थी, कुछ सूझता न था। लेकिन चलते-चलते वह पातालपुरी में जा पहुंचे। अब वहां अंधेरे का नाम नहीं था। वह इंद्रपुरी जैसी सोने की नगरी थी, पर कोई मनुष्य वहां दिखाई न दिया। काफी खोजने पर भी वह सूअर नहीं मिला।

ऋतध्वज उस नगरी में घूम रहे थे, तभी उन्होंने दो सखियों को वहां देखा। वह उनके निकट गए और अपने बारे में बताया। उन दोनों में एक थी गंधर्वराज की कन्या मदालसा। दूसरी उसकी सखी कुंडला थी। राक्षस पातालकेतु एक दिन गंधर्व नगरी गया था। मदालसा अपने बाग में घूम रही थी। तभी वहां आंधी-सी आई और चारों ओर अंधेरा छा गया। पातालकेतु मदालसा को ले उड़ा। उसे पातालपुरी में कैद कर लिया। किसी को पता न चला कि मदालसा कहां गई?

ऋतध्वज को कुंडला ने बताया कि आज पातालकेतु सूअर बनकर मुनियों को तंग करने गया था। किसी राजा ने उस पर बाणों की वर्षा कर दी। वह घायल होकर लौटा है। कई दिन तक पातालकेतु बीमार रहा।

ऋतध्वज वहीं रहते रहे। वह मदालसा पर मोहित हो गए थे। सही मौका जान, उन्होंने मदालसा से विवाह कर लिया। विवाह के बाद ऋतध्वज अपने राज्य को लौटने लगे। तभी बहुत-से दैत्यों ने उनको घेर लिया। हाथ में खांडा और ढाल लिए हुए वे 'मारो-मारो' की आवाजें कर रहे थे। लेकिन ऋतध्वज ने साहस से काम लिया। उन्होंने विशेष अस्त्र निकाल कर छोड़ा, जिससे राक्षसों का वह झुंड नष्ट हो गया। पातालकेतु भी मारा गया। उसके मरने से बहुतों ने चैन की सांस ली। ऋतध्वज मदालसा को लेकर सही-सलामत अपने राज्य में आ गए। वहां तरह-तरह की खुशियां मनाई गईं। कई दिन दावतें होती रहीं।





राजा ऋतध्वज अब भी ऋषि-मुनियों के आश्रम में जाया करते थे। वहां उत्पात मचाने वाले राक्षसों को खदेड़ दिया करते थे। एक दिन राजा वन में जा रहे थे। राह में उन्होंने एक सुंदर आश्रम देखा। वहां एक मुनि ध्यान में बैठे थे। ऋतध्वज निकट पहुंचे, तो मुनि ने आंखें खोल दीं। मुनि बोले—"महाराज, हम यज्ञ करना चाहते हैं पर दक्षिणा देने को हमारे पास कुछ नहीं है। आप अपने गले का हार दे दें, तो हमारा काम सध जाए।"

राजा ऋतध्वज दयालु तो थे ही। उन्होंने झट से गले का हार उतारकर दे दिया। इसके बाद वह मुनि बोले—"राजन, आपकी जय हो। आप एक कृपा और कीजिए। मैं नदी में घुसकर वरुण का जाप करूंगा, तब तक आप मेरे आश्रम की देखभाल करते रहें।" राजा ने हामी भर दी।

वास्तव में मुनि के वेश में वह पातालकेतु का भाई तालकेतु था। वह नदी में प्रवेश कर गया। तैरते हुए दूर निकल गया। वहां से ऋतध्वज के महल में जा पहुंचा। रो-रोकर कहने लगा—"हाय-हाय, कैसा गजब हो गया। राजा को राक्षसों ने मार डाला। मरते समय यह हार देकर उन्होंने मुझे सूचना देने को कहा है।"

यह सुनकर तो महल में हाहाकार मच गया। राजा का हार देखकर सभी को विश्वास हो गया कि उनकी मृत्यु हो चुकी है। राज्य में खबर फैल गई। मदालसा पर तो ऐसा वज्रपात हुआ कि उसके प्राण पखेरू ही उड़ गए।

दुष्ट राक्षस तालकेतु वहां से चलकर आश्रम में लौट आया, जहां राजा ऋतध्वज उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। आकर उसने राजा को धन्यवाद दिया। बोला—"आपके यहां रहने से मैंने खूब अच्छी तरह जाप किया। अब आप अपने घर जा सकते हैं।"

राजा वहां से चल दिया। तालकेतु मन ही मन बहुत प्रसन्न था कि राजा को मूर्ख बनाया।

ऋतध्वज महल में पहुंचे तो हैरान हुए। लेकिन सब को यह देखकर संतोष हुआ कि राजा सही-सलामत हैं। पर मदालसा तो मर चुकी थी। राजा इस घटना से बहुत उदास हो गए। तभी वहां दो ब्रह्मचारी आए जो ऋतध्वज के बचपन के साथी थे। उन्होंने राजा को बहुत उदास देखा, तो बोले—"राजन, शायद मदालसा फिर से जी उठे। हमारे पिता के पास कोई ऐसी जड़ी है जो सदमे से मरे इंसान को जीवित कर सकती है।"

वे दोनों तत्काल वहां से चले गए। वास्तव में वे नागराजा अश्वतर के पुत्र थे किंतु ब्रह्मचारी ब्राह्मणकुमार बनकर रहते थे। दोनों युवक पिता के पास पहुंचे और अपने मित्र राजा की व्यथा-कथा उन्हें सुनाई। पहले तो अश्वतर ने आनाकानी की किंतु पुत्रों के हठ करने पर उन्होंने बात मान ली। अश्वतर ने मणि जैसी चमकने वाली कोई जड़ी उन्हें दी और बताया कि रानी के तालू पर इसे छुआने से वह जीवित हो जाएगी।

दोनों ब्रह्मचारी राजमहल में लौटे। उन्होंने वह जड़ी राजा को दी जिसे राजा ने मदालसा के तालू से छुआया। रानी तुरंत उठ बैठी मानो नींद से जागी हो। राजा ऋतध्वज के राज्य में एक बार फिर खुशियां छा गईं। लेकिन राजा ने प्रण किया कि कैसे भी कष्ट उठाने पड़ें, वह ऋषि-मुनियोंकी रक्षा में कभी पीछे नहीं रहेंगे।

कानू

—कल्पनाथ सिंह

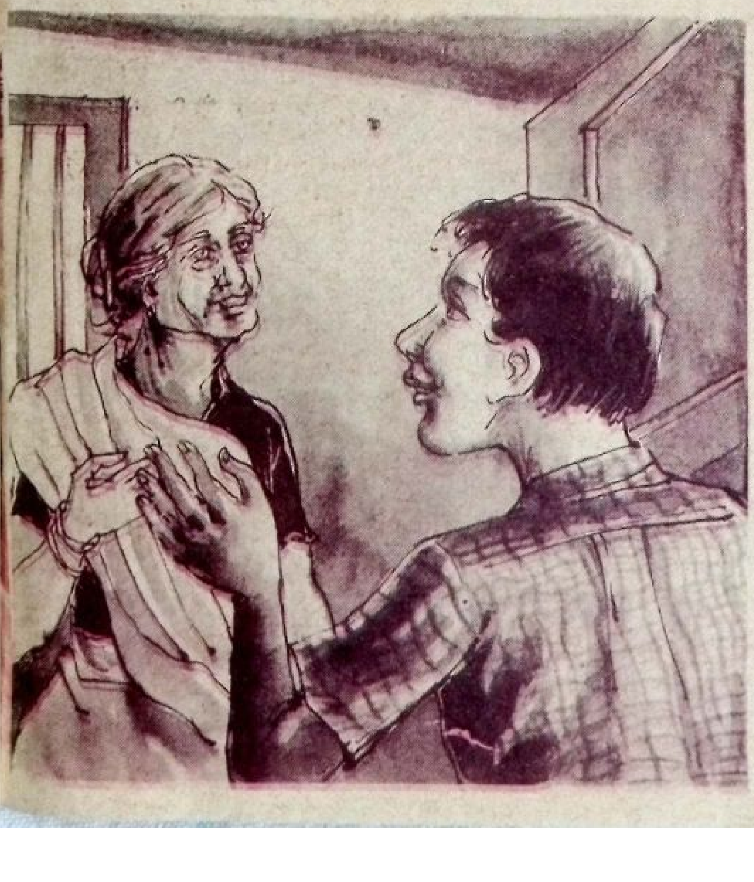
मदन स्कूल से आया तो देखा, मां उदास बैठी है। बस्ता रखकर वह मां के पास आया। पूछने लगा—"मां, आज तू इस तरह उदास क्यों बैठी है?"

"बेटा, तुम्हारी नानी की तबीयत ठीक नहीं है। सोचती हूं कि कैसे उनका हालचाल मिले?"—मां ने कहा।

—"अरे मां! बस इतनी सी बात। कल इतवार है। मैं कल ही नानी के पास जाऊंगा।" मदन की बात सुनकर मां चिंता में पड़ गई।

मदन जब पांच बरस का था, तभी उसके पिता का देहांत हो गया था। मां मेहनत-मजदूरी करके उसे पाल-पोसकर पढ़ा-लिखा रही थी। अब जाकर इस साल मदन को तेरहवां वर्ष लगा था। इतने छोटे बच्चे को अकेले नानी के पास भेजने को उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी, लेकिन मदन दूसरे ही दिन सवेरे-सवेरे नाश्ता-पानी करके नानी के यहां जाने के लिए तैयार हो गया।

मदन नानी के घर पहुंचा, तो नानी उसे देखते ही खुशी से उछल पड़ी। उसकी सारी बीमारी जैसे भाग गई। नानी का हालचाल लेकर मदन दूसरे ही दिन घर आने के लिए तैयार हो गया।



आते समय नदी पार करके मदन जब जंगल में आया, तो धूप बड़ी तेज थी। वह एक घने जंगल में पेड़ की छाया में बैठकर सुस्ताने लगा। तभी देखता क्या है कि एक घनी झाड़ी में एक शेर का बिल्कुल नन्हा-सा बच्चा 'किऊं, किऊं' कर रहा है। मदन डर के मारे एक मोटे पेड़ पर चढ़ गया कि कहीं शेरनी न आ जाए! पेड़ पर चढ़ कर मदन चारों ओर देखने लगा। किसी जानवर से लड़ाई में शेरनी घायल होकर गिर गई थी। मदन देर तक उसकी टोह लेता रहा। जब उसको विश्वास हो गया कि शेरनी सचमुच मर गई है, तो वह पेड़ से धीरे से उतरा और उसके बच्चे को चुपके से झोले में रखा, आनन-फानन में जंगल के बाहर निकल आया।

जब मदन हांफता हुआ घर पहुंचा, तो उसकी मां की जान में जान आई। नानी का हाल-चाल कहने से पहले ही मदन ने झोले से शेर के बच्चे को निकाला, तो देखा कि भूख-प्यास से वह बेबस हो रहा था। मां तो शेर के बच्चे को देखकर दंग रह गई। वह एक तरफ तो मदन को डांट रही थी, दूसरी ओर शेर के बच्चे की जान बचाने के लिए जल्दी-जल्दी अपनी बकरी का दूध लाकर उसको पिलाने लगी।

रात में मदन सोया, तो शेर के बच्चे को अपनी गोद में ही लिए रहा। धीरे-धीरे मां-बेटे के प्यार-दुलार और देखभाल से शेर का बच्चा बड़ा होने लगा। उसका एक कान कट गया था। एक ही कान था, इसलिए मदन उसको 'कानू-कानू' कहने लगा। कानू के बढ़ने के साथ ही साथ गांव के लोग उससे डरने लगे। हालांकि कानू न तो किसी से कुछ बोलता, न मदन का साथ और उसका घर छोड़कर कहीं जाता। फिर भी गांव भर के लोग नाराज होकर कहने लगे—"इस शेर के बच्चे को ले जाकर जंगल में छोड़ आओ, वरना किसी न किसी दिन यह अब किसी न किसी को मार कर खा जाएगा। एक बार आदमखोर हो गया, तो फिर गजब हो जाएगा।"

मदन और उसकी मां के न चाहने के बाद भी गांव वालों के परेशान करने के कारण एक दिन मदन

जब स्कूल चला गया, तो उसकी मां कानू को ले जाकर जंगल में छोड़ आई। मदन जब स्कूल से आया और उसे मालूम हुआ कि कानू को मां नें जंगल में छोड़ दिया, तो वह फूट-फूटकर रोने लगा। कई दिन तक कानू की याद में उसने खाना नहीं खाया, न स्कूल गया।

कानू को जंगल में छोड़ने का दुःख मदन की मां को भी कम नहीं था। वह भी कानू को अपना दूसरा पुत्र ही समझकर उसका पालन-पोषण करती रही थी। एक बार तो वह कानू को ढूंढ़ने के लिए जंगल में भी गई, जहां उसने कानू को छोड़ा था। लेकिन कानू जब लापता हुआ, तो फिर कभी उसकी झलक नहीं दिखाई दी।

धीरे-धीरे कई वर्ष गुजर गए। बरसात की अंधेरी काली रात थी। चारों तरफ घनघोर अंधेरा छाया हुआ था। रह-रहकर बिजली भी चमक उठती थी। मदन की मां कई दिनों से बीमार थी। मदन दिन-रात मां की देखभाल में जुटा रहता। घर में अब तक जो कुछ भी था, उससे मां का इलाज का खर्च चला। लेकिन अब न घर में कुछ खाने को बचा था, न दवा या इलाज के लिए पैसा। मदन मां की चारपाई के पास बैठा सोच रहा था कि पैसे के लिए किसके सामने हाथ फैलाऊं। इस बीच नानी भी गुजर गई थी।

लालटेन की रोशनी धीरे-धीरे कम हो रही थी, लगता था उसमें तेल चुक गया है। आधी रात का समय। बरसात का भयानक सन्नाटा। मां बुरी तरह कराह रही थी। अचानक मदन को लगा कि कोई दरवाजे पर धक्का दे रहा है। अनुमान से ही वह लालटेन लेकर उठा और जाकर दरवाजा खोल दिया। अचानक बाहर खड़े एक भयानक शेर को देखकर वह चीख उठा। मारे डर के वह लड़खड़ाकर जमीन पर गिर पड़ा। कुछ संभल कर उठा, तो देखा, वह शेर उसे देखकर पूंछ हिला रहा है। लालटेन के उजाले में मदन की नजर जब उसके कान पर गई, तो वह चकित रह गया। कानू को पहचानकर मदन धीरे से

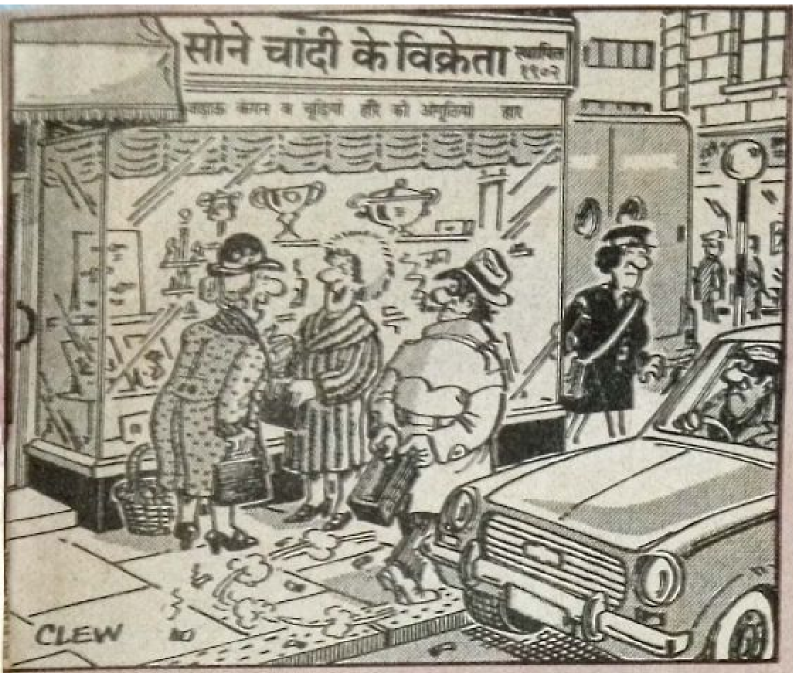


बोला—"कानू, तू आ गया?"

मदन की इस आवाज से कानू प्रसन्न होकर मदन के करीब आ, पूंछ पटकने लगा। तभी मदन चिल्ला उठा—"मां, मां, देखो-देखो, कानू आ गया।" कानू का नाम कान में पड़ते ही मदन की मां को लगा कि जैसे किसी ने उस पर जादू कर दिया हो। वह चारपाई पर उठकर बैठ गई। तब तक मदन ने प्यार से कानू का कान पकड़कर मां के पास ले जाकर खड़ा कर दिया। चारपाई पर बैठी-बैठी मदन की मां उसकी गरदन से लिपटकर बोली—"कहां रहा तू अब तक? जब मैं मरने लगी हूं, तब आया है हाल-चाल लेने?"

इतना सुनते ही कानू की आंख से दो आंसू मां के आंचल पर टपक पड़े। मुंह में दबाए हुए सामान को मां के पांव के पास रखकर वह मां के पांव चाटने लगा। पांव के पास पड़े सामान को लालटेन के उजाले में जब मां ने देखा, तो उसे लगा कि वह तो सोने की ईंट है। सोने की ईंट पहचानकर मदन से हर्ष विभोर होकर बोली—"मदन, मदन, ले देख तेरा भाई तेरे लिए क्या लाया है!" फिर कानू की गरदन अपनी बांहों में लेकर बोली—"मेरे लाल कानू, यह धन देकर मुझे तथा अपने भाई मदन दोनों को बचा लिया। अब तू तुरंत जंगल को लौट जा, वरना गांव के लोग देखेंगे, तो तुझे जीवित नहीं छोड़ेंगे।"

कानू मां का पैर चाटकर धीरे-धीरे घर से बाहर निकला। अंधेरी रात में वापस जंगल चला गया। ●



आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला **स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट।



कहानी लिखो : १३५

सामने छपे चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १० फरवरी '९५ तक कहानी लिखो-१३५, नंदन, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी प्रकाशित की जाएगी। पुरस्कार भी मिलेगा। परिणाम : अप्रैल '९५ अंक

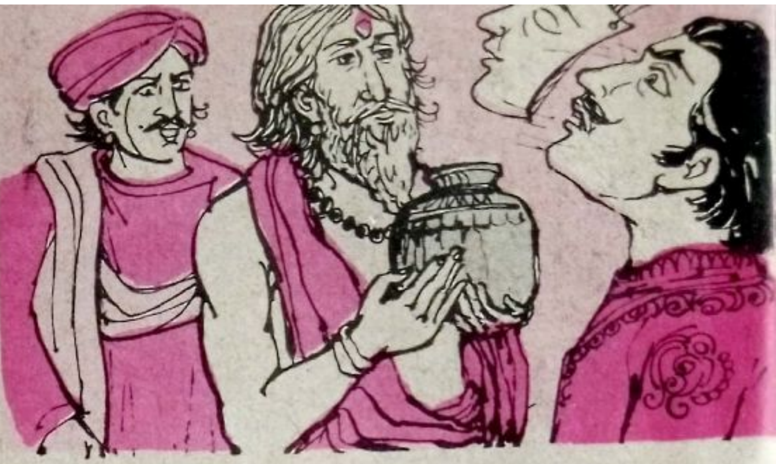
चित्र-पहेली : १३५

'फैंसी ड्रेस शो' विषय पर रंगीन चित्र बनाइए, जो ६"×९" से बड़ा न हो। चित्र के पीछे अपना नाम, आयु और पता साफ-साफ लिखिए। उसे १० फरवरी '९५ तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए। चुना गया चित्र नंदन में छपेगा। पुरस्कार भी मिलेगा। परिणाम : मई '९५ अंक



बदला राजा

—अवधेशकुमार शर्मा



भवानीपुर राज्य में चतुरसेन नामक राजा राज्य करते थे। राजा बहुत ही वीर, प्रतापी और न्यायप्रिय थे। उनके राज्य में चारों ओर सुख-शांति थी। राजा की ख्याति दूर-दूर तक के राज्यों में थी, परंतु राजा का चेहरा बहुत ही कुरूप था, जिस कारण वह अक्सर ग्लानि महसूस करते और हमेशा नकाब में ही रहते।

भवानीपुर राज्य का मंत्री था वीरभद्र। वह राजा से घृणा करता था। उसकी नजर हमेशा राजा की गद्दी पर रहती थी। वह किसी भी तरह राजा बनना चाहता था। राजा को शिकार करने का भी शौक था।

एक दिन उन्होंने शिकार पर जाने का निश्चय किया। मंत्री वीरभद्र को ऐसा सुनहरी मौका फिर कब मिलता? इसलिए वीरभद्र ने अपने कुछ सैनिकों को लेकर राजा के साथ चलने का फैसला कर लिया। शिकार करते समय राजा चतुरसेन सबसे आगे चल रहे थे, तभी मंत्री ने मौका देख, राजा का वध कर दिया और वहीं जंगल में दफना दिया। फिर राजा के कपड़े तथा नकाब पहनकर वापस राज्य में आ गया। नकाब के कारण कोई भी उसे पहचान नहीं सका। साथ ही राज्य में यह घोषणा भी करा डाली कि मंत्री वीरभद्र शेर का शिकार हो गए।

राजा के बदल जाने से राज्य में धीरे-धीरे बदलाव आने लगा। जनता पर अत्याचार बढ़ने लगे। किसानों पर करों का बोझ लाद दिया गया।

उसी राज्य में अजीतसेन नाम का एक होनहार युवक रहता था। वह राजवैद्य का पुत्र था। वे दोनों भी इस बदलाव से अत्यधिक परेशान थे। राजा के पैर में गहरा घाव था जिसका इलाज राजवैद्य कर रहे थे। घाव अभी तक भरा नहीं था। राजा बदलने के बाद पहली बार राजवैद्य राजा के शयनकक्ष में जा रहे थे। जब राजवैद्य उनके शयनकक्ष में गए, तब राजा सो रहे थे। राजवैद्य की नजर राजा के पैर पर गई, तो वह दंग रह गए क्योंकि पैर पर तो किसी घाव का निशान नहीं था। राजा कुछ बदले हुए भी नजर आ रहे थे। राजवैद्य चिंतित मुद्रा में चुपचाप घर चले आए। सारी बातों से अजीतसेन को अवगत कराया तो उसका माथा भी ठनका।

एक दिन राजा को कुछ सैनिकों ने आकर बताया—"राज्य में एक धर्मात्मा पधारे हुए हैं। वह आपको विजयश्री होने का तिलक लगाना चाहते हैं। साथ ही अभिमंत्रित जल से नहलाना चाहते हैं। स्नान के बाद आपकी आयु भी बढ़ जाएगी।" आखिरकार राजा ने उनकी विनती स्वीकार ली और उन्हें दरबार में आमंत्रित कर लिया।

महात्मा ने पहले तो राजा को विजयश्री का तिलक लगाया। फिर अभिमंत्रित जल के बहाने राजा के ऊपर लाल चींटियां डाल दीं। चींटियां राजा के नकाब में घुस गईं। उनके काटने से राजा दर्द से तिलमिला उठा और अपना नकाब उतार फेंका। नकाब के उतरते ही उसे पूरे दरबार ने पहचान लिया कि वह राजा चतुरसेन नहीं, बल्कि मंत्री वीरभद्र है। मंत्री का भेद खुलते ही वहां खड़े उसके विश्वासपात्र सैनिक भागने लगे।

धर्मात्मा के कहने पर वीरभद्र और उसके सैनिकों को पकड़ लिया गया। वीरभद्र से सारा किस्सा सुनकर, उसे आजीवन कारावास में डाल दिया गया। सभी ने देखा कि धर्मात्मा के वेश में कोई और नहीं बल्कि राजवैद्य का पुत्र अजीतसेन था। अजीतसेन की इस लीला से सारा दरबार खुश था। राज्य को एक राजा की जरूरत थी इसलिए सभी की सहमति से अजीतसेन को राजा घोषित कर दिया गया। अब एक बार फिर भवानीपुर राज्य में सुख-शांति छा गई। ●



उड़ चलो

—मनोज राय

प्राचीन काल में डबलिन आधुनिक शहर नहीं था। वह मात्र एक गांव था। उस गांव में मेरी नाम की एक लड़की रहती थी। मेरी स्वभाव से विनम्र थी। एक बार वह अपनी सहेलियों के साथ जंगल में लकड़ी चुनने गई। जंगल में तरह-तरह के पेड़ थे।

कुछ दूरी पर एक सुंदर चंदन का पेड़ था। मेरी और उसकी सहेलियों ने सोचा कि चंदन की लकड़ी बहुत ऊंचे दाम में बिकेगी। उन लोगों ने ढेर सारी लकड़ियां काट डालीं। लकड़ियों को लेकर मेरी एवं उसकी सहेलियां घर की तरफ चल पड़ीं।

रास्ते में उनको एक संत मिला। संत ने रुककर पूछा—"ये लकड़ियां कहीं उस चंदन के वृक्ष की तो नहीं ?"

"हां संत जी, हम उसी चंदन के पेड़ से लकड़ियां काटकर लाए हैं।"—मेरी ने नम्रतापूर्वक कहा।

"तब तो बहुत बुरा हुआ। उस पेड़ पर राक्षस निकोलस रहता है। अब उसे पता चलेगा, तो वह तुम लोगों को जान से मार डालेगा।"—संत ने चिंतित स्वर में कहा।

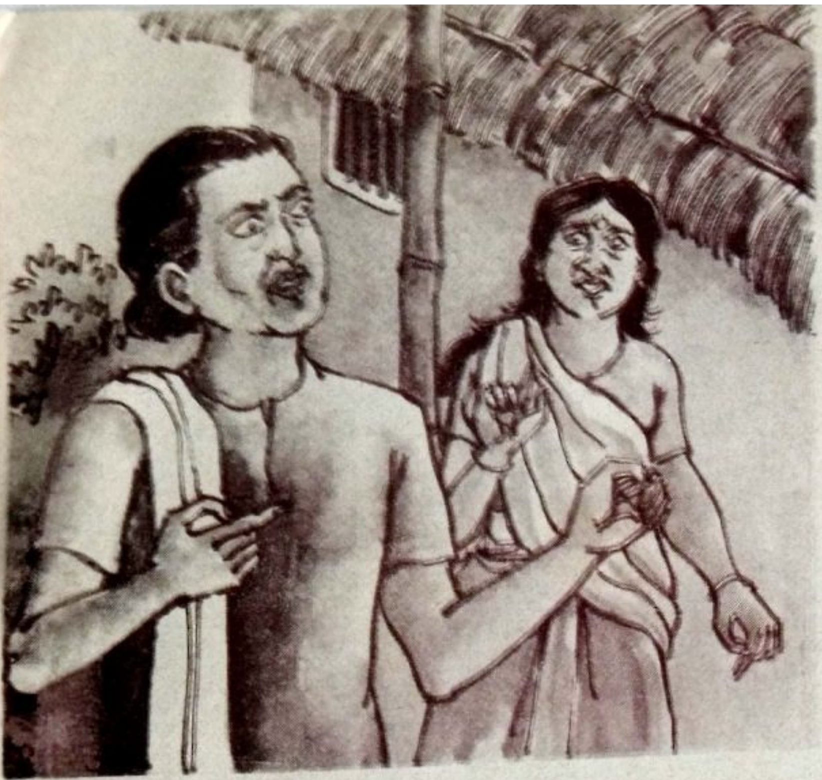
लड़कियां डर के मारे रोने लगीं। तभी दूर कहीं से भयंकर गर्जना सुनाई पड़ी। राक्षस निकोलस गुस्से से कांपते हुए दौड़ा चला आ रहा था। उसे आते देखकर लड़कियां संत के पैर पकड़कर विनती करने लगीं—"संत जी, किसी भी तरह से हमें बचा लीजिए, नहीं तो वह दुष्ट राक्षस हमें मार डालेगा।"

लड़कियों को बिलखते देखकर संत को दया आ गई। संत ने मंत्र पढ़ा और देखते ही देखते लड़कियों के पंख निकल आए।

संत बोले—"अब तुम सब हवा में उड़ सकती हो। आने वाली पीढ़ी में तुम परियों के नाम से जानी जाओगी। मगर वचन दो कि तुम लोग सदा अन्याय के खिलाफ लड़ोगी और हमेशा बच्चों से प्यार करोगी।"

सब लड़कियों ने वचन दिया। निकोलस राक्षस अब काफी नजदीक आ चुका था। परंतु इससे पहले कि वह लड़कियों को पकड़ पाता, वे आकाश की तरफ उड़ चलीं। राक्षस जमीन पर पैर पटकता ही रह गया।

कहा जाता है कि आज भी चांदनी रात में डबलिन की गलियों में मेरी एवं उसकी सहेलियां उड़ती दिखलाई पड़ती हैं। **(आयरलैंड की लोककथा)**



झूठा नाम

—विजय अग्रवाल

राजा भोज के राज्य में एक गरीब ब्राह्मण रहता था। उसके घर में कुल तीन लोग थे—उसकी मां, पत्नी और वह खुद। ब्राह्मण आलसी था, इसलिए वह गरीब भी था। उसका एक ही काम था —सुबह होते ही नगर में निकल जाता, और जहां से भी थोड़ी-बहुत भिक्षा मिलती, ले आता। उसी से घर का खर्च चलता।

एक दिन वह नगर में भटकता रहा। सुबह से शाम हो गई। चलते-चलते थक गया। लेकिन उसे भिक्षा नहीं मिली। जब वह घर लौटा तो उसे खाली हाथ देख, पत्नी ने पूछा—"आज खाली हाथ कैसे आए ?"

ब्राह्मण ने कहा—"काफी यत्न किया, किंतु आज कोई भी दाता नहीं मिला। क्या करता ? आखिर जब थक गया तो लौट आया।"

ब्राह्मण का उत्तर सुनकर उसकी पत्नी चिंतित होकर बोली—"तो फिर आज भोजन कैसे बनेगा ?"

"मैं रोज भिक्षा में अन्न लाता हूं। क्या उसमें से इतना भी नहीं बचता कि एक दिन का भोजन भी बन सके ?"—ब्राह्मण ने कहा।

सारा दिन चलते-चलते ब्राह्मण बहुत थक चुका था। भूखा तो वह था ही। अब यह उम्मीद भी नहीं रही कि जल्दी से कुछ खाने को मिल जाएगा। इसलिए उसे क्रोध आ गया। जब ब्राह्मण को क्रोध आया, तो ब्राह्मणी भी उबल पड़ी। आखिर उसकी भी क्या गलती थी! धीरे-धीरे बात बढ़ती गई और हाथापाई तक की नौबत आ गई। इसमें ब्राह्मणी को चोट लग गई। देखते ही देखते ब्राह्मणी के सिर से खून बहने लगा। वह चिल्लाई तो लोग दौड़कर आ गए। तभी राजा भोज के सैनिक वहां से गुजरे। उन्हें बात पता चली तो ब्राह्मण को पकड़ लिया। उसे राजसभा में ले गए।

सभा लगी हुई थी। राजा भोज अपने सिंहासन पर बैठे थे। ब्राह्मण को राजसभा में पेश किया गया। उसे देखकर राजा भोज ने पूछा—"यह कौन है ? इसने क्या अपराध किया है ?"

ब्राह्मण को पकड़कर लाने वाले सैनिकों ने सिर झुकाकर उत्तर दिया—"राजन, यह एक ब्राह्मण है। इसने अपनी पत्नी के साथ मारपीट की। उसे चोट लगी। इसकी पत्नी का आरोप है कि ब्राह्मण अनाज लाकर नहीं देता और भोजन मांगता है। राजन ! इस भूखे ब्राह्मण ने क्रोध में आकर अपनी पत्नी को घायल कर दिया है।"

थोड़ी देर तक राजा भोज कुछ सोचते रहे। और फिर बोले—"अरे विप्र ! क्या ये जो कुछ कह रहे हैं, वह सत्य है ?"

ब्राह्मण ने पूरी विनम्रता से उत्तर दिया—"महाराज ! ये लोग जितनी भी बातें कह रहे हैं, सभी सत्य हैं, केवल एक बात को छोड़कर। वह एक बात यह है कि ये मुझे ब्राह्मण बता रहे हैं। किंतु सच तो यह है कि मैं ब्राह्मण नहीं हूं।"

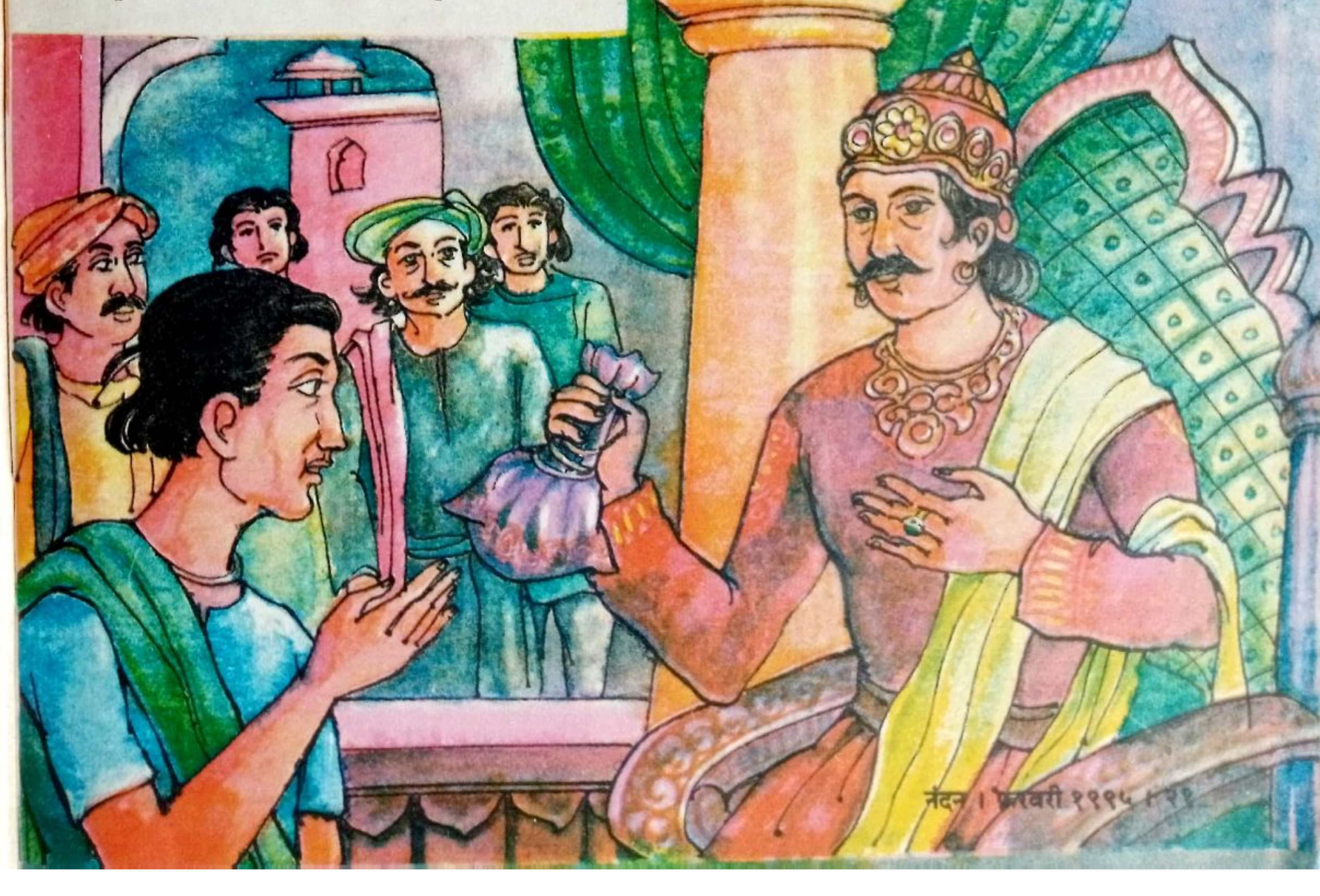
ब्राह्मण की यह बात सुनकर राजसभा में सन्नाटा छा गया। वहां बैठे सभी सभासदों ने क्रोध भरे नेत्रों से सैनिकों की ओर देखा। वे यह सोच रहे थे कि 'आखिर सैनिकों ने राजा भोज के सामने असत्य बोलने

का दुःस्साहस कैसे किया !' ब्राह्मण की बात सुनकर राजा भोज विचलित हो उठे । क्योंकि उन्हें यह आशा नहीं थी कि सैनिक असत्य वचन बोलेंगे । यदि राजकर्मचारी ही असत्य बोलने लगे, तब भला प्रजा का क्या होगा ! यह बात राजा भोज को बेचैन करने लगी । राजा भोज को चुप किंतु परेशान देखकर मंत्री ने ऊंची आवाज से पूछा—"सैनिको, यह क्या गड़बड़ है? तुम तो इसे ब्राह्मण बता रहे थे ।"

यह सुनकर सैनिक घबरा गए । ब्राह्मण समझ गया कि बात गड़बड़ हो रही है । शायद उसकी बात लोगों ने समझी नहीं है, इसलिए उसने समझाने का प्रयत्न करते हुए कहा—"राजन ! ब्राह्मण वही कहलाता है, जिसमें सत्य, संतोष और धैर्य जैसे सद्गुण होते हैं । मैंने जन्म तो ब्राह्मण कुल में अवश्य लिया है, लेकिन मुझमें इन सभी गुणों का अभाव है । इसलिए मैं ब्राह्मण होने के बाद भी ब्राह्मण नहीं हूं ।"

राजा भोज ब्राह्मण की बात सुनकर बहुत प्रभावित हुए । उन्होंने सोचा—'विश्व में बहुत थोड़े-से लोग ही ऐसे होते हैं, जो अपनी गलती समझते है, और उसे स्वीकार करते हैं ।' वह जान गए कि ब्राह्मण अपनी गरीबी के कारण परेशान है । उन्होंने तुरंत कोषाध्यक्ष को आदेश दिया—"इस ब्राह्मण को एक हजार मुद्राएं दे दो ।"

राजा भोज का यह निर्णय सुनकर सारे दरबारी चकित रह गए । कहां तो सब सोच रहे थे कि ब्राह्मण को अपनी पत्नी के साथ मार-पीट करने के आरोप में दंड मिलेगा, और कहां इसे एक हजार मुद्राओं का पुरस्कार मिल रहा है । राजा भोज भी उनका भ्रम समझ गए । तब उन्होंने स्पष्ट किया कि ब्राह्मण को दंड के बदले धन क्यों दिया गया है । पूरी सभा राजा भोज का जय-जयकार कर उठी । ब्राह्मण उन्हें आशीर्वाद देकर चलने लगा । जब वह जा रहा था, तो राजा भोज ने उससे कह दिया—"आगे से भिक्षा मत मांगना । अपनी बस्ती के बच्चों को शिक्षा-दान दो । तुम्हें धन-दान मैं दूंगा ।" ●





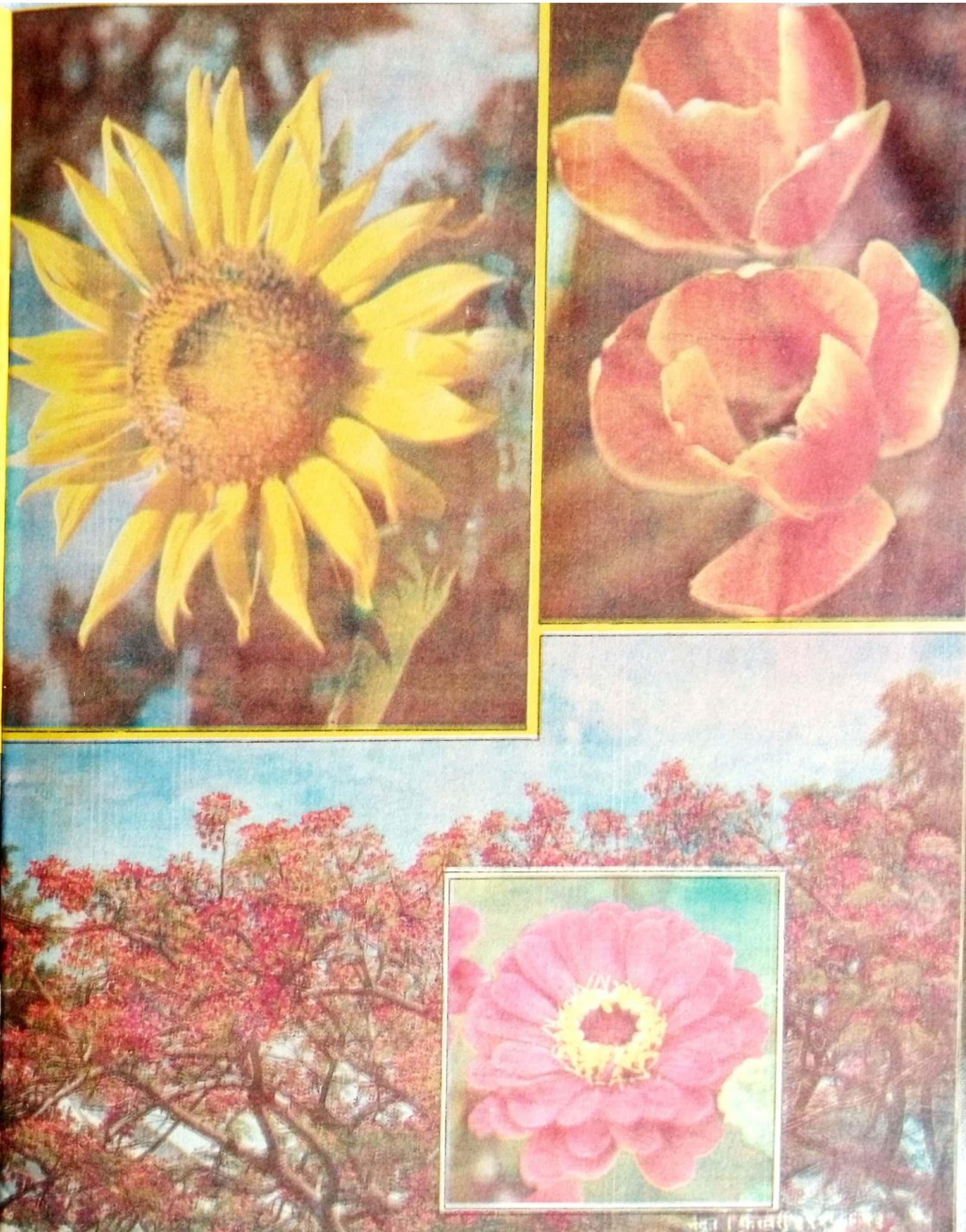
छायाकार : देवयानी बनर्जी, तिमिर दत्त, वेद मित्र, विद्याव्रत, सुरेश ऋतुपर्ण, देवव्रत बनर्जी

आओ गीत लिखें फूलों के









बज उठी भेरी

—शाण्डिल्यन

तंजाऊर के राजा थे प्रतापसिंह । वह बहुत पराक्रमी थे । आस पास के राजा – महाराजा उन्हें आदर से खड्गपुत्र भी कहते थे । उनकी इकलौती बेटी थी नंदिनी । नंदिनी अपने पिता के समान पराक्रमी और चतुर थी । लोग उसे प्यार से खड्गपुत्री कहते थे ।

एक दिन नंदिनी ने राजा प्रतापसिंह से कहा—"पिता जी, मैं श्रीरंगम स्थित रंगनाथ स्वामी मंदिर में पूजा करने जाना चाहती हूं ।"

अगले दिन नंदिनी डबीरदेव के साथ पूजा करने चल पड़ी । साथ में कुछ सैनिक भी थे । वे मंदिर के मुख्य द्वार पर पहुंचे । पुजारी का इशारा पाते ही सैनिक वहीं रुक गए । पुजारी ने पूजा का थाल नंदिनी को दे दिया ।

थोड़ी देर बाद नंदिनी मंदिर के पूजा स्थल पर पहुंच गई । मंदिर के अंदर वाले कपाट बंद थे । राजकुमारी नंदिनी ने वहां एक युवक को बैठे देखा । वह चौंकी ।

युवक की आंखें बंद थीं । उसके दाएं हाथ में तलवार थी । युवक कह रहा था—"हे प्रभो ! अर्काट का नवाब चंदा साहब मीनाक्षी देवी का हत्यारा है । मैं उसे यमलोक भेजकर ही दम लूंगा । आप मुझे हिम्मत और साहस दें कि मैं अपनी यह प्रतिज्ञा पूरी कर सकूं ।"

यह सुन नंदिनी हैरान थी । उसने सोचा—'यह युवक वीर एवं निडर है । तभी तो मंदिर की सारी घेराबंदी को धता बताते हुए यहां तक आ गया है ।



युवक पूजा से उठा, तो डबीरदेव ने सैनिकों को हुक्म दिया कि वे युवक को गिरफ्तार कर लें। सैनिक बढ़े, तो युवक गरजते हुए बोला—"खबरदार! किसी ने भी मेरी तरफ बढ़ने की कोशिश की तो परिणाम अच्छा न होगा।" लेकिन सैनिकों पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। वे युवक को पकड़ने बढ़े। युवक गजब का फुर्तीला था। पलक झपकते ही उसने नंदिनी की गरदन पर तलवार रख दी। बोला—"यह पूजा का स्थान है। मैं यहां खून नहीं बहाना चाहता। अच्छा यही होगा कि तुम लोग मुझे यहां से निकल जाने दो। मेरे साथ राजकुमारी भी जाएंगी ताकि तुम लोग मुझ पर पीछे से हमला न कर सको।"

मंत्री ने सैनिकों को रोक लिया। युवक राजकुमारी नंदिनी के साथ वहां से निकल गया। बाहर घोड़ा बंधा था। वे दोनों घोड़े पर बैठ वहां से ओझल हो गए। मंत्री ने इस घटना की सूचना राजा को दी। राजा बोले—"मंत्री जी, परेशान होने की जरूरत नहीं है। मेरी बेटी बहुत बहादुर एवं चतुर है। उसने यह कदम बहुत ही सोच-समझ कर उठाया होगा।"

उधर युवक और नंदिनी कोलिलडम् नदी के तट पर पहुंचे। युवक ने घोड़ा रोका, तो नंदिनी ने अपनी पिस्तौल उसकी गरदन पर रख दी। युवक चौंक गया। नंदिनी बोली—"युवक, तुम घबरा क्यों गए? तुम मुझे कायर और कमजोर मत समझना। मैं चाहूं तो तुम्हें अभी सदा के लिए मौत की नींद सुला सकती हूं। लेकिन मैं ऐसा नहीं करूंगी। मैं तुम्हारे साथ यहां चुपचाप इसलिए आई ताकि मंदिर में तुम्हारे साथ अहित न हो। वैसे भी मैंने तुम्हारी प्रतिज्ञा सुन ली थी।"

युवक मुसकराया। बोला—"तुम वैसी ही निकलीं जैसा मैंने तुम्हारे बारे में सुना था। तुम चाहो, तो मेरी प्रतिज्ञा बहुत जल्दी पूरी हो सकती है। मेरा नाम विजय है। फिलहाल मैं इससे अधिक आप को कुछ नहीं बता सकता।" राजकुमारी ने कहा—"विजय, तुम भी बांके वीर हो। अच्छा बताओ, हमें कहां चलना है?"

विजय ने कहा—"यहां से थोड़ी दूर पर रामपुरम है। वहां धर्मशाला है। वहीं चलते हैं।" फिर उनके कदम धर्मशाला की ओर बढ़ गए। धर्मशाला में उन्होंने चारपाई पर बैठे हुए एक आदमी को देखा। उसने राजकुमारी को पहचान लिया। बोला—"नंदिनी बेटी, तुम यहां कैसे? साथ में यह युवक कौन है?"

नंदिनी उस आदमी को पहचान गई थी। उसने विजय से उसका परिचय देते हुए कहा—"विजय, यह मुरारिराव घोर्पडे हैं। मराठा के महान सेनानायक हैं। यह स्वतंत्र रूप से विदेशियों के खिलाफ हम सबको इकट्ठा करने में लगे हैं।"

विजय की नजर मुरारिराव पर थी। वह बोला—"मैं विजयकुमार हूं। इस समय यही मेरा परिचय है।"

विजयकुमार चलने लगा, तभी कुछ सैनिकों ने मुरारिराव को घेर लिया। वे नवाब के सैनिक थे। मुरारिराव विचलित नहीं हुआ। तभी उसकी नजर धर्मशाला के मुखिया पर गई। कुछ सैनिकों ने मुखिया को भी दबोच रखा था। मुरारिराव ने चालाकी से पिस्तौल निकाल ली। इसी बीच विजय और नंदिनी ने भी मोर्चा संभाल लिया। दोनों तरफ से गोलियां चलने लगीं। शत्रु सैनिक खतरे को भांप गए और वहां से भाग खड़े हुए।

तंजाऊर का दरबार लगा था। सभी राजकुमारी नंदिनी की चर्चा में लगे थे।

तभी पहरेदार ने आकर कहा—"महाराज, नंदिनी दरबार में आना चाहती हैं। उनके साथ एक युवक भी है।"

डबीरदेव ने विजय को देखते ही कहा—"महाराज, इसी युवक ने उस दिन मंदिर में बावेला मचाया था। आप इसे कड़ी से कड़ी सजा दें।"

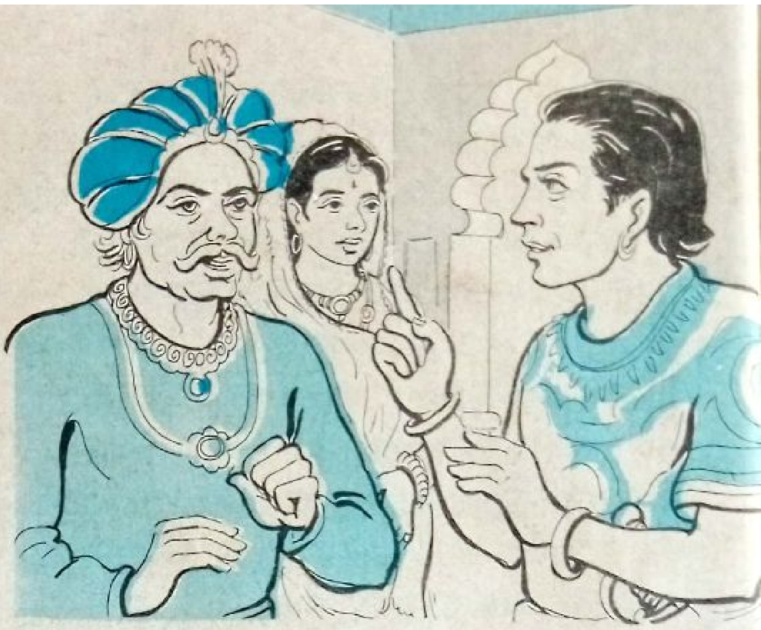
मंत्री की बातें सुन नंदिनी मुसकराई। फिर उसने अपने पिता को विजय के बारे में सब कुछ बता दिया। राजा विजय से मिल कर बहुत खुश हुए। विजय के ठहरने की व्यवस्था अतिथि गृह में हो गई।

तंजाऊर के सेनापति थे मानाजी । वह विजय से मिलने गए । दोनों में काफी बातें हुईं । तभी एक सेविका आई । बोली—"राजकुमारी नंदिनी ने विजय को याद किया है ।" सेनापति वहां से चले गए, तो विजय नंदिनी से मिलने चल दिया । नंदिनी ने वहां आने पर विजय का स्वागत किया । उनमें बातें होने लगीं । नंदिनी ने पूछा—"विजय, उस दिन मंदिर में तुमने प्रतिज्ञा की थी । उस बारे में मुझे विस्तार से बताओ ।"

यह सुनते ही विजय का चेहरा लाल हो गया । उसका हाथ तलवार की मूठ पर गया । उसने कहा—"राजकुमारी, मदुराई के राजा थे विजनरंग चोक्कनाथ नायक । वह प्रतापी शासक थे । संयोग की बात, उनका जल्दी ही निधन हो गया । उनकी कोई औलाद नहीं थी । राजकाज का भार महारानी मीनाक्षी देवी ने संभाला । लेकिन दरबारियों मे फूट पड़ गई । एक गुट ने रानी के खिलाफ झंडा उठा लिया । रोज-रोज की कलह से तंग आकर रानी ने मदुराई छोड़ दी । उन्होंने तिरुचि को अपनी नई राजधानी बनाया ।

कुछ दरबारियों की राय मानकर रानी ने सामंत बंधु बंगारू तिरूमला के पुत्र को गोद ले लिया । कुछ दिन तक तो बंगारू तिरूमला ने रानी की जीजान से सेवा की । लेकिन कुछ वर्ष बाद ही उसने रानी के राज्य को हड़पने की ठान ली । उसने मौका पाकर एक दिन तिरुचि पर धावा बोल दिया । रानी ने हिम्मत से काम लिया । काफी दिनों तक मोर्चाबंदी हुई । पर रानी को अपनी हार के आसार दिखाई देने लगे । उन्होंने अर्काट के नवाब चंदा साहब से सहायता मांगी । उसने रानी की मदद की । बंगारू हार गया । नवाब ने बंगारू परिवार को पूरी तरह से बरबाद कर दिया ।

अब तिरुचि पर चंदा साहब ने डेरा जमा लिया । रानी ने उसे वहां से जाने को कहा, पर वह नहीं गया । क्योंकि अब वह खुद तिरुचि को हड़पना चाहता था । उसने रानी को कैद कर लिया और एक दिन रानी की मृत्यु हो गई । मैं बंगारू का बेटा हूं । मुझे ही मीनाक्षी देवी ने गोद लिया था । मुझे नवाब से बदला लेना



है ।"

राजकुमारी ने कहा—"मेरे पिता तुम्हारी हर संभव सहायता करेंगे । मैं भी तुम्हारे साथ हूं ।"

एक-दो दिन बाद राजकुमारी नंदिनी ने विजय से अपने मन की बात कह दी । विजय भी कुछ कहना चाहता था पर वह कुछ कह नहीं सका । धीरे-धीरे दोनों एक-दूसरे की ओर खिंचते जा रहे थे । राजा प्रतापसिंह भी दोनों का विवाह करना चाहते थे ।

एक रात मानाजी विजय के कक्ष में पहुंचे । वह बोले—"विजय, देवीकौट्टै जाना पड़ सकता है । इसी समय महाराज ने तुम्हें याद किया है ।"

विजय ने तलवार कमर में बांधी और सेनापति के साथ-साथ राजा के पास पहुंचा । राजा ने कहा—"विजय, मुझे नंदिनी ने तुम्हारे बारे में सब कुछ बता दिया है । मैं तुम्हारी अवश्य सहायता करूंगा । आज तुम्हें देवीकौट्टै जाना है । मैं चाहता हूं कि तुम कुछ दिनों अंग्रेजी सेना में रहकर उनकी युद्ध नीति को अच्छी तरह समझ लो । ताकि समय आने पर तुम... ।" कहते हुए राजा बीच में ही रुक गए ।

विजय उसी समय देवीकौट्टै के लिए तैयार हो गया । वह वहां राबर्ट क्लाइव से मिला । क्लाइव उसकी बातों से बहुत प्रभावित हुआ । उसने विजय को अपने साथ रख लिया । विजय दिमाग का तेज था । कुछ ही महीनों में वह अंग्रेजों की युद्ध नीति को अच्छी तरह जान गया ।

एक दिन वह क्लाइव से कहकर तंजाऊर आ गया। राजा उसे सैनिक अधिकारी की वेशभूषा में देख बड़े प्रसन्न हुए।

एक दिन विजय अपने कक्ष में था, तभी नंदिनी वहां आई। उसने कहा—"अब तो तुम मुझे भी भूल गए हो।"

विजय ने कहा—"नहीं, मैं तुम्हें बराबर याद करता हूं। पर मेरी प्रतिज्ञा पूरी नहीं हो पा रही है। इसीलिए बेचैन हूं। मैं जल्दी ही यहां से जाना चाहता हूं।" तभी राजा और सेनापति वहां आ गए राजा बोले—"मैंने तुम्हें उप सेनापति बनाने का फैसला किया है।आशा है, तुम इस जिम्मेदारी को अच्छी तरह निभाओगे।" "पर महाराज, मेरी प्रतिज्ञा का क्या होगा ?"—विजय ने आश्चर्य से कहा।

—"भाई, यह सब तुम्हारी प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए ही किया जा रहा है।"

एक दिन विजय रानी मीनाक्षी देवी की समाधि पर गया। वहां एक मंदिर भी था। विजय को जब अधिक बेचैनी होती तो वह यहां जरूर आता था।

कुछ दिन बाद ही विजय को अर्काट के खिलाफ मोर्चाबंदी का अवसर मिल गया। राजा प्रतापसिंह, सेनापति मानाजी और विजय ने नवाब के किले को घेर लिया। भीषण युद्ध हुआ। विजय ने नवाब चंदा साहब को ललकारा। फिर भी वह बाहर न निकला। अब विजय ने तोपों का मुंह किले की तरफ कर दिया। न चाहते हुए भी नवाब ने आत्मसमर्पण करने की सोच ही ली।

चंदा साहब ने अपने विश्वस्त सैनिक जयसिंह से कहा—"तुम एक सफेद झंडा लेकर जाओ। मानाजी से कहना कि नवाब आधी रात में यहां आएंगे।" जयसिंह मानाजी के पास पहुंचा। उसने मानाजी को नवाब का संदेश दे दिया।

रात का समय था। चंदा साहब और जयसिंह मानाजी के पास पहुंचे। मानाजी ने उनको अपने पास बैठाया। जयसिंह वहां से चला गया। मानाजी ने कहा—"नवाब साहब, आपके रहने की अलग व्यवस्था हो गई है। आपके लिए एक पठान की व्यवस्था कर दी है। वह आपके साथ रहेगा।"

फिर मानाजी ने पठान को आवाज लगाई। पठान तुरंत हाजिर हो गया। मानाजी ने कहा—"तुम नवाब साहब का ख्याल रखना।" पठान ने सिर हिलाया।

तीन दिन बाद पठान ने चंदा साहब को डेरे से बाहर निकाला। वह चंदा साहब को एक चबूतरे के पास ले गया। चंदा साहब घबरा गया। उसने कहा—"पठान, तुम मुझे कहां ले आए ?" कहकर भागने लगा।

पठान ने उसे पकड़ लिया। वह पठान और कोई नहीं बल्कि विजय था। नवाब का शरीर पीला पड़ता जा रहा था।

विजय ने तलवार निकाल ली। बोला—"नवाब, यह समाधि देखकर तुम्हें कुछ याद आ रहा है ?"

"हां, वर्षों पूर्व यहां महारानी मीनाक्षी देवी ने प्राण त्यागे थे। पर तुम कौन हो ? मुझे क्यों मारने पर तुले हो?"—नवाब ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"मैं महारानी मीनाक्षी देवी का दत्तक पुत्र विजय हूं। तुम्हारे कारण वह मारी गईं। इतना ही नहीं, तुमने मेरे पिता बंगारू का भी वध किया था। आज मैं सारा हिसाब चुकता कर दूंगा।" —फिर क्या था ! देखते ही देखते विजय की तलवार ने नवाब का सिर धड़ से अलग कर दिया।

विजय ने समाधि को प्रणाम किया। कहा—"मां, मैंने अपना वचन पूरा कर दिया। आज मैं तुम्हारे ऋण से मुक्त हो गया हूं।"

इतना कहना था कि मंदिर में विजय की भेरी बज उठी। यह समाचार तंजाऊर भी पहुंचा। राजकुमारी नंदिनी की खुशी का ठिकाना ही नहीं था। नगर में खुशी की लहर छा गई थी।

(प्रस्तुत : डा. नरेंद्रकुमार)

शाण्डिल्यन (१९१० ई.—१९८७) जन्म तिरुक्कोइलूर, जि मायावरम् (तमिलनाडु) में हुआ। अनेक उपन्यास लिखे। 'कडलपुरा', 'जीव भूमि', 'राजा भेरिगें' प्रमुख उपन्यास हैं। यहां 'राजा भेरिगें' की कथा संक्षेप में दे रहे हैं। —सं.

तोते की माला

—रमाकांत 'कांत'

शुक और कीर दो तोते थे। दोनों मित्र थे। दोनों सदा साथ रहते। एक दिन बहेलिया वन में आया।

पक्षियों को पकड़ने के लिए उसने जाल बिछाया और चुग्गा डाला। चुग्गे के लालच में कीर जाल में फंस गया। शुक ने उसे देखा और बोला—"मित्र, यह तो बहुत बुरा हुआ! पर मैं तुम्हारे बिना अकेला नहीं रह सकता। लो, मैं भी आ रहा हूं..."

कीर मना करता रहा किंतु शुक ने उसकी एक न सुनी। वह अपने मित्र के बिना नहीं रह सकता था। इसीलिए वह भी कीर के पास आकर जाल में फंस गया।

बहेलिया उन्हें लेकर चला गया। बेचने के लिए दोनों को अलग-अलग पिंजरों में बंद कर दिया। अलग पिंजरों में बंद रहने का उन्हें दुःख तो था, पर फिर भी पास-पास रहने के कारण वे प्रसन्न थे। एक दिन ठगों का सरदार आया। उसे कीर पसंद आ गया। उसने खरीद लिया।

इस तरह वे बिछुड़ गए। उन्हें बहुत दुःख था पर मजबूर थे। ठगों ने कीर को सिखाया और अपने धंधे में सम्मिलित कर लिया। वह इधर-उधर उड़ता-मंडराता आते-जाते लोगों का ध्यान रखता। अपने गिरोह के लोगों को उनकी सूचना दे देता।

धीरे-धीरे कीर एकदम निपुण हो गया। वह देखते ही भांप जाता था कि कौन व्यक्ति कितना मालदार है और फिर ठगों को खबर कर देता कि अमुक आदमी मालदार है तथा उसके साथ इतने लोग हैं। इससे उन्हें लूटमार में आसानी हो जाती थी। इसी तरह वह अपने गिरोह को राजा के सैनिकों और खोजियों से भी बचा लेता था।

उधर काफी समय तक शुक का कोई खरीदार नहीं आया। एक दिन बहेलिया उसे बेचने के लिए खड़ा था। इतने में एक महात्मा उधर से निकले। उनका ध्यान तोते की ओर गया। शुक अपने मित्र कीर की याद में सुस्त बैठा था। उसे देखकर उन्हें दया आ गई। उन्होंने बहेलिए को समझाया कि पक्षियों को पिंजरे में बंद करना अच्छी बात नहीं है। पर बहेलिए ने अपनी मजबूरी जताते हुए कहा—"क्या करूं महाराज, पक्षियों को पकड़कर बेचना मेरा रोजगार है। यदि ऐसा नहीं करूंगा, तो अपना और परिवार का पेट कैसे भरूंगा?"

महात्मा जी ने पूछा—"अच्छा तो बताओ, इसकी कितनी कीमत लेना चाहते हो?"

—"जी, दस रुपए।"

महात्मा जी ने उसे दस रुपए देकर शुक को खरीद लिया। उन्हें लगा कि तोता बीमार है इसीलिए वह उसे पिंजरे में, अपने आश्रम ले गए। वह चाहते थे कि तनिक स्वस्थ हो जाने के बाद उसे स्वतंत्र कर दिया जाए। कुछ दिनों की देखभाल के बाद वह भला-चंगा लगने लगा। तब उसे पिंजरे से छोड़ दिया गया। पर शुक आश्रम को छोड़ कर नहीं जाना चाहता था। उसे वहां रहना अच्छा लग रहा था।

आश्रम में रहकर शुक ने वेद-मंत्र बोलने सीख लिए। उसमें अच्छे संस्कार आने लगे। सुबह महात्मा जी उठते तो वह कुटिया से बाहर वाले पेड़ से





बोलता—"स्वामी जी, प्रणाम !"

स्वामी जी हंसते हुए उसे आशीर्वाद देते। जब भगवान का भजन-पूजन होता तो शुक आश्रम की फुलवारी से फूल तोड़ता। चोंच में दबाकर लाता और सबकी तरह भगवान के चरणों में चढ़ा देता। आश्रम वाले उसे 'भक्तराज शुक' कहते थे।

एक बार महात्मा जी एवं उनके शिष्य कहीं गए हुए थे। आश्रम में केवल शुक ही था। वह चारों ओर घूम-घूमकर आश्रम की देखभाल कर रहा था। इतने में ही वहां का राजा आश्रम में आया। शुक राजा को पहचान गया था। वह बोला—"पधारिए राजन्! आपका स्वागत है। महर्षि एवं उनके शिष्य बाहर गए हैं। शीघ्र ही लौट आएंगे। तब तक आप विश्राम करें और जो चाहिए स्वयं ले लें। योग्य सेवा मुझे बताएं।"

तोते के मुंह से इतनी बातें सुनकर राजा आश्चर्य चकित था। उसने कहा—"वाह, तुमने तो मेरा मन मोह लिया। महर्षि की अनुपस्थिति में, मैं यहां ठहरने का इच्छुक नहीं था किंतु तुम्हारे कारण अवश्य ठहरूंगा। क्या तुम्हारा कोई नाम है? जिससे तुम्हें बुलाया जा सके।"

राजा को धन्यवाद देते हुए उसने अपना नाम बताया। राजा शुक से बातें करता रहा। महर्षि की कुशलता एवं आश्रम की व्यवस्था के संबंध में समाचार जाने। इतनी देर में महर्षि एवं उनके शिष्य आश्रम में लौट आए। उन्होंने अनुपस्थिति में हुए कष्ट के लिए राजा से क्षमा मांगी। पर राजा ने शुक की बड़ाई करते हुए कहा—"इस तोते के कारण मुझे तनिक भी कष्ट नहीं हुआ।"

शुक के मुंह से राजा ने मंत्र सुने। लौटते समय उन्होंने छोटा-सा एक हार दिया। हालांकि शुक के लिए हार की उपयोगिता नहीं थी पर राजा का मान रखने के लिए उसने हार स्वीकार कर लिया। अब उसके गले में कीमती हार पड़ा रहने लगा।

शुक महात्मा जी का संदेश लेकर भी आया-जाया करता था। एक बार उसे संदेश लेकर किसी अन्य आश्रम में जाना पड़ा। आश्रम बहुत दूर था। वह पंख फैलाए उड़ता चला जा रहा था। रास्ते में उन लुटेरों का क्षेत्र भी था जहां कीर पहुंच गया था।

कीर सजग चौकसी कर रहा था। उसने देखा कि एक तोता हार पहने हुए वहां से गुजर रहा है। उसकी अनुभवी आंखें पहचान गईं कि हार बहुत महंगा है। तोते के गले में कीमती हार देखकर उसे आश्चर्य हुआ। उसे पाने की ललक बढ़ गई। वह चीखकर बोला—"अरे वाह, तोते के गले में कीमती हार! सरदार इसे तो लूट ही लेना चाहिए।"

सरदार ने कहा—"देखता क्या है। वह तोता है और तू भी तोता है। छीन ले उससे हार।"

यह सुनकर कीर को जोश आ गया। वह शुक के पीछे भागा। शुक इन सब बातों से अनजान था।

वह उड़ा जा रहा था। अचानक पीछे से आकर कीर ने उस पर आक्रमण कर दिया। वह हक्का-बक्का रह गया। दोनों ने एक-दूसरे को नहीं पहचाना था।

कीर के आक्रमण से बचने के लिए शुक ने भी उसका मुकाबला किया। वे दोनों एक-दूसरे पर चोंच से प्रहार कर रहे थे। दोनों घायल हो गए थे, परंतु इस लड़ाई में कीर भारी पड़ रहा था। शुक को बार-बार ऐसा लग रहा था कि कहीं यह उसका बिछुड़ा हुआ मित्र कीर तो नहीं है? आखिर उससे न रहा गया। उसने पूछा—"एक मिनट ठहरो। पहले यह बताओ, तुम मेरे बिछुड़े हुए मित्र कीर तो नहीं हो?"

यह सुनते ही कीर लड़ना भूल गया। वह बोला—"तो तुम शुक हो?"

बस फिर क्या था। वर्षों से बिछुड़े मित्र मिले। शुक ने प्रसन्नता पूर्वक अपना हार कीर को पहनाना चाहा। मगर कीर की आंखों में आंसू छलछला आए। वह अपनी नीचता पर बेहद शर्मिंदा था। उसने अपनी राम कहानी शुक को सुनाई कि किस तरह वह लुटेरों के साथ रहकर उन जैसा बन गया। "हार लूटने के उद्देश्य से ही मैंने अपने परमप्रिय मित्र पर आक्रमण कर दिया।"—कहकर उसने विलाप करना प्रारंभ कर दिया।

शुक ने कीर से कहा—"कोई बात नहीं मित्र। तुम लुटेरे बन गए हो तो इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। जो जैसी संगति में रहता है, उसमें वैसे ही गुण-दोष आ जाते हैं। तुम लुटेरों के यहां पहुंच गए और मैं महात्मा जी के आश्रम पर पहुंच गया।"

कीर अपनी स्थिति समझ गया। उसने शुक से कहा—"मित्र, मुझे हार नहीं चाहिए। दे सकते हो तो अपने आश्रम में आश्रय दिलवा दो।"

शुक अपने प्रिय मित्र कीर को अपने साथ ले आया। आश्रमवासियों ने प्रेमपूर्वक उसे भी स्वीकार कर लिया। आश्रम में रहते हुए जल्दी ही कीर का व्यवहार बदल गया। वह शुक के साथ रहकर बहुत खुश था। ●



हंस बेचारा

—प्रीति अग्रवाल

हंस और कौए में दोस्ती हो गई। कहां हंस जैसा सज्जन और कहां कौए जैसा चालाक और धूर्त पक्षी। लेकिन दोस्ती तो दोस्ती है। दोस्ती भी ऐसी-वैसी नहीं, खूब गाढ़ी दोस्ती। एक दिन दोनों पेड़ पर बैठे थे।

थोड़ी देर बाद एक शिकारी आकर उसी पेड़ के नीचे बैठ गया। कुछ देर बाद, शिकारी ने अपनी पोटली खोली। उसमें गोल-गोल छोटी-छोटी पूरियां देखकर कौए के मुंह में पानी आ गया। लेकिन वह कुछ कर नहीं सकता था, क्योंकि उसके साथ हंस जो था। हंस कौए को सदा अच्छी बातें बताया करता था। कौए ने हंस की ओर देखकर आंखों ही आंखों से उससे पूछा—'कहो तो एक झपट्टा मारकर कम से कम दो पूरियां तो ले ही आऊं।'

हंस ने उसे ऐसा करने से साफ मना कर दिया। उसने इशारे से कहा—'अभी धूप है। थोड़ी देर में धूप ढलने के बाद हम चारा चुगने चलेंगे। तब तुम्हारा पेट भर जाएगा। हम तो कुछ भी खा लेंगे।'

हंस की बात कौए को बिल्कुल पसंद नहीं आई। उसने हंस को समझाने के लिए इशारे से कहा—'लेकिन इसके पास तो ढेर सारी पूरियां हैं। विश्वास करो, मैं उनमें से केवल दो पूरियां लेकर आऊंगा।'

लेकिन हंस ने उसकी एक न सुनी। उसने इशारे से फिर कहा—'सवाल दो या तीन पूरियां लाने का नहीं है। सवाल है— न्याय का। हमें उसकी पूरियां छीनकर खाने का कोई अधिकार नहीं है।'



अब कौए को क्रोध आ गया । उसने मन ही मन निर्णय किया—'हंस को उसकी भलमनसाहत का पाठ पढ़ा कर ही रहूंगा।' जो हमेशा नीचा दिखाने की कोशिश करता है । यहां तक कि इसके चलते मैं न तो अपने मन की चीजें खा पाता हूं, और न ही अपने मन की जगह जा पाता हूं । हमेशा ही मुझे उपदेश देता रहता है कि यह करो, यह मत करो । आज तो मैं इसे मजा चखाऊंगा ही ।' कौआ डाल पर बैठा यही सब सोच रहा था ।

इस बीच शिकारी ने खाना खाया । धूप अब भी तेज थी । वह पेड़ के नीचे लेट गया । देखते ही देखते उसे गहरी नींद आ गई ।

डाल पर बैठे हुए हंस ने देखा कि सूरज की तीखी किरणें उस पथिक के चेहरे पर पड़ रही हैं । उसने सोचा कि यदि किरणें देर तक उसके चेहरे पर पड़ीं, तो तेज गर्मी के कारण उसकी नींद टूट जाएगी । न जाने बेचारा कितनी दूर से चला आ रहा है । यदि थोड़ा आराम कर लेगा, तो थकान दूर हो जाएगी । यह सोचकर हंस उस डाल से उड़कर दूसरी डाल पर जा बैठा । उसने अपने लंबे-लंबे पंख फैला दिए । अब तक जो किरणें पथिक के चेहरे पर पड़ रही थीं, वे हंस के पंखों पर पड़ने लगीं । पथिक के मुख पर छाया आ गई । वह आराम की नींद सोता रहा ।

हंस की सारी गतिविधियां कौआ देख रहा था । उसे यह अच्छा नहीं लगा । वह सोच रहा था—'एक तो मुसाफिर सारी पूरियां खाकर सो गया ।' छोटा-सा टुकड़ा भी जूठा नहीं छोड़ा कि मैं खा सकूं । फिर ऊपर से ऐसे स्वार्थी के चेहरे पर हंस, पंख फैलाकर छाया कर रहा है । ऐसे स्वार्थी पथिक के लिए हंस खुद गर्मी सह रहा है !'

उसे लगा कि यह अच्छा मौका है, जब वह हंस से अपना बदला ले सकता है । वह हंस को बता देगा कि किसी को भूखा रखने का क्या नतीजा होता है । यह सोचकर कौआ डाल से उड़ा । वह उस डाल के नीचे वाली डाल पर बैठ गया, जिस पर हंस बैठा हुआ था । हंस ने सोचा—'शायद कौए को भी गर्मी लग रही होगी, तभी वह उसके पंखों की छाया के नीचे आकर बैठ गया है ।' हंस को यह बात बहुत अच्छी लग रही थी कि उसके पंखों की छाया से दो प्राणियों को सुख मिल रहा है । वह उसी तरह पंख फैलाए बैठा रहा ।

लेकिन कौआ तो कुटिल था । उसे हंस से बदला लेना था । उस पथिक से भी बदला लेना था । इसलिए उसने अवसर देखकर बीट कर दी । वह बीट जाकर पथिक के मुंह पर गिरी । बीट के गिरते ही पथिक हड़बड़ा कर उठ बैठा ।

उसे इस तरह हड़बड़ा कर उठते देख, हंस चौकन्ना हो गया । लेकिन वह समझ नहीं पाया कि पथिक अचानक क्यों उठ बैठा है । उसने स्थिति को समझने की कोशिश की । सोचा कि कौए से भी पूछ लूं । लेकिन कौआ तो वहां था ही नहीं । वह तो बीट करने के तुरंत बाद ही वहां से खिसक गया था ।

पथिक ने अपने मुंह से बीट पोंछते हुए ऊपर की ओर देखा । वहां एक हंस पंख फैलाए बैठा दिखाई दिया । उसे यह समझते देर नहीं लगी कि हो न हो, इसी हंस ने उसके ऊपर बीट की है । शिकारी आग-बबूला हो उठा । उसने आव देखा न ताव, हंस पर तीर चला दिया । बेचारा हंस जमीन पर गिरा । दूर बैठा दुष्ट कौआ अपनी करनी पर खुश था ।

हंस ने कौए को दोस्त बनाकर बहुत भारी भूल की थी । लेकिन अब क्या हो सकता था । ●

चरमर चरमर

चलो चलें, हम चलकर देखें
गिरे हुए सूखे पत्तों पर।
मजा आएगा जब गाएंगे
जोर-जोर से पत्ते मिलकर—
चरमर-चरमर, चरमर-चरमर,
चरमर-चरमर, चरमर-चरमर !

पेड़ कहेंगे, देखो बच्चो
ये गाते हैं, तुम भी गाओ—
चरमर-चरमर, चरमर-चरमर,
चरमर-चरमर, चरमर-चरमर।
बोलो, जब पत्ते गाएंगे
मजा आएगा तुमको कैसा ?
तुम बोलोगे—चरमर-चरमर
चरमर-चरमर-चरमर जैसा।
हिला-हिलाकर दोनों बांहें
दौड़ोगे जब झूम-झूमकर,
बोलो, पत्ते क्या बोलेंगे
चरमर-चरमर, चरमर-चरमर !

पेड़ हंसेंगे सोच-सोचकर
शुरू-शुरू जब आते पत्ते,
कितने भोले, कितने प्यारे
बिल्कुल बच्चे होते पत्ते।
सोचो, पेड़ नहीं होते जो
कैसे गाते चरमर-चरमर,
कब होते ये सूखे पत्ते ?
गीत न होता चरमर-चरमर।

चरमर-चरमर, चरमर-चरमर,
चरमर-चरमर, चरमर-चरमर !

—**दिविक रमेश**

[हांकुक विश्वविद्यालय, सिओल (कोरिया) से भेजी गई कविता। इन दिनों वहां पतझड़ है।]



चलो चांद के देश

बादल-घोड़े पर सवार हो,
चलो, चांद के देश चलें हम !

धरती पर होता रहता है
रगड़ा-झगड़ा, हल्ला-गुल्ला,
जीना पड़ता है बन करके
हमें किसी का पूंछ-पुछल्ला।
आजादी है नहीं तनिक भी,
चलो, बदलकर वेश चलें हम

धीरे-धीरे छिपकर निकलो
कोई हमको पकड़ नहीं ले,
माया-ममता, मोह-छोह के
जंजीरों में जकड़ नहीं ले।
लम्बा सफर बहुत है प्यारे
लेकर धैर्य अशेष चलें हम !

चुपके-चुपके ही कर लें हम
चलने की पूरी तैयारी,
टिफिन, लंच औ' कपड़े-लत्ते
लें सहेज झट चीजें सारी।
बिसकुट, टाफी, चाकलेट संग,
ले चमचम संदेश चलें हम !

चंदा मामा जी पूछेंगे
या पूछेगी बुढ़िया नानी,
धरती पर से क्या लाए हो ?
देख हमें होगी हैरानी।
बहुत सुखद होगी यह यात्रा,
होगा तनिक न क्लेश, चलें हम !

—**श्यामसुंदर घोष**

खोलो द्वार

नन्हे से मेमने
प्यारे से मेमने,
जरा खोलो द्वार
आऊं तेरे पास।

नहीं, नहीं, नहीं
खोलूंगा नहीं,
मां लौटी नहीं
क्यों खोलूं द्वार ?

—**डा. ओम्प्रकाश सिंहल**

(एक चीनी लोक कविता का अनुवाद)

हलवा गाजर का

करने लगा कमाल,
हलवा गाजर का,
भर-भर आता थाल,
हलवा गाजर का !

खड़े-खड़े क्यों मन ललचाए।
पैसे लाए ? पैसे लाए ?
करता यही सवाल,
हलवा गाजर का !

मचल-मचल खाने वालों की,
लपक-लपक आने वालों की,
देख रहा है चाल,
हलवा गाजर का !

लाओ, खाओ, फिर ललचाओ,
क्यों पछताओ, फिर से आओ,
जी का है जंजाल,
हलवा गाजर का !

—**देवेन्द्रकुमार 'देव'**

पेड़ की तलाशी



नन्ही-सी राजकुमारी थी विदुला । उसके पास सुंदर-सी गुड़िया थी एकदम जैसे जीवित हो । एक दिन...
क्या हुआ बिटिया ?
मेरी गुड़िया खो गई..जब तक नहीं मिलेगी...न खाना खाऊंगी न...
मुसीबत हो गई, विदुला ने खाना-पीना छोड़ दिया । बीमार पड़ गई...
गुड़िया नहीं मिली तो राजकुमारी नहीं बचेगी ।
क्या हम उसकी मदद करें, संदीप।
कैसे मानक ?
कुछ सोच तीनों राजा के पास पहुंचे...
हम गुड़िया खोजेंगे ।
राजकुमारी जी से पूछताछ करनी है ।
सारी पुलिस नहीं खोज सकी । तुम कैसे...
बच्चों ने बार-बार कहा तो...
ठीक है । सिर्फ एक दिन देता हूं । असफल रहे तो दण्ड...
हमें स्वीकार है ।


राजा का अंगरक्षक उन्हें राजकुमारी के पास ले गया...
लो बेटी, दवा पी लो...
नहीं, पहले गुड़िया...
हार कर रानी चली गई तो...
हम गुड़िया खोजने आए हैं...
तुम कैसे ? सिर मत खाओ । भागो !
कैसी थी वह ?
अजीब लड़की... इतनी जिद्दी ! मूर्ख !
बच्चों ने लाख पूछा कि गुड़िया कैसी थी, कहां खोई, मगर जिद्दी विदुला ने...
अगर बताएगी नहीं तो गुड़िया-ढूंढेंगे कैसे ?
बताऊंगी, मगर पहले गुड़िया । उसकी मोती जड़ी चूनरी भी...
यदि न खोज पाए तो राजा दंड...उफ...
बच्चे परेशान-निराश महल से निकल आए...
अब क्या होगा ! गुड़िया के बारे में कुछ पता नहीं...
बस इतना कि उसकी चूनरी मोती जड़ी थी...
इससे क्या होगा ?


बातें करते-करते महल के पिछवाड़े जा निकले । वहां इमली का एक पुराना पेड़ था...
इमली ! अमर आओ तोड़ें !
हुश ! पत्थर महल में जा गिरा तो...
संदीप बात खत्म करता, इससे पहले ही मानक ने पेड़ पर पत्थर फेंका...
अरे, वह कपड़ा कैसा ?
पत्थर सीधा महल में गया... भागो !
बच्चे वहां से भागे ही थे कि...
सब भाग गए.
अरे, यह तो राजकुमारी की गुड़िया की चूनरी है !
प्रधान अंगरक्षक ने नमक-मिर्च लगाकर राजा को बताया...
वे गुड़िया चोर थे महाराज ! महल में छिपा दी होगी । बहाना बनाकर उसे लेने आए थे। फिर पिछवाड़े जाकर...
समझ गया... उन तीनों को तुरंत पकड़ो...



तीनों बच्चे पकड़े गए । राजा के सामने लाए गए...
तीनों चोर ! गुड़िया चुरा तो ली,पर चूनरी गिर पड़ी। पकड़े गए ।बताओ, कहां है गुड़िया ?
चूनरी तो पेड़ से गिरी थी...
मेरा पत्थर लगने से ...इमली के साथ...
पेड़ से गिरने की बात सुन राजा को झटका-सा लगा । तुरंत पेड़ की तलाशी लेने की आज्ञा दी ।
पेड़ पर घोंसले में नोची-खसोटी गुड़िया मिल गई...
ओह ! शायद इसे कोई बंदर ले गया था उठाकर । मैंने नाहक तुम तीनों पर शक...
तो हम जाएं महाराज ?
हम चोर तो नहीं हैं न...
मगर राजा ने उन्हें जाने न दिया । लेकर विदुला के पास पहुंचा...
बिटिया, यह तुम्हारी गुड़िया । इन बच्चों के कारण मिली...नई ला देंगे...
ओह ! आज मैं भरपेट खाऊंगी...तुम सबके साथ...
इसे बंदर ले गया था ।

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

बच्चों का अखबार-
नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष ३१; अंक : ४ फरवरी '९५, नई दिल्ली; माघ-फाल्गुन, शक १९१६

बच्चों के लिए राष्ट्रीय आयोग बने

नई दिल्ली । "बच्चों की बढ़ती समस्याएं हल करने के लिए राष्ट्रीय आयोग बनाया जाना चाहिए ।" —यह मांग की संसद सदस्य श्रीमती सरला माहेश्वरी ने । वह आकाशवाणी की परिचर्चा में भाग ले रही थीं । उन्होंने कहा कि कानून तो बने हैं, पर उन पर ठीक से अमल नहीं हुआ । बालक आज भी तरह-तरह के जोखिम भरे उद्योगों में काम करते हैं ।

हाल ही में यूनिसेफ (संयुक्त राष्ट्र बाल-कोष) की रपट आई है—'विश्व में बच्चों की स्थिति ।' रपट में कहा गया है कि भारत में ९८५ गांव ही ऐसे बचे हैं जहां पीने का पानी नहीं है । टीकाकरण के कार्यक्रम का लाभ नब्बे प्रतिशत बच्चों तक पहुंच रहा है । श्री जयप्रकाश भारती ने परिचर्चा का संचालन करते हुए इस रपट को परी-कथा जैसा बताया । उन्होंने कहा कि देश में लगभग तीस करोड़ बच्चे हैं । उनकी परेशानियां बढ़ रही हैं । संविधान में मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का लक्ष्य अभी बहुत दूर है ।

वरिष्ठ पुलिस अधिकारी श्री आमोद कंठ ने राजधानी में 'प्रयास' संस्था के कामों की चर्चा की । श्री कंठ का कहना था कि जो कार्यक्रम चलाए जाएं, उनका लाभ निचले और गरीब बच्चों तक पहुंचना चाहिए । यूनीसेफ के राज्य प्रतिनिधि डा. सुभाषचंद्र ने बताया कि शिशुओं को रोगों से बचाने पर खास ध्यान दिया जा रहा है । चार साल पहले संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन ने सरकारों के सामने बाल-कल्याण का कार्यक्रम रखा था । भारत ने दो साल पहले ही उस पर सहमति दी है ।

सभी वक्ताओं ने कहा कि धरती पर मानव को सुखी होना है, तो उसकी शुरुआत बालक से ही हो सकती है । बालक के लिए इतना तो होना ही चाहिए—जानलेवा बीमारियों से रक्षा, भर पेट भोजन, बचपन में अनिवार्य शिक्षा, घर-परिवार और सामाजिक सुरक्षा । 'भारत में बालक की स्थिति' पर यह परिचर्चा आकाशवाणी के समाचार विभाग ने राष्ट्रीय कार्यक्रम में की ।

इरेजर की प्रदर्शनी

बम्बई । जी. डी. सोमानी विद्यालय में खुशबू दसवीं कक्षा में पढ़ती है । उसने जोडिएक बाग, चौपाटी में अपने पास जमा किए इरेजर (अक्षर मिटाने वाले रबर) की प्रदर्शनी लगाई । उसके पास तरह-तरह के पांच सौ साठ इरेजर हैं ।

होशियार चालक

बस्ती । शहीद एक्सप्रैस और अमरनाथ एक्सप्रैस अचानक आमने-सामने से एक ही ट्रेक पर आ गईं । शहीद एक्सप्रैस के चालक और सह-चालक ने यह देखा, तो तुरंत अमरनाथ एक्सप्रैस को रुकने का संकेत दिया । फिर चालक शहीद एक्सप्रैस को उलटी दिशा में चलाकर ले गया । इस तरह एक बड़ी दुर्घटना होने से बच गई ।

बच्चों के लिए

नई दिल्ली । गरीब और बेसहारा बच्चों के लिए 'क्राई' नामक संस्था पंद्रह साल पहले शुरू हुई थी । यह संस्था भारत भर की चालीस अलग संस्थाओं से जुड़ी है । संस्था का मानना है कि मौका मिले तो सभी बच्चे कुछ न कुछ करके दिखा सकते हैं । इस वक्त 'क्राई' अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर पांच लाख बच्चों की देखभाल करती है । इसे जो चीजें या पैसा मिलता है उसे स्वयंसेवी संस्थाओं को दे दिया जाता है ।

मारीशस और हिंदी

नई दिल्ली । मारीशस के जाने-माने हिंदी लेखक हैं—श्री अभिमन्यु अनत । उनका कहना है कि मारीशस में हिंदी सहित पांच भारतीय भाषाएं माध्यमिक स्तर तक पढ़ाई जाती हैं । यहां तक कि गिरजाघरों द्वारा संचालित स्कूलों में भी हिंदी पढ़ाई जाती है । मारीशस की दस लाख आबादी में पचास हिंदी लेखक ऐसे हैं जो नियमित रूप से लिख रहे हैं ।

बच्चों को सही पुस्तकें मिलें

नई दिल्ली । पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन की राष्ट्रीय समिति ने बच्चों की पुस्तकों के बारे में महत्वपूर्ण सिफारिशें की हैं । समिति का कहना है कि बच्चों को ऐसी पुस्तकें नहीं पढ़ाई जानी चाहिएं जो उनके मन में जहर भरती हों । समिति का कहना है कि पुस्तकें तैयार करने के लिए हर राज्य में एक बोर्ड बनाया जाए । साथ ही ऐसे लेखकों से पुस्तकें तैयार कराई जाएं जो विषय की अच्छी जानकारी रखते हों ।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें ।

मैं जो कुछ हूं, इसका श्रेय मेरी माता जी को जाता है।

— ज्ञानी जैलसिंह

भारत माता के पुजारी

फरीदकोट के छोटे-से गांव में बालक का जन्म हुआ। उस बालक की शिक्षा भी मामूली हुई। छह बरस का हुआ तो पिता चल बसे। लेकिन मां ने उसकी देख-रेख में कोई कसर न रखी। उसे सिखाया कि मां और भारत माता में अगर चुनना हो तो भारतमाता को चुनना। यही किसान बालक बड़ा होकर देश का राष्ट्रपति बना। ज्ञानी जैलसिंह के रूप में उसे सारी दुनिया ने जाना, पहचाना।

खुशमिजाज और सरल स्वभाव ज्ञानी जी सच्चे नेता थे। भारत स्काउट एवं गाइड रैली राष्ट्रपति भवन में हो रही थी। दूरदर्शन की टीम ने शुरू के कार्यक्रम और राष्ट्रपति के भाषण को फिल्माया और जाने लगे। ज्ञानी जी ने उन्हें जाते देख, माइक पर ही कहा—"टी.वी वाले अभी न जाएं। बच्चे बहुत-से कार्यक्रम करने वाले हैं। उनका हौसला बढ़ाएं और उन कार्यक्रमों को टी.वी. पर जरूर दिखाएं।" उसी दिन मैंने उन्हें 'नंदन' की प्रति भेंट की। उसे उन्होंने देखा, उलटा-पुलटा, फिर सबके बीच ही सेक्रेटरी से बोले—"भई, रिसाला अच्छा है। इसे राष्ट्रपति भवन में मंगाया करो।"

वह राजनेता थे, लेकिन उन सबके भी थे, जो राजनीति में नहीं हैं। देशभक्त और समाजसेवी ज्ञानी जी को नमन!

पेड़ों के साथ सुंदरता

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार ने निर्देश जारी किए हैं कि पेड़ों के आसपास की जमीन को पक्का न किया जाए। पेड़ों के पास जमीन पक्की होने से पेड़ों को वर्षा का पानी नहीं मिल पाता। इससे उन्हें पूरी खुराक नहीं मिलती। वे खोखले हो जाते हैं। फिर सूख जाते हैं। दिल्ली सरकार का मानना है कि दिल्ली सुंदर बने।

कुबला खान के जहाज

तोक्यो। तेरहवीं सदी में कुबला खान ने जहाजों का बेड़ा जापान पर आक्रमण करने के लिए भेजा था। कहते हैं कि इस बेड़े में चार हजार चार सौ जहाज थे। लेकिन भयानक समुद्री तूफान में इनमें से अधिकांश जहाज नष्ट हो गए। अब इन जहाजों के कुछ अवशेष मिले हैं। जापान वासियों का आज तक मानना है कि भयानक तूफान ईश्वर ने उनकी रक्षा के लिए भेजा था।

कितनी गहरी

शिमला। कहते हैं कि यहां की खजियार झील बहुत गहरी है। कोई उसकी गहराई का पता नहीं लगा पाया। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह झील किसी उल्कापात या धूमकेतु के टकराने से बनी है। यदि झील के तल में छानबीन की जाए, तो इसके प्रमाण भी मिल सकते हैं। दो वैज्ञानिकों डा. जे. जे. रावल और डा. एस. एस. चंदेल ने इस झील की गहराई का पता लगाया है। बताया गया है कि इसकी गहराई पच्चीस फीट है।

कर्णफूल और हीरा

लंदन। एक होटल में आदमी बर्गर खाने गया। जैसे ही उसने बर्गर में मुंह मारा, उसे मुंह में कोई चीज चुभती मालूम पड़ी। पता चला कि वह सोने का कर्णफूल तथा एक हीरा था। वे चीजें बर्गर में कैसे आईं, यह पता नहीं चल सका।

लापता बच्चों के चित्र

न्यूयार्क। अमरीका के होरेस हीफनर पलक झपकते ही अपराधियों के चित्र बना लेते हैं। इधर अपराधी के बारे में बताया जाता है उधर चित्र तैयार।

हीफनर अब इलेक्ट्रानिक उपकरणों की मदद से लापता बच्चों के चित्र बनाते हैं। लापता होने के कई वर्ष बाद बच्चे के चेहरे में क्या बदलाव आ गया होगा, हीफनर इस बात की कल्पना करके भी सही चित्र बना लेते हैं।

साठ लाख का भालू

लंदन। १९०४ में बने एक टैडी बीयर को जापान के एक खिलौना निर्माता ने खरीदा। टैडी बीयर बिका साठ लाख रुपए में। खरीददार का कहना था कि वह इस अनोखे भालू को तोक्यो के पास बने खिलौना संग्रहालय में रखेगा।

दोबारा दांत

पुणे। वह बताते हैं कि जब वह नौजवान थे, तो तीन सौ आम के पेड़ों की देखभाल अकेले ही कर लेते थे। उनके पास बहुत अधिक जमीन थी जिसे अंग्रेजों ने सिर्फ सौ रुपए में खरीद लिया था। वह हैं-नूर मोहम्मद। उनके घर वालों के अनुसार उनकी उम्र १३९ वर्ष है। नूर मोहम्मद के दोबारा दांत भी निकल रहे हैं। यही नहीं उनके नाती-पोते उन्हें अपनी टाफी-चाकलेटों में भी हिस्सा देते हैं।

जूली का कंप्यूटर

शिकागो। जूली अमरीकन नेशनल बैंक में कार्य करती है। कार्यालय में वह कंप्यूटर पर काम करती है। डाक पढ़ती है। रिपोर्ट लिखती है। कार्यालय में होने वाली मीटिंग में हिस्सा लेती है। फर्क सिर्फ इतना है कि उसका कंप्यूटर ब्रेल लिपि में काम करता है। जूली अपने कंप्यूटर को बोलकर आदेश दे सकती है। वह इसी कंप्यूटर की सहायता से डाक पढ़ती है, लिखती है।



दक्षिण कोरिया में हिंदी पढ़ने वाले छात्र नंदन कार्यालय में आए। उन्हें नंदन पत्रिका बहुत पसंद आई। नंदन के अंक और कुछ पुस्तकें उन्हें भेंट की गईं।

कंगारू ही कंगारू

सिडनी। आस्ट्रेलिया का राष्ट्रीय चिह्न है-कंगारू। वहां इनकी आबादी तेजी से बढ़ती जा रही है। एक अनुमान के अनुसार एक आस्ट्रेलियाई नागरिक के हिस्से दो कंगारू आते हैं। इनकी बढ़ती आबादी से किसान सबसे अधिक परेशान हैं क्योंकि कंगारू उनकी फसल को आराम से चट कर जाते हैं।

पिंजरे में नहीं

नई दिल्ली। दिल्ली चिड़ियाघर में तरह-तरह के जानवरों को तो दर्शक देख ही सकते हैं, यही नहीं चिड़ियाघर में दर्शकों को अपने देश में पाए जाने वाले जीव-जंतुओं के बारे में भी बताया जाता है। चिड़ियाघर के अधिकारियों का मानना है कि किसी भी जानवर को पिंजरे में नहीं रखा जाना चाहिए।

वह दूध के लिए रोती है

पिन्नावेला (श्रीलंका)। जैसे ही दूध की बाल्टी दिखाई देती है, कुमारी जोर-जोर से चिल्लाती है। यही नहीं, वह हमेशा अधिक दूध पीने को बेताब रहती है। कुमारी एक शिशु हथिनी है। पिन्नावेला में शिशु हाथियों का अनाथालय है। यहां साठ शिशु हाथी रहते हैं। दुनिया में हाथियों का यह एकमात्र अनाथालय है।

खुदाई बंद

काहिरा। पिरामिडों के आसपास दस किलोमीटर तक किसी भी नई इमारत या सड़क बनने पर रोक लगा दी गई है। पुरातत्व शास्त्रियों का मानना है कि खुदाई से जो कम्पन पैदा होते हैं, उनसे पिरामिडों को नुकसान पहुंच सकता है।

नया इंजेक्शन

लंदन। यदि शरीर के अंदर दवा पहुंचाने के लिए सुई का प्रयोग न करना पड़े और दर्द न हो, तो कैसा रहे? ब्रिटेन की एक कम्पनी ने नए किस्म का इंजेक्शन बनाया है। इससे हवा के दवाब से दवा शरीर के अंदर पहुंचा दी जाती है और दर्द नहीं होता।

भारत-उनका दूसरा घर

नई दिल्ली। सूरिनाम के उपराष्ट्रपति और मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष जूलियस रतनकुमार अजोध्या भारत आए थे। श्री अजोध्या के पूर्वज बिहार से सूरिनाम गए थे। वह प्रधानमंत्री श्री राव से मिले। उनका कहना था कि श्री राव को देखकर उन्हें लगा, जैसे वह उनके दादा जी हों।

श्री अजोध्या का कहना है कि सूरिनाम के लोग भारत को अपना दूसरा घर मानते हैं। वहां रामायण, महाभारत और गीता का बहुत सम्मान है।

नन्हे समाचार

□ कुछ वर्ष पहले अनेक हाथी नेपाल से भारत में आ गए थे। कुछ दिन यहां रहकर फिर से नेपाल चले गए। आने-जाने का यह सिलसिला चलता रहा, लेकिन अब ये हाथी भारत में ही बस गए हैं।

□ भारतीय वायुसेना में सात महिला पायलट शामिल की गई हैं। ऐसा वायुसेना के इतिहास में पहली बार हुआ है।

□ अमरीका में स्मोकी नामक कुत्ते को मौत की सजा दी गई, क्योंकि वह डाकियों को बहुत परेशान करता था। लेकिन स्मोकी के मालिक क्रेग जेक्सन ने मुकदमा लड़ा। आखिर स्मोकी को मुक्त कर दिया गया।

□ रूस ने मंगल ग्रह की सतह पर चलने वाली एक मानवरहित रोबोट कार बनाई है। इसे एक राकेट द्वारा मंगल ग्रह पर भेजा जाएगा।

□ इंडोनेशिया ने पहली बार एक यात्री विमान बनाया है और उसे भीम के बेटे घटोत्कच से मिलता-जुलता नाम दिया है—घटोत्कोको।

□ पलाऊ राष्ट्रसंघ का नया सदस्य बना है। यह प्रशांत महासागर में बिखरे छोटे-छोटे द्वीपों का देश है।

□ भूकम्प की भविष्यवाणी करने के लिए केरल में एक चलती-फिरती वेधशाला बनाई जा रही है।

□ नार्वे की लिव आर्नेसन अकेली ही पैदल दक्षिणी ध्रुव पर जा पहुंची है। उसने १२०० किलोमीटर का सफर ५० दिन में पूरा किया। यह एक रिकार्ड है।

□ इंग्लैंड में केन स्लोनी नामक किसान के खेत में एक बहुत बड़ा आलू पैदा हुआ। उस अकेले आलू का वजन था ४ किलो।

□ जयपुर चिड़ियाघर से चार सारस भरतपुर के पास केवलादेव पक्षी विहार में भेजे गए। पर वे उड़कर न जाने कहां चले गए!

सचित्र समाचार





त्रिवेणी कला संगम में बिहार के छाऊ नृत्य का प्रदर्शन : नृत्य में शिव बने भूमिकेश्वर सिंह और, पार्वती ज्योति डोगरा।

भारत के जलीय पक्षियों पर डाक-विभाग ने चार टिकट जारी किए हैं।



चरखी-दादरी (उ. प्र.) में पर्यावरण से सम्बंधित प्रश्न मंच। जनता कालेज की टीम प्रथम स्थान पर रही।



कोला प्रजाति का भालू : काम है कुम्भकर्ण की तरह सोना। दो बार उठना और यूक्लिप्टस की पत्तियां खाना।



सौर ऊर्जा से चलने वाली कार। छत पर सौर ऊर्जा बैटरी लगी है।



धौलीवाड़ा (गुज.) में साढ़े चार हजार वर्ष पुरानी सभ्यता के अवशेष : खुदाई में मिली मोहर।



साक्षरता के पक्ष और बीमारियों के विपक्ष में बच्चों की मुहिम।


मेरे भगवान
जयचंद्र राजगढ़ के शासक थे। न्यायी और वीर। भगवान कृष्ण के अनन्य भक्त थे।
चाहे कुछ हो जाए। दिन का आरम्भ देवदर्शन और पूजा से होता था। एक बार...
महाराज, आपको ज्वर है। स्नान न करें।
यह स्नान और पूजन का नियम नहीं छोड़ सकता।
एक बार राजा वन में जा रहे थे। तूफान आ गया। राजा भटककर दूर जा निकले। एक गुफा में शरण ली।
कैसा मौसम! दो दिन यहीं...शायद कोई आ रहा है।
महाराज की जय हो। आखिर...
मंत्री ने कुछ फल लेने का आग्रह किया। पर...
स्नान-पूजा के बिना कुछ नहीं।
जैसी आज्ञा।


पड़ोसी राजा दुर्गमसिंह राजा जयचंद्र से चिढ़ता था। सदा मौके की तलाश में रहता।
इस बार हम जयचंद्र को...
विजय हमारी होगी!
आक्रमण का समाचार मिला तो जयचंद्र भी मैदान में आ गए। जमकर युद्ध हुआ।
भागने न पाए।
शत्रु सेना भाग रही है महाराज!
दुर्गमसिंह को मुंह की खानी पड़ी। वह भागकर अपने किले में जा छिपा।
कब तक छिपा रहेगा?
दुर्गमसिंह का किला घेराबंदी में था और वह परेशान
कोई तरकीब सोचनी होगी!
उसे तलवार से नहीं जीत सकते।


दुर्गमसिंह हाथ में सफेद झंडा लेकर किले के बाहर निकल आया ।
यह तो स्वयं राजा दुर्गमसिंह हैं !
कोई नई चाल होगी !
राजा जयचंद्र को पता चला तो स्वयं दुर्गमसिंह से मिलने गए ।
मैं हार मानता हूं । संधि...
आप हमारे मित्र हैं ?
दुर्गमसिंह ने राजा जयचंद्र को दावत दी ।
अगर आप मुझे मित्र समझते हैं तो...मेरे साथ भोजन...
हम अवश्य आएंगे ।
सबने मना किया, पर राजा जयचंद्र हठ ठान बैठे । राजा जयचंद्र किले की ओर बढ़े, साथ में कुछ सैनिक भी थे । तभी रास्ते में एक बच्चा दिखाई दिया ।
राजा, अंदर मत जाओ ।
क्यों न जाऊं ? तुम कौन हो ?


बच्चे ने बताया...
उसने तुम्हारे भोजन में विष मिला दिया है ।
तुम्हें कैसे पता ? ऐसे ही झूठ...
बालक ने बहुत मना किया तो...
तुम क्या मेरे कन्हैया हो जो तुम्हारी बात मानूं ?
हां, अब तो विश्वास करोगे ?
राजा गद्‌गद् हो उठे । हाथ जोड़ बढ़े तो भगवान अंतर्धान हो गए । राजा प्रार्थना करने लगे । फिर उन्होंने दुर्गम्सिंह पर आक्रमण का आदेश दिया । दुर्गमसिंह पकड़ा गया ।
मित्र बनकर विष खिलाने की तैयारी थी !
आपको कैसे पता कि...
राजा ने बता दिया कि उनसे कौन कह गया था । इस पर दुर्गमसिंह ने उनके चरण पकड़ लिए ।
मेरे भगवान की भक्ति करो । तुम्हारा राज्य तुम्हें लौटा रहा हूं ।
मैं पापी हूं । क्षमा करें ।
कुलदीप



वीरता की चमक

—किरणकुमारी

इटली के एक छोटे-से पहाड़ी गांव में विको गुआर डीनी रहता था। उसकी पत्नी थी एंजिला। वह अपने पति के साथ पहाड़ी खेतों पर काम करती। उनका बगीचा बेर, रसभरी, अंगूर और नीबू से भरा था। उनका जीवन मजे से कट रहा था लेकिन उनके कोई संतान नहीं थी। इसलिए कभी-कभी वे दुखी हो जाते थे।

एक दिन उन्होंने सोचा— 'गांव के बाहरी छोर पर रहने वाली सूर्य मंदिर की पुजारिन एपोलिना से बात की जाए।' वे जानते थे कि एपोलिना एक जादूगरनी और ज्योतिषी है। वे रविवार को एपोलिना के घर पहुंचे। दरवाजे पर दस्तक देते ही एपोलिना ने कहा—"दरवाजा खुला है। विको और एंजिला, अंदर आ जाओ।"

एपोलिना ने बिना देखे ही उनका नाम लेकर पुकारा। यह जान उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने अंदर प्रवेश किया। घर देख वे चौंके। एपोलिना का घर क्या था! एक जादूगर का अजायबघर था। कहीं बारहसिंगे का सींग लटका था, कहीं शेर की खाल, कहीं गेंडे के सींग। एपोलिना कुर्सी पर बैठी थी।

विको और एंजिला ने अपनी समस्या एपोलिना के सामने रखी। उसने उन दोनों की जन्म तिथियां पूछीं। फिर कागज पर कुछ आड़ी-तिरछी रेखाएं खींचीं। थोड़ी देर सोचकर कहा—"जल्दी ही तुम लोगों के घर एक पुत्र का जन्म होगा। वह बहुत गुणी होगा। सबके भले की सोचेगा। लेकिन तुम लोग उसे बारह-पंद्रह साल में ही छोड़कर गुजर जाओगे।"

यह सुनकर जहां विको और एंजिला को एक तरफ खुशी हुई, वहीं दुःख भी हुआ। एपोलिना से और कुछ पूछने की हिम्मत नहीं जुटा सके। वे घर लौट गए।

एक वर्ष के भीतर एंजिला की गोद भर गई। उसने एक सुंदर-सलोने बच्चे को जन्म दिया। उसका नाम ब्रूनो रखा। ब्रूनो पढ़ने और लिखने में तेज था। वह गजब का शिकारी था।

इसी बीच दुराजो शहर के आस-पास के इलाकों में आतंकवादियों का आतंक बढ़ने लगा। वे किसानों तथा दुकानदारों से पैसे वसूलते थे। कोई भी उनके खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत नहीं करता था।

एक दिन विको और ब्रूनो शिकार पर गए थे। एंजिला उनके लिए खाना तैयार कर रही थी। तभी आतंकवादी वहां आ गए। वे घर में रखे सामानों को खच्चर पर लादने लगे। एंजिला ने विरोध किया तो उन्होंने उसे गोली मार दी। घर का सारा कीमती सामान उठा ले गए।

विको और ब्रूनो शिकार से वापस आए। वे अपने घर की तबाही देखकर हैरान थे। अगल-बगल पूछताछ करने पर किसी ने कुछ भी नहीं बताया। वे पुलिस में रिपोर्ट लिखवाने गए तो वहां उनकी हंसी उड़ाई गई। वे निराश होकर घर लौट आए। उन्होंने भरे मन से एंजिला का अंतिम संस्कार किया। उन्होंने एंजिला के हत्यारों के बारे में धीरे-धीरे सारी बातों की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया। कुछ ही दिनों में उन्हें यह जानकारी मिल गई कि अलफोंसो के लोगों ने एंजिला की हत्या की थी। ब्रूनो ने उनसे बदला लेने

की ठान ली।

ब्रूनो के मामा पालेरमो शहर में रहते थे। पिता ने उसे वहां भेज दिया। ब्रूनो का मामा ब्रिगांजा पालेरमो के पुलिस विभाग में गुप्तचर अधिकारी था। उसने ब्रूनो को इटली के मिलान शहर के सैनिक स्कूल में दाखिला दिला दिया। ब्रूनो ने लगन से पढ़ाई की और उसे इटली की सरकार से वजीफा मिलने लगा। वहां विद्यार्थियों को अनेक तरह के हथियार चलाने की शिक्षा के अलावा घुड़दौड़, तैराकी, खेल-कूद भी सिखाया जाता था। ब्रूनो पढ़ने के साथ-साथ इनमें भी पारंगत हो गया। वह पढ़ाई पूरी कर एक दिन अपने घर जाने की तैयारी में था, तभी पिता की हत्या की खबर मिली। अलफोंसो के लोगों ने बड़ी बेरहमी से विको की हत्या कर दी थी।

ब्रूनो अपने सहपाठी मित्र पीटी के साथ गांव की तरफ चल पड़ा। दुराजो शहर पहुंचकर वे पैदल ही पहाड़ी रास्ते से अपने गांव की तरफ चले। रास्ते में अलफोंसो के लोगों ने उन्हें रोकने की कोशिश की लेकिन ब्रूनो की शारीरिक ताकत और फुर्ती के सामने उनकी एक न चली। उन्होंने बदमाशों की अच्छी खबर ली। घर पहुंचकर उसने पिता का अंतिम संस्कार किया। कुछ दिन बाद वह रोम में जाकर बस



गया। एक दिन वह एक जूता व्यापारी के घर की बाहरी दीवार की पुताई कर रहा था। वह ब्रूनो के काम से बहुत प्रभावित हुआ। उसने ब्रूनो को जूतों की दूकान पर बैठा दिया। ब्रूनो दिन में वहां काम करता और शाम को कालेज में अपनी पढ़ाई। वह जूतों के नए-नए डिजाइन बनाता था। जूतों की बढ़ती हुई मांग को देखकर, व्यापारी ने उसे निर्यात का काम सौंप दिया।

एक दिन ब्रूनो को मामा का संदेश मिला। मामा ने उसे तुरंत बुलाया था क्योंकि ब्रूनो को गुप्तचर विभाग में नौकरी मिल गई थी। अलफोंसो और उसके गिरोह से बदला लेने का एक अच्छा मौका देख, ब्रूनो ने जूता व्यापारी की नौकरी छोड़, पुलिस विभाग में शामिल होने का मन बना लिया।

दो वर्ष के प्रशिक्षण के बाद ब्रूनो सबसे अच्छे अफसर के रूप में उत्तीर्ण हो गया। कमांडो अफसर के रूप में उसकी पहली बहाली पालेरमो शहर में ब्रिगांजा के पास हो गई। ब्रिगांजा ने उसे आतंकवादियों को सबूत के साथ पकड़ने की तरकीबें बतलाईं। ब्रिगाजा और ब्रूनो ने पालेरमो शहर के आतंकवादियों को दो वर्षों में ही जेल की हवा खिला दी। अब शहर में अमन-चैन था। एक दिन ब्रूनो और ब्रिगांजा दुराजो पहुंचे। उनके दुराजो आने की बात सुनकर अलफोंसो इटली छोड़कर, अमरीका भाग गया। उसके गिरोह का सफाया हो गया। अलफोंसो की सारी जायदाद जब्त कर ली गई। सरकार ने उसे अमरीका से गिरफ़्तार करके लाने का भार ब्रूनो को सौंपा

ब्रूनो ने तीन वर्ष की खोज के बाद, अलफोंसो को अमरीका में खोज ही लिया। वहां से उसे इटली वापस लाया गया। वहां उसके अपराधों के आधार पर उसे चालीस वर्ष की कैद की सजा दी गई। ब्रूनो के कार्यों से प्रसन्न सरकार ने उसे पुलिस पदक से सम्मानित किया।

ब्रूनो ने वर्षों तक निष्ठा से काम किया। इटली की जनता प्यार से उसे 'संरक्षक' कहा करती थी।●

देश निकाला

—देवकरण जोशी दीपक

महेंद्रपुर का राजा था राजसिंह । उसके शासन में प्रजा सुखी थी । वह प्रजा के सुख-दुःख का ख्याल रखता था । रात के समय वेश बदलकर नगर में घूमता था, प्रजा का हाल-चाल जानने के लिए ।

महेंद्रपुर में धनिकलाल नामक व्यापारी भी रहता था । बहुत धनवान था धनिकलाल । उसका व्यापार देश-विदेश में फैला हुआ था । इतना पैसे वाला होने पर भी उसे जरा भी घमंड नहीं था । स्वभाव से उदार और दानी था । जो याचक उसके पास आता, खाली हाथ कभी न लौटता । इसके अतिरिक्त धनिकलाल ने महेंद्रपुर में प्रजा की भलाई के बहुत से काम किए थे । जगह-जगह धर्मशालाएं बनवाईं, कुएं खुदवाए । उसके धन से कई विद्यालय चलते थे ।

इसी कारण महेंद्रपुर की जनता धनिकलाल का बहुत आदर करती थी । अक्सर उसके दान-धर्म की चर्चा होती रहती थी । राजा ने यह बात अपने कानों से कई बार सुनी, उसे दरबारियों ने भी बताया । एक दिन राजा के मन में आया—'इस तरह तो धनिकलाल की मान-मर्यादा मुझसे भी अधिक हो जाएगी ।' राजसिंह को धनिकलाल की बढ़ती लोकप्रियता में अपने लिए खतरा दिखाई दिया । उसे क्रोध आ गया । राजा ने उसी समय धनिकलाल को बुलाकर देश निकाला दे दिया । कहा—"अगर अपने प्राण बचाना चाहते हो तो तुरंत परिवार सहित राज्य की सीमा से बाहर निकल जाओ ।"

धनिकलाल घबरा गया । उसने कांपते स्वर में पूछा—"महाराज, मेरा अपराध..."

"तुम जनता में धन बांटते हो । इससे हमारा अपमान होता है । इसीलिए तुम्हें देश निकाला दिया जा रहा है ।" —राजा राजसिंह ने बताया ।

धनिकलाल कुछ पल चुप खड़ा रहा, फिर प्रणाम करके बाहर निकल गया । थोड़ी देर बाद लौटा । उसके पीछे-पीछे कई सेवक थे । हरेक के सिर पर एक संदूक था । उसने कहा—"महाराज, आपका आदेश सिर माथे । जाने से पहले यह धन आपको देने आया हूं । इसे मैंने यहां रहकर कमाया है । यह आपका और यहां की प्रजा का है।इसे आप चाहें तो प्रजा में बांट दें, या जैसा ठीक समझें उपयोग करें । मैं जिस राज्य में जाकर रहूंगा, वहां और धन अर्जित कर लूंगा । वह धन वहां के लोगों के लिए होगा ।"

धनिकलाल के मन में राज्य की भलाई की भावना कितनी प्रबल है, राजा को अब पता चला । वह जान गया कि धनिकलाल की उदारता उसे नीचा दिखाने के लिए नहीं है । वह तो उसके स्वभाव का अंग है । राजसिंह ने स्वयं को धनिकलाल के सामने छोटा महसूस किया । बोला—"धनिकलाल, तुम्हें कहीं जाने की जरूरत नहीं । मेरा भ्रम दूर हो गया है । यहीं रहकर व्यापार करो और पहले की तरह समाज सेवा में लगे रहो ।"

धनिकलाल की उदासी दूर हो गई वह खुशी-खुशी अपनी हवेली की तरफ चला गया । ●



तज बाप का राज

—तेजसिंह तरुण



तीन सौ वर्ष पूर्व मेवाड़ के शासक राणा राजसिंह थे।

राजसिंह की दो रानियां थीं। बड़ी को पंवार जी और छोटी को राठौड़ी जी के नाम से पुकारते थे। पंवार जी के बड़े पुत्र का नाम भीमसिंह था। राठौड़ी जी के पुत्र का नाम जयसिंह था। बड़े होने के कारण भीमसिंह ही राणा का उत्तराधिकारी था। छोटी रानी किसी तरह अपने पुत्र जयसिंह को राणा के बाद गद्दी पर बिठाना चाहती थी, किंतु परम्परा के अनुसार भीमसिंह के रहते ऐसा होना संभव नहीं था। एक-दो बार रानी ने महाराणा को भी अपनी इच्छा बताई। राणा ने स्पष्ट कह दिया कि वह मेवाड़ की परम्परा को नहीं तोड़ सकते, गद्दी पर बड़ा कुंवर ही बैठेगा।

छोटी रानी को और कोई उपाय नहीं सूझा, तो उसने अपने एक मंत्री की मदद लेनी चाही परंतु मंत्री राणा का बहुत विश्वास-पात्र था। उसने रानी जी को सम्मान के साथ मना कर दिया।

मंत्री द्वारा मना कर देने पर छोटी रानी ने अपने एक सेवक को भीमसिंह की हत्या के लिए तैयार किया। उसे खूब धन देने का लालच दिया।

भीमसिंह संध्या के समय हमेशा महलों से दो मील दूर स्थित देवाली ग्राम तक घूमने जाया करते थे। संध्या के समय उस रास्ते पर लोगों का आना-जाना कम हो जाता था। भीमसिंह पैदल-पैदल ही देवाली तक जाते और लौट आते थे।

एक दिन भीमसिंह घूमने के लिए जब महलों से बाहर आए तो उनके सेवक रामनाथ ने रास्ता रोक कर निवेदन किया—''कुंवर जी, आज न जाएं। कृपा होगी।''

भीमसिंह रामनाथ की बात नहीं समझ सके। उन्होंने मना करने का कारण जानना चाहा। इस पर सेवक ने हाथ जोड़ते हुए पुनः कहा—''रास्ते में कुछ भी बुरा हो सकता है।''

''कैसी बात करते हो रामनाथ? अगर हमें ही रास्ते में खतरा होगा तो फिर और लोगों का क्या होगा?''—भीमसिंह अब भी सेवक की बात नहीं समझ सके।

''नहीं हुजूर, और किसी से कोई खतरा नहीं, छोटी रानी साहिबा...।'' रामनाथ ने बात पूरी नहीं की।

''ठीक है रामनाथ, हम भी तो देखेंगे कि कौन क्या करता है हमारा?''—भीमसिंह रामनाथ की बात सुनी-अनसुनी कर चल दिए।

भीमसिंह घूमते-घूमते एक एकांत रास्ते पर आ गए तो एक मोड़ पर चार आदमियों ने हमला बोला। सभी आदमियों के चेहरे आंखों से नीचे तक कपड़े से ढके थे। भीमसिंह सतर्क तो थे ही, उन्होंने भी अपनी कमर से बंधी तलवार निकाली और टूट पड़े। कुछ ही देर में हमलावर जमीन पर लुढ़क गए।

नित्य की तरह जब भीमसिंह महल में आए तो छोटी रानी को आश्चर्य हुआ। उधर भीमसिंह अब पूरी बात समझ चुके थे। एक दिन किसी उत्सव में जब महाराणा और राज-परिवार के सभी लोग एकत्रित हुए तो भीमसिंह ने छोटी रानी और राजकुमार जयसिंह की उपस्थिति में महाराणा से निवेदन किया—''पिता जी, मैं मेवाड़ छोड़कर जाना चाहता हूं। आज्ञा दें।''

''ऐसा क्यों?''—महाराणा ने उदास मन से पूछा।

—''पिता जी, परिवार में अशांति न हो, इसलिए

बड़ा होने के कारण मुझे ही मेवाड़ त्याग देना चाहिए।''

''नहीं-नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता है। आप बड़े हो, आपके कारण परिवार में अशांति कैसे हो सकती है ?''—महाराणा ने सब कुछ समझते हुए भी यही कहा।

''अधिक कुछ कहना अच्छा नहीं लगता है। मैं प्रतिज्ञा कर चुका हूं, आप आज्ञा दें। मेरे जाने से कोई अंतर नहीं आएगा।''

—''यह तो ठीक है कुंवर जी, किंतु गद्दी का क्या होगा ?''

—''गद्दी के लिए जयसिंह हैं पिता जी। वह भी तो मेरे भाई हैं। मुझ में और उनमें क्या फर्क है ?''

महाराणा आगे कुछ बोले नहीं। वह मन ही मन सब समझ गए। छोटी रानी और जयसिंह राणा की बगल में चुपचाप बैठे थे। छोटी रानी मन ही मन खुश थी। उसकी योजना सफल जो हो रही थी। पर जयसिंह का मन भीमसिंह की बातों से भारी हो रहा था। बड़ों के बीच में बोलना न चाहकर भी बोल ही पड़े—''भैया, यह सब क्यों कर रहे हो ? कुछ समझ में नहीं आ रहा है।'' इस पर भीमसिंह ने स्नेहपूर्वक कहा—''जयसिंह, राजपूत त्याग और बलिदान के लिए पैदा होता है। मैं भी इसी परम्परा को निभा रहा हूं। मेवाड़ मेरी मातृभूमि है और तुम मेरे भाई हो।''

अब तक मन ही मन प्रसन्न होने वाली छोटी रानी से भी नहीं रहा गया। वह बोलीं—''नहीं कुंवर जी, अब आप नहीं जाएंगे। जो कुछ हुआ उसके लिए मुझे क्षमा करें। आप मुझे दंड दिलवाएं। मैंने ही जयसिंह को गद्दी दिलाने के लिए आपको रास्ते से हटाना चाहा था।''

रानी ने अपना मुंह चुनरी से ढक लिया और सुबकने लगीं। चारों ओर एकदम शांति छा गई। कुछ समय मौन रहने के बाद भीमसिंह ने महारानी से पुनः निवेदन किया—''मुझे मेरी प्रतिज्ञा का पालन करने दें। मैं भगवान एकलिंग की सौगंध ले चुका हूं। मेवाड़ की गद्दी से एक राजपूत की सौगंध बड़ी होती है। मेरे मन में आपके लिए अब भी वही मां का स्थान है। आप मुझे राजपूती धर्म का पालन करने दीजिए।''

इस तरह भीमसिंह को समझाने के सब प्रयत्न विफल रहे। दूसरे दिन सारा उदयपुर नगर भीमसिंह के मेवाड़ छोड़ने का समाचार सुनकर चकित रह गया। निश्चित समय पर अपने प्यारे राजकुमार को विदा करने के लिए सड़कों पर भीड़ उमड़ पड़ी।

जब एक सादी पोशाक में भीमसिंह महलों से बाहर आए, तो जनता ने इतने फूल बरसाए कि सड़क पट गई। भीमसिंह ने दोनों हाथों से जनता का अभिवादन किया। जयसिंह भी उनके साथ थे। वह उदास थे। दोनों भाई नगर से बहुत दूर तक साथ-साथ चलते रहे। जनता का अपार समूह भी उनके पीछे था।

जब नगर से बहुत दूर तक भी लोग उनका साथ छोड़कर नहीं गए, तो भीमसिंह ने ही एक स्थान पर रुक कर उनसे वापस जाने का आग्रह किया। जयसिंह अपने को नहीं रोक सके। वह बड़े भाई से लिपट गए। रोते हुए बोले—''भैया, आपका आशीर्वाद सदैव मेरे साथ रहे, यही चाहूंगा।''

''निश्चिंत रहो जयसिंह, तुम्हारे और मेवाड़ के लिए मेरी जान भी चली जाए तो कोई बात नहीं।'' —भीमसिंह ने जयसिंह की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा।

जयसिंह दुखी मन से जनता के साथ नगर की ओर मुड़े और भीमसिंह आगे की ओर बढ़ गए।●



पुखरा

—आलोक 'चंद्र'

सात समुद्र पार बौनों का देश था मोजाम्बा। मोजाम्बा के निवासी अत्यंत पढ़े-लिखे, सभ्य और सुसंस्कृत थे। वे अपने छोटे-से देश में अपने छोटे-छोटे घरों में प्रसन्नतापूर्वक रहते थे।

बौनों का राजा था लम्बारा। वह एक न्यायप्रिय शासक था। अपनी प्रजा का अपने बच्चों की तरह ख्याल रखता था। लम्बारा के दरबार में दो वैद्य थे—पुखरा और जगंदा। पुखरा और जगंदा में बड़ा प्रेम था।

एक दिन ऐसी घटना हुई, जिसने पुखरा के जीवन की दिशा ही बदल दी। पुखरा किसी गांव में असाध्य रोग से ग्रस्त एक बौने का इलाज करने गया था। पुखरा ने इलाज करने की बहुत कोशिश की, मगर उस बौने को न जाने कैसा रोग था, उसकी हालत बिगड़ती ही जा रही थी। पीड़ा से छटपटाते हुए उसने जान दे दी।

उस दर्दनाक मौत से पुखरा को मानो काठ मार गया। वह भारी कदमों से वापस लौटा। दो दिन तक दरबार में भी नहीं गया। रह-रहकर यही सोचता—'मेरी विद्या का क्या फायदा? लोग तड़प-तड़पकर मेरे सामने ही मर जाते हैं और मैं कुछ नहीं कर पाता!' बहुत बेचैन था पुखरा।

पुखरा दिन-रात एक ही बात सोचता—'काश कोई ऐसी दवा मिल जाए, जिससे सारे असाध्य और कष्टकारी रोग दूर हो जाएं।'

पुखरा जी-जान से ऐसी दवा की खोज में जुट गया। वह दिन में कुछ देर के लिए दरबार में जाता, लोगों का इलाज करता और फिर दवा की खोज में जुट जाता। रात-रात भर वह चिकित्सा शास्त्र के प्राचीन ग्रंथ छानता रहता। कभी-कभी तो कई दिन तक जड़ी-बूटियों की खोज में जंगल-जंगल भटकता रहता। उसने अनगिनत दवाओं का परीक्षण कर डाला। हजारों जड़ी-बूटियां आजमाईं, मगर कामयाब न हो सका।

धीरे-धीरे पांच वर्ष बीत गए। पुखरा दवा की खोज में ऐसा तल्लीन हुआ कि उसे समय का ध्यान ही न रहा। एक दिन वह शीशे के सामने खड़ा था कि सहम उठा। अपने सन-से सफेद बालों और झुर्रीदार चेहरे को देखकर वह चिंतित हो उठा। 'क्या मैं बूढ़ा हो चला हूं?' —वह सोचने लगा। अब उसे एक और चिंता सताने लगी, बुढ़ापे की चिंता। 'कहीं मैं मर गया तो दवा की खोज का कार्य अधूरा ही रह जाएगा।' यह सोच-सोचकर वह चिंता में घुला जा रहा था।

पुखरा ने दवा की खोज के बारे में अभी तक किसी को नहीं बताया था, अपने परम मित्र जगंदा को भी नहीं। पिछले पांच वर्षों से उसे दीन-दुनिया का होश ही नहीं था, लिहाजा जगंदा से भी मुलाकात कम ही होती थी। मगर एक दिन जब पुखरा जगंदा से मिला तो



दुखी मन से उसने जगंदा को सारी बात बता दी। अपनी चिंता का कारण भी उसे बता दिया।

जगंदा ने यह सब सुनकर पुखरा से कहा कि वह दवा की खोज में जुटा रहे। और वह खुद भी ऐसी दवा की खोज में लग गया।

एक दिन पुखरा को लगा कि इस बार उसकी खोज अवश्य कामयाब होगी। उसने एक ऐसी विधि खोज निकाली थी, जिससे वह असाध्य रोग दूर करने वाली दवा बना सकता था। उसने यह खुशखबरी जगंदा को दी वह भी प्रसन्न हो उठा।

पुखरा को मारे खुशी के रात भर नींद नहीं आई। इधर जगंदा की आंखों से भी नींद गायब थी। वह सोच रहा था 'यदि पुखरा सचमुच वैसी दवा बनाने में कामयाब हो गया, तो मोजाम्बा में पुखरा सर्वश्रेष्ठ वैद्य हो जाएगा।'

दूसरे दिन पुखरा और जगंदा ने सारे दिन



जंगल-जंगल घूमकर ढेर सारी जड़ी-बूटियां इकट्ठी कीं। रात होते-होते वे घर लौट आए। रात में ही पुखरा ने दवा बनानी शुरू कर दी।

तभी जगंदा ने पुखरा की नजर बचाकर एक जड़ी बदल दी। उसकी जगह किसी पेड़ की सूखी टहनी रख दी। उसे जड़ी-बूटियों में मिलाकर कूट-पीस डाला।

दवा बनते ही पुखरा बड़ा प्रसन्न हुआ। रात बीत चुकी थी। थके-हारे पुखरा और जगंदा विश्राम करना चाहते थे। जगंदा अपने घर चला आया और बिस्तर पर लेट गया। मन ही मन वह खुश था

जगंदा दिन ढले तक सोता रहा। अचानक धम-धम की आवाज सुनकर उसकी नींद टूटी। वह चौंककर उठ बैठा। लगा धरती हिल रही है। वह बाहर की तरफ भागने लगा कि तभी पुखरा वहां आया। डर के मारे उसकी घिग्घी बंधी हुई थी। कांपते स्वर में वह इतना ही बोल सका—"...जगंदा, मुझे बचाओ। वह दानव मुझे मार डालेगा..."

दरअसल ऐसा हुआ कि पुखरा ने नई औषधि एक असाध्य रोग से पीड़ित युवक को पिला दी। दवा पीते ही युवक का आकार बढ़ने लगा। उसके सारे कपड़े फटने लगे और वह दैत्याकार हो गया। क्रोधित होकर वह पुखरा की ओर झपटा, मगर पुखरा किसी तरह उसके चंगुल से बचकर भाग खड़ा हुआ।

राजा लम्बारा ने अपनी सेना के बहादुर सैनिकों की टुकड़ियां उस दानव को मार डालने के लिए भेजीं। मगर कहां वह दानव और कहां बौनों की सेना। दानव सबको रौंदता हुआ बढ़ता चला जा रहा था। आखिर बौनों की सेना ने जहर बुझे तीरों से हमला किया। दानव मूर्च्छित होकर गिर पड़ा और उसे लोहे की बड़ी-बड़ी रस्सियों से बांध दिया गया।

जगंदा को अब महसूस हो रहा था कि उसकी ईर्ष्या की भावना का ही इतना भयानक परिणाम हुआ था। उसका हृदय चीत्कार कर उठा। रोते हुए वह पुखरा के पैरों पर गिर पड़ा और उससे माफी मांगने लगा—"पुखरा, मेरे मित्र, मुझे माफ कर दो।"

पुखरा सन्न रह गया। 'तो क्या जगंदा ने ही दवा में गड़बड़ी की थी और इसीलिए वह युवक दानव बन गया था?' पर मित्र को फूट-फूटकर रोते देख, पुखरा का दिल भर आया। उसने मित्र को गले लगाते हुए कहा—"जगंदा, मेरे भाई, मुझे खुशी है, तुम्हारे मन का मैल दूर हो गया। अब हम असाध्य रोगों को ठीक करने वाली औषधि, फिर से बनाएंगे।"

जगंदा और पुखरा ने रात-दिन लगकर नई दवा बनाई। उस दानव युवक का इलाज किया तो वह अपने सही रूप में आ गया। राजा लम्बारा ने भी उन्हें विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया। ●



□ अध्यापक—लगता है, तुमने अपने नहीं बल्कि पड़ोसी के कुत्ते पर निबंध लिखा है।
छात्र—हां सर, क्योंकि अपना कुत्ता तो मुझे क्या, किसी को भी अपने पास फटकने नहीं देता।

□ एक मित्र—तुम बातें बहुत करते हो। बताओ, मेरा काम कब करोगे ?
दूसरा मित्र—जब तुम मुझे पिछले काम का रुपया दे दोगे, तो आगे की सोचूंगा।

□ आदमी—तुम्हें कैसे मालूम कि मेरी इस साल तरक्की नहीं हुई ?
भिखारी—बाबूजी, आप पिछले साल भी मुझे अठन्नी देते थे और आजकल भी अठन्नी दे रहे हैं। इसी से अंदाजा लगाया।

□ मकान मालिक—तुम मेरा मकान कब खाली करोगे ?
किराएदार—जब तक यह अपने आप गिर नहीं जाता।

□ एक गप्पी—मेरे साथ हवा महल कब चलोगे ?
दूसरा गप्पी—जैसे ही हवामहल तैयार हो, मुझे खबर दे देना। तुम आगे-आगे और मैं तुम्हारे पीछे ही वहां आ जाऊंगा।

□ जज—क्या तुम इनमें से चोरों को पहचान सकते हो ?
सेठ—हुजूर, जब चोर भाग रहे थे, तो मेरा चश्मा अलमारी में रखा था। अतः मैं पहचान नहीं सकता।

□ ग्राहक—बाल काटने के छह रुपए हुए। फिर तुम मुझसे सात रुपए कैसे मांग रहे हो ?
नाई—एक रुपया कैंची में दोबारा धार लगाने के लिए।

□ अजय—नवनीत, क्या तुम चीनी पढ़ सकते हो ?
नवनीत—पढ़ तो नहीं सकता, पर खा जरूर सकता हूं।

□ मोहन (विपुल से)—रात में सूरज दिखाई क्यों नहीं देता ?
विपुल—इतने अंधेरे में दिखाई कैसे देगा ?

□ सिपाही (चोर से)—तुम मरने के बाद स्वर्ग जाना पसंद करोगे या नरक में ?
चोर—स्वर्ग में, क्योंकि वहां आप जैसे लोगों की जरूरत नहीं पड़ती।

□ भिखारी—बहन जी, किसी भूखे के लिए खाना है ?
महिला—है, पर वह भूखा अभी दफ़्तर में है।

□ अध्यापक—एक में एक को कैसे मिलाएं कि दो से अधिक हो जाएं ?
सौरभ—सर, दोनों को पास-पास रखकर।

□ पिता—राजू, तराजू लेकर स्कूल क्यों जा रहे हो ?
राजू—मास्टर साहब ने कहा था कि हर सवाल का नपा-तुला जवाब देना।

□ हरीश—मुझे रोज सपना आता है कि मेरे पैर में कांटा चुभ गया है।
सतीश—अरे, तो फिर डाक्टर के पास क्यों नहीं जाते !

□ उर्मिला—रुचि, बताओ भालू के शरीर पर इतने अधिक बाल क्यों होते हैं ?
रुचि—जंगल में नाई नहीं होते न !

□ पिता—तुम्हारी रिपोर्ट पर लिखे इस जीरो का क्या मतलब है ?
मोनू—कुछ नहीं पिता जी, मास्टर जी इससे पहले कुछ लिखना भूल गए होंगे।

□ रोगी—डाक्टर साहब ! आपने मुझे कल जो दवा दी थी, भूल से वह मेरा बेटा पी गया।
डाक्टर—कोई बात नहीं, दो-चार दिन पड़ोसियों को आराम ही मिल जाएगा।

□ पति—पड़ोसी को देखो, वह हमारी बिल्ली को दूध पिला रहा है।
पत्नी—लगता है, उसके घर में चूहे अधिक हो गए हैं।



everest/93/PP/217-hn

रविवार यानि पियानो, नर्सरी राइम्स और साथ ही हरपल बस मॉर्टन



MORTON
SWEETS

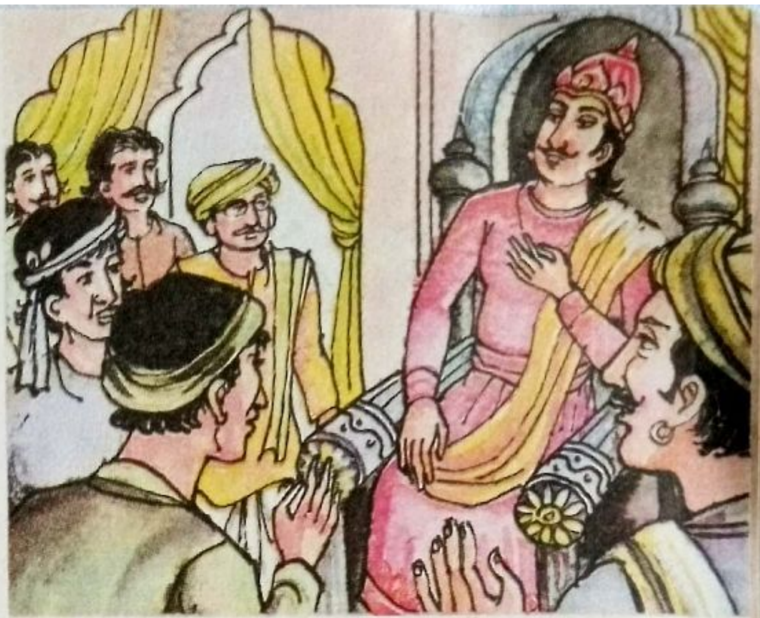
मुझे रविवार बहुत प्रिय है...... हर समय नर्सरी राइम्स की ताल, मम्मी का साथ और मार्टन का रसभरा स्वाद.
मार्टन मेरे परिवार की सदा से ही पहली पसंद रही है।
उत्कृष्ट शुद्धता और स्वादिष्ट तथा साथ ही अनेकानेक जायकों में उपलब्ध—क्रीमयुक्त दूध,
ग्लूकोज़ और चीनी की पौष्टिकता से भरपूर।
चॉकलेट एवं कोकोनट कुकीज़ रोज एक्लेयर्स, सुप्रीम चॉकलेट तथा कोकोनट टाफियाँ,
लेक्टोबोनबोन्स, मैंगोकिंग एवं अन्य अनेकों मनलुभावन स्वादों में उपलब्ध।
आह्हा ! क्या लाज़वाब स्वाद !

जीवन का अनुपम माधुर्य

मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड
मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री
पो० ओ० मढ़ौरा-८४१४१८, सारन, बिहार

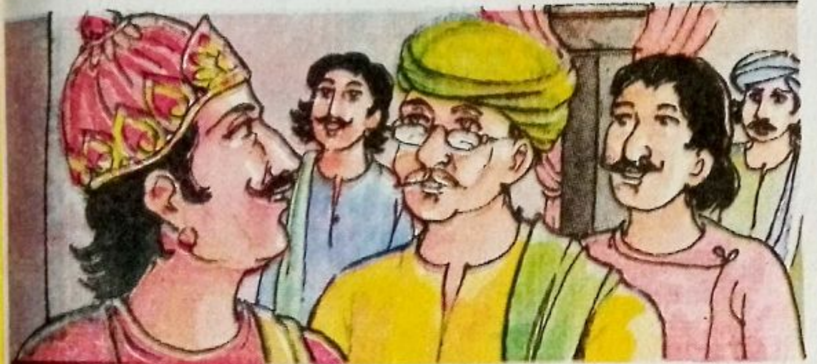
तेनालीराम (३२२)

मूर्ति ने कहा



राजा कृष्णदेव राय के दरबार में दो भाई झगड़ते हुए आए। झगड़े का कारण एक मूर्ति थी। पता चला, पिता के मरने पर सारी सम्पत्ति उन दोनों भाइयों ने आधी-आधी बांट ली थी, किंतु उस मूर्ति का बंटवारा कैसे होता? बड़ा भाई कहता—'मैं बड़ा हूं। मूर्ति मैं लूंगा।' छोटा कहता—'मैं लूंगा।'

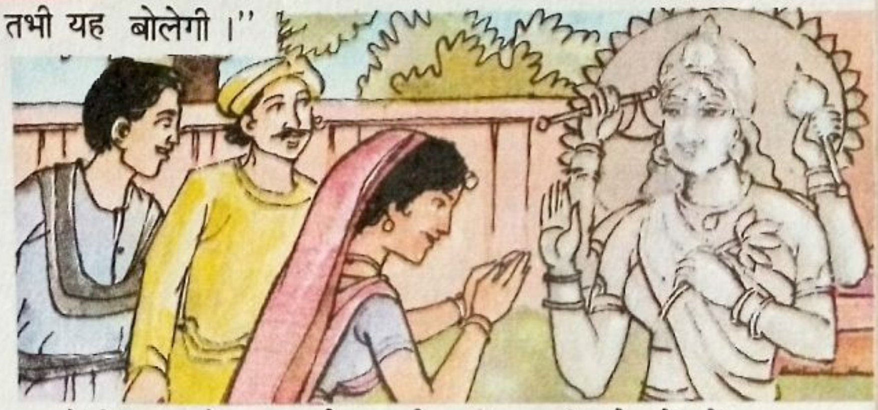
राजा भी परेशान। मूर्ति दो भागों में बंट नहीं सकती। फिर बंटवारा कैसे हो? सारे दरबारी सोच-सोच कर हार गए।



राजा ने मामला तेनालीराम को सौंपा। तेनालीराम बोला—"मूर्ति स्वयं कहेगी, वह किसके पास रहना चाहती है?"

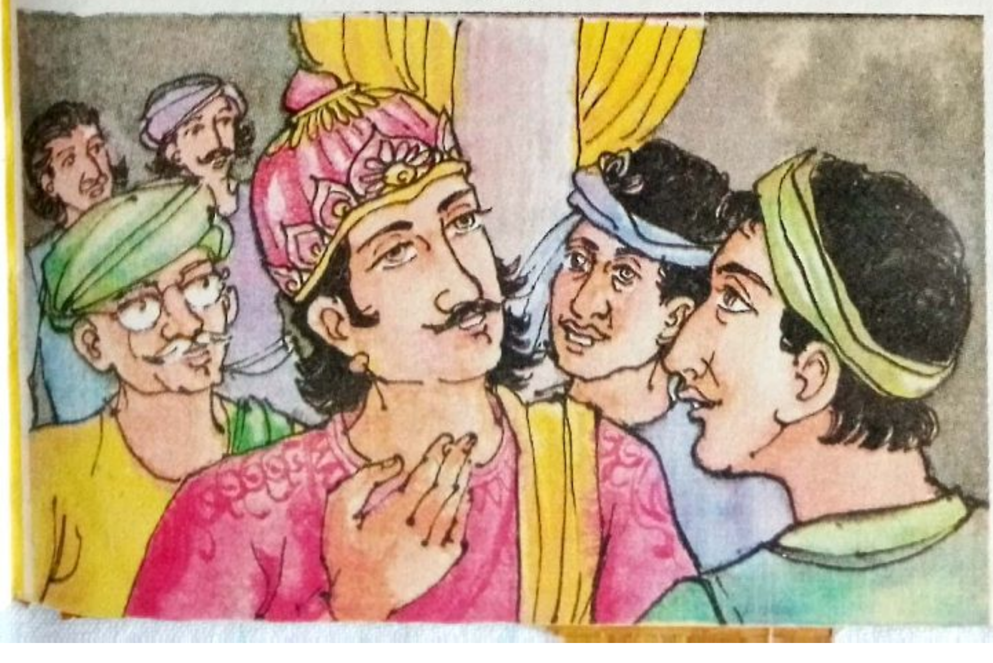
विचित्र बात थी। राजा बोले—"मूर्ति कैसे कहेगी?"

तेनालीराम ने कहा—"मूर्ति की शोभा मंदिर में होती है। यह वहां प्रतिष्ठित कर दी जाए। तभी यह बोलेगी।"



दोनों भाई भी मान गए। राज्य के एक मंदिर में धूमधाम से मूर्ति की प्रतिष्ठा हुई। मंदिर में भक्तों का आना-जाना शुरू हो गया। लोग आते और उस भव्य मूर्ति के दर्शनों का श्रेय उन दोनों भाइयों को देते।

महीनों बीत गए, किंतु मूर्ति बोली नहीं। भाइयों ने राजा से कहा, तो वह तेनालीराम की ओर देखने लगे। तेनालीराम बोला—"मूर्ति ने निर्णय दे तो दिया महाराज। देवता की मूर्ति किसी एक की सम्पत्ति नहीं होती, सब की होती है। हां, श्रेय उसे देने वाले को मिलता है। सो इन दोनों भाइयों को मिलने लगा है। वह इनकी पूरी सम्पत्ति से बड़ा है।"



राजा ने मुसकराकर दोनों भाइयों की ओर देखा। वे निर्णय से संतुष्ट थे। ●



बरात गायब

—गिरिवर शर्मा 'ऋषि'

जंगल किनारे बसे गांव में एक लड़का अपने काका के पास रहता था। उसके जन्म के बाद उसके माता-पिता का देहांत हो गया था, इसलिए सभी उसे मनहूस कहकर बुलाते थे। काका, काकी भी उसे प्यार नहीं करते थे। वैसे उसका नाम लखन था।

दिन भर लखन घर का काम करता। खेतों की रखवाली करना, पशु चराना, जंगल से सूखी लकड़ी बीनकर लाना जैसे कमरतोड़ काम करने के बाद भी काकी उसे रूखा-सूखा भोजन देती। स्वयं अपने बच्चों के साथ अच्छा भोजन खाती। यह अन्याय देखकर उसे बहुत दुःख होता।

एक दिन लखन कुछ साथियों के साथ लकड़ी बीनने गया। दूर घने जंगल में उन्होंने किसी जानवर की चीख सुनी। वे उसी ओर चल दिए। वहां उन्होंने कंटीली झाड़ियों में एक रीछ को फंसा देखा। उसके बाल झाड़ियों में उलझ गए थे। शरीर में कांटे चुभने से खून निकल रहा था। वह दर्द से चीख रहा था।

लखन के साथी पत्थर उठाकर उसे मारने लगे, जिससे रीछ और जोर से चीखने लगा। उसकी परेशानी देख, लड़के बड़े खुश हो रहे थे। परंतु लखन को यह सब अच्छा न लगा। उसने कहा—''यह बेचारा झाड़ियों में फंस गया है। आओ, मिलकर इसे बाहर निकाल देते हैं।''

एक लड़के ने उसे डांटते हुए कहा— ''क्या पागल हो गया है! यह बाहर निकलते ही किसी को नहीं छोड़ेगा।'' दूसरे ने कहा—''इसका नाम किसी ने सोच-समझकर ही मनहूस रखा है। जब भी करेगा,

उल्टी ही बात करेगा। इसे साथ ले चलना, अपनी जान खतरे में डालना है। आओ, चलें। इसे यहीं रहने दो।"

सब चले गए, परंतु लखन नहीं गया। रीछ पर उसे दया आ रही थी। किसी तरह उसने रीछ को झाड़ियों से बाहर निकाला। उसके शरीर से कांटे निकालकर घाव साफ किए। भोजन की पोटली खोली। पहले रीछ को रोटी खिलाई, फिर बची हुई खुद खाई। अब उसे लकड़ी बीनने की चिंता हुई। वह सोच रहा था—'दोपहर बीत चली है, अब तो लकड़ी इकट्ठा करना मुश्किल है। शाम को लकड़ी लेकर घर नहीं पहुंचा, तो पिटाई होगी। अब क्या करूं ?' इसी सोच-विचार में न जाने कब उसकी आंख लग गई।

नींद खुलने पर उसने रीछ को अपने पास बैठे पाया। वहां लकड़ी का एक गट्ठर भी रखा था। यह देखकर उसे आश्चर्य हुआ। तभी रीछ ने कहा—"अपनी लकड़ियां ले जाओ।"

रीछ को मनुष्य की तरह बोलते सुन, लखन को बहुत डर लगा। तब रीछ ने कहा—"डरो मत, मेरा नाम जामवंत है। तुम्हारे जैसे दयालु और परोपकारी लड़के मुझे बहुत प्रिय हैं। मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं। तुम मुझसे कुछ भी मांग लो।"

रीछ की बात सुनकर लखन सोच में पड़ गया। उसने कहा—"रीछ महाराज, मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

जामवंत ने कहा—"तुम जब भी मुझे याद करोगे, मैं तुम्हारी सहायता करने आ जाऊंगा।" इतना कहकर वह एक गुफा में चला गया। लखन ने लकड़ियों का गट्ठर उठाया और अपने साथियों से पहले घर पहुंच गया।

कुछ दिनों बाद काका के पुत्र के विवाह की तैयारियां होने लगीं। लखन दौड़-दौड़कर काम कर रहा था। बरात में जाने की उसकी बड़ी इच्छा थी, लेकिन काका ने उसकी इच्छा पर पानी फेर दिया। उन्होंने कहा—"यह मनहूस साथ में गया, तो पता नहीं क्या मुसीबत आ जाए ? इसे यहीं रहने दो। घर का कामकाज करने के लिए भी कोई चाहिए।" उसे वहीं छोड़कर गाजे-बाजे के साथ बरात दूसरे गांव रवाना हो गई।

बरात समय पर बेटी वाले के यहां नहीं पहुंची। कन्या पक्ष के लोग भागे-भागे आए। यह खबर जब गांव वालों ने सुनी तो सब को बहुत चिंता हुई। काकी लखन को कोसने लगी— "पैदा होते ही मां-बाप को खा गया। अब मेरा घर बरबाद कर दिया। निकल जा यहां से।"

लखन को काकी की बातों से बहुत दुःख हुआ। उसने मन ही मन संकल्प लिया—'जब तक बरात का पता न लगा लूंगा, चैन से नहीं बैठूंगा।' इसी निश्चय के साथ वह गांव से चल दिया।

वह इधर-उधर भटकता रहा, कहीं बरातियों का पता नहीं लगा। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था, कि बरात को आकाश ने निगल लिया या धरती में समा गई।

एक दिन अचानक पेड़ के नीचे उसने पत्थर की कुछ मूर्तियां देखीं। आगे बाजे वाले, बीच में घोड़े पर सवार दूल्हा तथा पीछे बरातियों की प्रतिमाएं थीं। ऐसी विचित्र मूर्तियां देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। जब उसने ध्यान से देखा, तो उनमें काका, भाई तथा अन्य गांव वालों की झलक दिखाई दी। उन्हें इस हालत में देखकर लखन को बहुत दुःख हुआ। वह वहीं बैठ गया।

शाम होते ही हिंसक जानवरों की आवाज से जंगल गूंजने लगा लेकिन वह साहसपूर्वक बैठा रहा। तभी उसे जंगल में दीपक की रोशनी दिखाई दी। लखन उसी दिशा में चल दिया। उसने देखा, वहां पत्थर का एक गोल मकान बना हुआ है। उसमें कोई दरवाजा नहीं है। बस, छोटी-सी खिड़की है। उसी में से प्रकाश आ रहा था। ऐसा विचित्र मकान देखकर, उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। लखन ने खिड़की के पास पहुंचकर पुकारा—"अंदर कोई है ?"

कुछ देर तक चुप्पी रही। फिर खिड़की के पास

एक लड़की दिखाई दी। उसने पूछा—"आप कौन हैं ?"

लखन को देखकर लड़की रोने लगी। उसने बताया—"मैं नंदनपुर की राजकुमारी शुचिता हूं। एक जादूगर ने मुझे यहां कैद कर रखा है।"

लखन ने किसी तरह उसे चुप कराया। सांत्वना देते हुए कहा—"घबराओ मत। मैं आपको सकुशल घर पहुंचा दूंगा। अब यह बताओ कि जादूगर यहां कब आता है ?"

राजकुमारी ने कहा—"वह दिन निकलते ही यहां आकर मंत्र का जाप करता रहता है। शाम होने पर यहां से चला जाता है।"

अब लखन ने पूछा—"यहां थोड़ी दूर पर एक पेड़ के नीचे पत्थर की प्रतिमाएं रखी हैं। उसके बारे में तुम्हें कुछ पता है ?"

शुचिता बोली—"हां ! एक दिन यहां से एक बरात जा रही थी। ढोल की आवाज से जादूगर की मंत्र साधना में बाधा पड़ी, तो उसने जादू से सब को पत्थर बना दिया।"

लखन को राजकुमारी के साथ बातें करते हुए पता ही न चला कि रात कब बीत गई। सवेरा होते ही जादूगर आ गया। वहां लखन को देखकर क्रोधित हो, उसे मारने दौड़ा।

लखन कुश्ती के दांव-पेच का अभ्यास गांव के अखाड़े में करता रहता था। उसने डटकर जादूगर का मुकाबला किया। जादूगर ने जादू का सहारा लिया। अब लखन कमज़ोर पड़ गया। अचानक उसे जामवंत की याद आई। उसने पुकारा—"जामवंत महाराज ! मेरी रक्षा कीजिए।"



उसके इतना कहते ही आकाश में जोर की गड़गड़ाहट हुई। तेज हवा चलने लगी। बड़े-बड़े पत्थर गिरने लगे। पल भर में ही जामवंत वहां आ पहुंचा। उसका विशाल रूप देखकर जादूगर के होश उड़ गए। वह भय से कांपने लगा। उसने जामवंत पर अपना जादू चलाना चाहा, परंतु उसकी एक न चली।

जादूगर गिड़गिड़ाने लगा। अपने किए पर पश्चात्ताप करते हुए दया की भीख मांगने लगा।

उसकी ऐसी हालत देखकर लखन को दया आ गई। उसने जामवंत से कहा— "इसे प्राणदंड मत दीजिए। इस पर दया कीजिए। इसकी जादुई शक्ति समाप्त कर दीजिए, जिससे यह फिर किसी का अहित न कर सके।"

जामवंत ने वैसा ही किया। जादू समाप्त होते ही सभी बराती अपने असली रूप में आ गए। काका ने लखन को गले से लगाकर कहा—"बेटा, तू मनहूस नहीं, बहुत शुभ है। तेरे कारण ही आज हमें नया जीवन मिला है। मैंने तुझे बहुत कष्ट दिए हैं। मुझे क्षमा कर दे।"

लखन बोला—"काका, आप बड़े हैं। मुझे शर्मिंदा मत कीजिए। आप बरात लेकर चलिए। मैं राजकुमारी को घर छोड़कर आता हूं।"

जामवंत ने क्षण भर में ही लखन व राजकुमारी को नंदनपुर पहुंचा दिया। अपनी पुत्री को सकुशल देखकर महाराजा बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने ढिंढोरा पिटवाया था कि जो कोई भी राजकुमारी को ढूंढ़कर लाएगा, उसके साथ राजकुमारी का विवाह कर, आधा राज्य दिया जाएगा। अपने वचन का पालन करते हुए उन्होंने शुचिता का विवाह लखन से कर दिया। अब लखन वहीं रहने लगा। उसका जीवन एकदम बदल गया था। वह जामवंत को कभी नहीं भूला। उनसे मिलने के लिए जंगल की गुफा में जाता रहता था।●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु० पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएंगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. तुमने देखा है—को गाते हुए कभी! (फूलों/फूफी)

२. देखो-देखो, वह—टूटा। (ताला/तारा)

४. लेकिन राजकुमारी, मुझे उस—की भला क्या परवाह? (बाघ/बाली)

८. सच तो यह है, उस—ने मेरा जीवन बदल दिया। (दानी/दादू)

९. मुझे तो महारानी, वह कवि—गया है। (भा/छू)

११. मेरी बात मानें तो यह—रहने दीजिए नवाब साहब। (शान/पान)

१२. एक सुंदर, छोटी चिड़िया।

ऊपर से नीचे

३. बगीचे में पहुंचा तो मुझे फिर उसी—की याद आई। (कली/माली)

५. वह आपका—है रामचरन जी? (तोता/पोता)

६. आसमान में उड़ते समय—ने क्या कहा था वृषभानु? (परी/पक्षी)

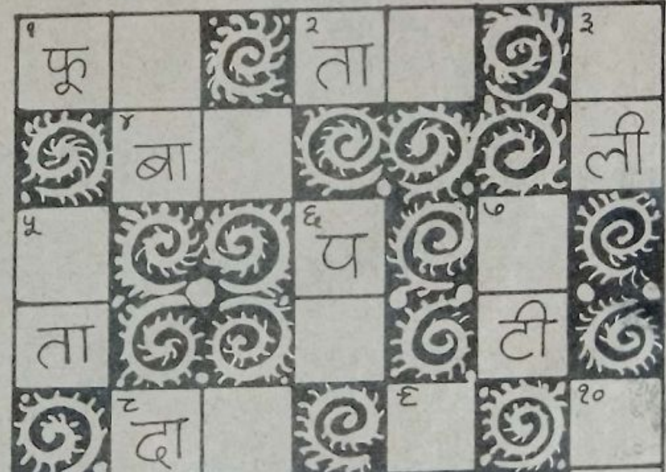
७. चलो, गांव जाकर तनिक—लेकर आएं। (रोटी/माटी)

१०. आदिवासियों का एक प्रसिद्ध नृत्य।

नंदन ज्ञान-पहेली : ३१४

नाम ____________

उम्र ______ पता ____________



न. ज्ञा. प. ३१४

दुआ

—अक्षय मिश्रा

चंदनगढ़ में मोनी और बोनी नामक दो मित्र रहा करते थे। दोनों में गहरी मित्रता थी। ठंड का मौसम था। एक दिन मोनी और बोनी दोनों सुबह की सैर के लिए निकले। रास्ते में एक भिखारी अपने पेट पर घुटनों को सटाए, दांतों को किटकिटाते, कराहते हुए पेड़ के नीचे पड़ा था। मोनी बड़ा ही सहृदय था। उसने उस भिखारी की स्थिति देखकर अपने ओढ़े हुए शाल को उसके ऊपर डाल दिया। भिखारी ने कातर दृष्टि से उसकी ओर देखा। फिर दोनों हाथ ऊपर उठाकर बुदबुदाया—"हे ईश्वर, मैं तो गरीब हूं। इन को दुआओं के अलावा कुछ नहीं दे सकता। लेकिन मेरी विनती है,इसकी मनोकामना पूरी करना।"

बोनी ने मोनी को कोहनी मारी मजाक उड़ाते हुए कहा—"सुना, भिखारी ने भगवान से तेरे लिए क्या मांगा ? भिखमंगा कहीं का !"

मोनी ने मुसकराते हुए बोनी की ओर देखा। बोला—"देखो बोनी, वह गरीब जरूर है। माना उसके पास कुछ भी नहीं है, लेकिन किसी को कुछ देने की इच्छा तो रखता है। इस दुनिया में कई लोग ऐसे भी हैं, जिनके पास बहुत-कुछ है लेकिन किसी को फूटी कौड़ी भी देना नहीं चाहते।"

बोनी मोनी की बात समझकर अपनी भूल के लिए पश्चाताप करने लगा।

पाठकों/लेखकों से

• नंदन कंप्यूटर पर कम्पोज होता है। अतः टाइप की हुई रचनाएं भेजिए।

• रचना के साथ डाक टिकट लगा और नाम-पता लिखा लिफाफा अवश्य भेजें।

• यदि रचना वेद-पुराण, अन्य प्राचीन ग्रंथों से ली गई है अथवा ऐतिहासिक है, तो सही संदर्भ का पूरा उल्लेख अवश्य करें।

• जिस प्रतियोगिता में भाग ले रहे हों, उसका नाम लिफाफे पर अवश्य लिखें।

अधूरा किला

—कनक

दिल्ली का बादशाह मुहम्मद तुगलक, दिल्ली के निकट तुगलकाबाद का किला बनवा रहा था। कहते हैं, उसी के पास प्रसिद्ध सूफी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया एक बड़ा कुआं खुदवा रहे थे। राज-मजदूर हजरत साहब के कुएं पर काम करने चले जाते थे। किले के काम में इससे बाधा पड़ने लगी। बादशाह तक बात पहुंची, तो उन्होंने कड़ा हुक्म दिया कि एक भी मजदूर कुएं पर काम करने न जाए। बेचारे मजदूर अब दिन भर बादशाह के यहां काम करते, रात को संत साहब के यहां काम करने लगे।

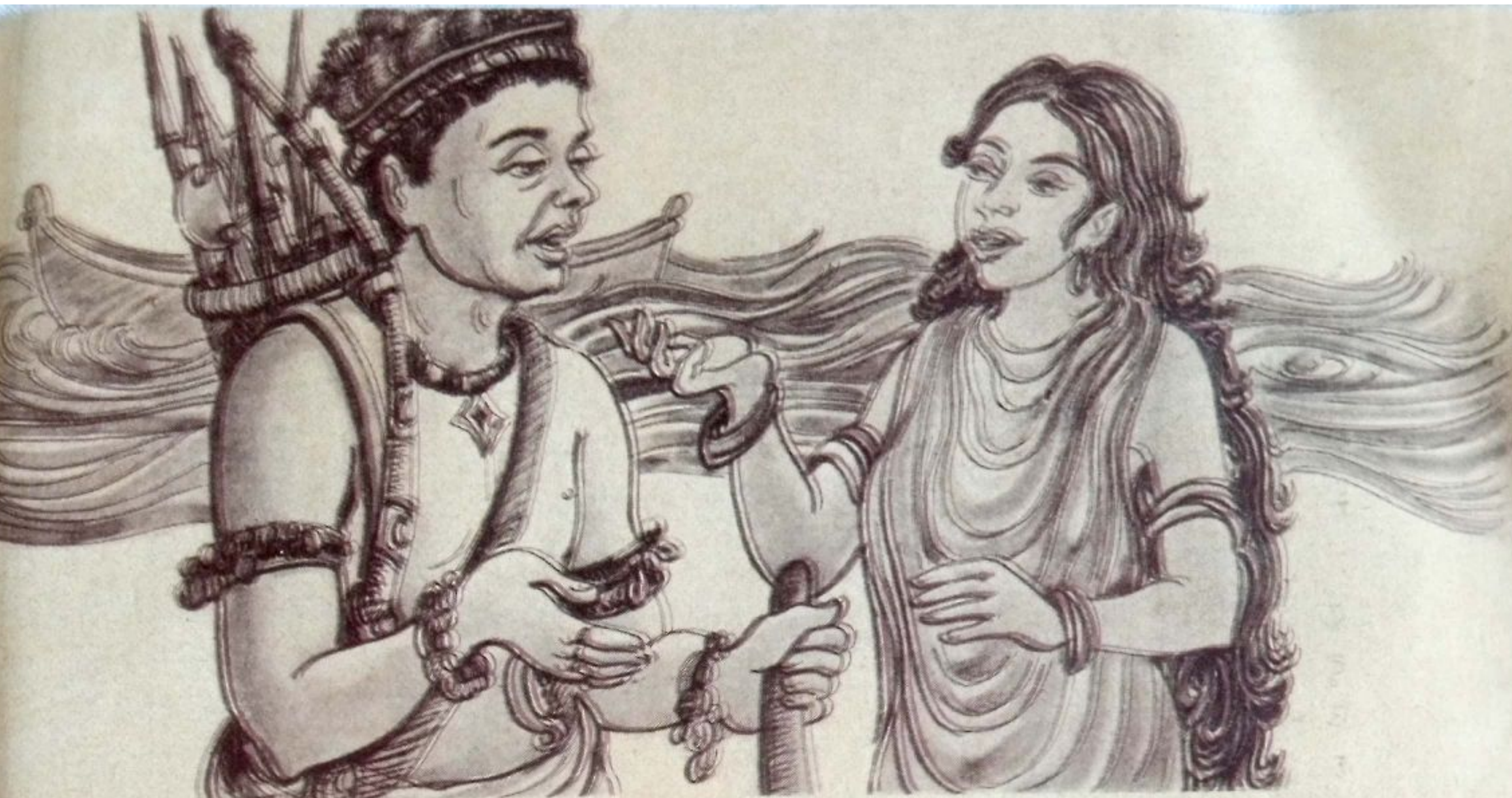
बादशाह एक दिन किले के काम को देखने आया। उसने कुछ मजदूरों को ऊंघते हुए पाया। पूरा किस्सा पता चलने पर बादशाह ने नया हुक्म दे दिया-'तेल बेचने वाले संत साहब को तेल न बेचें।' उसने सोचा, अंधेरे में मजदूर काम न कर पाएंगे और कुएं का काम बंद हो जाएगा।

मौके की बात, उसी दिन कुएं में एक सोता फूटा। तब संत साहब ने मजदूरों से कहा—"तुम हर रोज, रात को काम करने आते रहो। यह पानी ही तेल का काम करेगा।"

उन्होंने जैसा कहा था, वैसा ही हुआ। बादशाह के कानों तक यह किस्सा पहुंचा। उसने संत साहब को जादूगर समझा और हुक्म दे दिया कि उनका सिर कलम कर दो।

दूसरे दिन हजरत औलिया को इसका पता चला। उन्होंने गुस्से में बादशाह को शाप दिया—"तेरे ऊपर बिजली गिरे, किले में गूजर बसें।"

आसमान में काली-काली घटाएं घिर आईं। बिजली कड़कने लगी। बनते हुए किले पर बिजली टूटी और बादशाह की मृत्यु हो गई। इसके एक हिस्से में बहुत समय तक गूजर रहते थे। आज भी किला खंडहर हुआ पड़ा है। ●



खारे जल की देवी

—मनोजकुमार मिश्रा

एक समय फूजी स्वर्ग का महान शासक हुआ और उसके वंशजों में अपने महान कार्यों के कारण लिन जुन सबसे अधिक प्रसिद्ध हुआ। लिन जुन उसकी पदवी थी। वास्तव में उसका नाम वू जियांग था और वह झोंगली पर्वत पर रहने वाले 'बा' कबीले का सदस्य था। बुलुओ के दक्षिण में झोंगली पर्वत पर ही उसका जन्म हुआ और वह वहीं पला-बढ़ा। इस पर्वत पर फान, शेन, जियांग और झेंग नामक चार अन्य कबीले थे। इन चारों कबीलों के लोग काले रंग की गुफाओं में रहते थे। केवल 'बा' कबीले के लोग लाल रंग की गुफा में रहते थे।

ये पांचों कबीले अलग-अलग देवताओं की पूजा करते थे। इनका कोई सम्मिलित सरदार नहीं था। अतः नित्य छोटी-छोटी बातों पर आपसी संघर्ष चलता रहता था। धीरे-धीरे उनकी शक्ति कम होने लगी। उन्होंने महसूस किया कि यदि वे इसी भांति लड़ते रहे, तो एक दिन ऐसा आएगा, जब उनकी सारी जाति समाप्त हो जाएगी।

विभिन्न कबीलों के वृद्ध व्यक्तियों ने इस विषय पर विचार करने के लिए एक सभा बुलाई। सभा में कोई भी एक-दूसरे की अधीनता मानने को तैयार नहीं था। अतः अंत में यह निर्णय लिया गया कि सभी कबीले एक प्रतियोगिता के द्वारा अपना सरदार चुनेंगे। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए सभी कबीले अपना एक प्रतिनिधि चुन लें।

वृद्ध व्यक्तियों ने लौटकर अपने-अपने कबीले के लोगों को यह निर्णय सुनाया। सभी इससे सहमत थे। उन सबने अपना एक प्रतिनिधि चुन लिया, जिन्हें प्रतियोगिता में निश्चित तिथि को हिस्सा लेना था।

'बा' कबीले ने वू जियांग को अपने प्रतिनिधि के रूप में चुना। प्रतियोगिता के लिए निर्धारित तिथि को पांचों कबीलों के लोग सज-धजकर पर्वत के शिखर पर सजे भव्य मंडप के समीप एकत्र हुए।

सबसे पहले तलवार चलाने का खेल हुआ। इसमें सभी प्रतिनिधियों को एक-एक करके पर्वत के शिखर पर खड़े होकर छोटी तलवार को सामने की गुफा की चट्टान पर फेंकना था। इसमें यह तय किया गया कि जिसकी तलवार गुफा की चोटी की चट्टान से

टकराएगी और पत्थर में गड़ जाएगी, वही विजयी घोषित किया जाएगा। ऐसा ही हुआ। दूसरे प्रतिनिधियों की तलवारें बीच रास्ते में ही गिर पड़ीं, जबकि वू जियांग सफल हुआ। उसकी तलवार पत्थर में घुस गई और सीधी खड़ी हो गई।

अब नाव-दौड़ की बारी थी। प्रत्येक कबीले ने मिट्टी को पकाकर सुंदर नाव बनाई। इसमें शर्त थी, जिसकी नाव पानी में तैरती रहेगी, डूबेगी नहीं, वही विजयी घोषित किया जाएगा। पांचों कबीलों के लोग प्रसन्नता से शोर करते हुए नदी के किनारे एकत्र हुए। प्रतियोगियों ने अपनी नावें नदी में छोड़ दीं। सभी की नावें टूट गईं। केवल वू जियांग जिस नाव को चला रहा था, वह बिना किसी खतरे के आगे बढ़ती जा रही थी।

अब वू जियांग प्रतियोगिता जीत चुका था। पांचों कबीलों ने उसे अपना सरदार चुन लिया और उसे 'लिन जुन' की पदवी देकर सम्मानित किया।

लिन जुन के नेतृत्व में सभी कबीलों ने समृद्धि प्राप्त की, परंतु जनसंख्या के बढ़ने से उनकी गुफाओं में बहुत भीड़-भाड़ हो गई। अब जानवर और जंगली पौधे उन्हें भोजन के लिए कम पड़ने लगे। अतः लिन जुन ने लोगों को कहीं और नए घर की तलाश में ले जाने का विचार किया।

लिन जुन ने मिट्टी से बनी अपनी सुसज्जित जादुई नाव ली, जबकि अन्य लोग लकड़ी की नावों में उसके पीछे आ रहे थे। उन्होंने नदी से ही अपने नए घर की खोज प्रारम्भ की। वे सभी पानी में साथ-साथ बहे चले जा रहे थे। कुछ दिनों में वे यांयांग पहुंच गए, जहां से खारा पानी बहता था।

यांयांग पहुंचकर उन्होंने वहां अपने लंगर डाल दिए। पुनः यात्रा प्रारम्भ करने से पहले वहां कुछ विश्राम करने के लिए रुके।

वहां खारे पानी में एक सुंदर देवी रहती थी। उसने लिन जुन की ख्याति सुन रखी थी और उसे मन ही मन चाहने लगी थी। वह उससे स्वयं कहने आई—''हमारे यहां भरपूर मछलियां और नमक है, जो आप सब लोगों के लिए काफी हैं। अतः आप लोग यहीं रहें और आगे न जाएं।''

लिन जुन भी कम चतुर नहीं था। वहां उसे उतनी मछलियां और नमक नहीं दिखाई दिया, जितना कि देवी ने कहा था। उसके आदमियों को यहां भी कष्ट होता, क्योंकि यह उनके रहने के लिए आदर्श स्थान नहीं था। अतः उसने देवी के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया।

देवी को तो यह आशा थी कि वह उसे छल से रोककर अपने प्रेम का विश्वास दिला देगी, परन्तु लिन जुन नहीं माना। लिन जुन अचानक कहीं चला न जाए, इस डर से वह स्वयं रात को उसी के तम्बू में चोरी-छिपे सो गई। दिन निकलने पर वह तम्बू से निकली। उसने अपने को एक छोटे से कीड़े के रूप में बदल लिया और हवा में उड़ने लगी। उस स्थान के यक्ष और देवता भी देवी की सहायता के लिए आए। उन्होंने भी अपने को छोटे कीड़ों के रूप में बदल लिया और हवा में नृत्य करने लगे। इन छोटे कीड़ों का झुंड इतना घना था कि इन्होंने सूर्य के प्रकाश को भी रोक दिया। सम्पूर्ण विश्व अंधकारमय हो गया।



जैसे ही लिन जुन और उसके कबीले के लोग आगे बढ़े, कीड़ों के उस शक्तिशाली दल ने उन्हें घेर लिया। वे असहाय हो गए। सात दिन और सात रातें समाप्त होने जा रही थीं, पर किसी भी व्यक्ति को दिशा का ज्ञान नहीं हो पा रहा था। सभी दिशाएं एक समान ही नजर आती थीं।

लिन जुन समझ गया कि खारे पानी की देवी स्वयं कीड़े के रूप में इन कीड़ों का नेतृत्व कर रही है, परंतु इस झुंड में उसे पहचानना कठिन था। अतः लिन जुन ने एक रास्ता निकाला। उसने एक व्यक्ति को बुलाकर देवी के पास संदेश के साथ एक हरे रेशम का धागा भिजवाया।

उसने कहा—"उससे कहना, लिन जुन ने यह रेशमी धागा उपहार के रूप में भेजा है। उसे वह गले में पहन ले और किसी अवस्था में भी न उतारे। मैं अब सदा के लिए यहीं रहूंगा।"

देवी को इस छल का पता नहीं था, उसने तुरंत उस रेशमी धागे को अपने गले में पहन लिया। अब वह उन छोटे कीड़ों की भीड़ में भी पहचानी जा सकती थी।

अब लिन जुन उस चट्टान पर पहुंचा, जहां लोग वर्षा के लिए सूर्य से प्रार्थना कर रहे थे। वहां उसने अपने धनुष पर एक तीर चढ़ाकर छोड़ दिया। तुरंत देवी की सुंदर आकृति प्रकट हुई। वह आंखें बंद किए हुए खारे पानी की सतह पर मूर्च्छित पड़ी थी। बाद में लहरें उसे बहाकर पूर्व की ओर ले गईं। जहां धीरे-धीरे वह नदी में समा गई। पलक झपकते ही सभी छोटे कीड़े नष्ट हो गए। आनंद से भरे लोग नृत्य करने लगे, परंतु उस आनंदपूर्ण वातावरण में लिन जुन अभी भी पत्थर पर स्थिर खड़ा था। वह उदास होकर ऊंची लहरों को देर तक घूरता रहा। उसके कांपते हाथों से धनुष और बाण छूट गए।

एक बार फिर लिन जुन ने अपने लोगों को साथ लेकर यांयांग से यात्रा प्रारम्भ की। रास्ते में संगीत और नगाड़े की ध्वनि से पृथ्वी हिल उठी, क्योंकि वे अपना विजय उत्सव मना रहे थे। परंतु लिन जुन प्रसन्नता का



मात्र बहाना भर कर रहा था। उसका हृदय अभी भी खारे जल की देवी की यादों में डूबा था।

सभी नावें नदी की धारा में बही जा रही थीं। चलते-चलते वे एक वैभवपूर्ण द्वीप पर पहुंचे, जहां गहरी घाटियां, टेढ़े-मेढ़े झरने तथा ऊंचे-ऊंचे पेड़ थे, परंतु उस स्थान पर किसी लम्बी गुफा की भांति अंधकार था। यहां आकर वे अत्यधिक प्रसन्न हुए। यहां तक कि लिन जुन भी अपने को गाने से नहीं रोक सका।

तभी उनके पीछे का पत्थर अचानक फट गया। वहां चौड़ी-चौड़ी सीढ़ियां नजर आने लगीं। यहां खूब प्रकाश था। चिड़ियों के झुंड नदी के ऊपर उड़ते हुए दिखाई दे रहे थे।

यह सब बड़ा आश्चर्यजनक था। यहां तक लिन जुन भी इसे देखकर अत्यंत चकित हुआ। अपने होश को संभालकर वह अपने लोगों के साथ सीढ़ियां उतरने लगा। सभी को उत्सुकता थी कि देखें, आगे क्या है?

आगे बढ़कर उन्होंने घास, ऊंचे पेड़ों और सुंदर फूलों से भरा एक विशाल मैदान देखा। सभी प्रकार के छोटे पक्षी और पशु घास और पेड़ों के बीच उछल-कूद करते हुए खेल रहे थे। लिन जुन समझ गया कि उनके रहने के लिए यह आदर्श स्थान है। वहीं पर लिन जुन के नेतृत्व में लोगों ने 'यी' नामक एक सुंदर नगर का निर्माण किया। उनके बच्चे पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ते रहे और वे दक्षिण-पश्चिम चीन में 'बा' कबीले के रूप में काफी शक्तिशाली बन गए।●

बिल्ली और बुलबुल

बिल्ली बुलबुल पर झपटी। अपने पंजों से उसे जमीन पर गिराते हुए बोली— "सुनते हैं तुम बड़ी गायिका हो। लोग तुम्हारे गले की बड़ी तारीफ करते हैं। सुनाओ तो एक गाना ! इस कदर कांप क्यों रही हो ? मैं सचमुच तुम्हारा गाना सुनना चाहती हूं। तुम्हें खाने का मेरा कोई इरादा नहीं है। अगर अपने गाने से मुझे खुश कर सको, तो मैं तुम्हें आजाद कर दूंगी।"

डरी हुई बुलबुल ने गाने की बहुत कोशिश की, मगर उसके गले से बेसुरी घर्राहट के सिवा कुछ नहीं निकला।

"क्या ! इसे तुम संगीत कहती हो !"— बिल्ली ने कहा— "यही तुम्हारा गाना है ? इसमें सुर कहां है ? राग कहां है ? ताल कहां है ? इससे अधिक सुरीला तो मेरे बच्चों का रोना है। अब यह तो तय हो गया कि तुम गा नहीं सकतीं।"

कहकर बिल्ली बुलबुल को खा गई।

बोली मछली

नदी के किनारे कोई उत्सव था। खूब आतिशबाजी हुई। नदी की सब मछलियां इससे बहुत डर गईं। उन्होंने सोचा— 'प्रलयकाल आ गया है। अब हमें अपने पापों का पछतावा करना चाहिए।'

बड़ी मछली बोली— "हम बड़ी निर्दयता से एक-दूसरे को खा डालती हैं न, उसी का यह दंड भगवान ने दिया है।" वह प्रार्थना करने लगी— 'हे भगवान, हमारे पाप क्षमा करो। हमारी बिरादरी को बचाओ। अगर यह अग्निवर्षा रुक गई, तो मैं कभी अपनी बिरादरी की किसी मछली को नहीं खाऊंगी।'

बड़ी मछली की प्रार्थना चल ही रही थी कि उत्सव समाप्त हो गया। आतिशबाजी बंद हो गई। भय मिटा। भूख जाग उठी। प्रायश्चित करती मछली ने लपककर दूसरी मछली को निगल लिया।

बाप-बेटा

एक लकड़हारा था। वह रोज जंगल में जाकर लकड़ियां काटता और शहर में बेचकर चांदी के सिक्के ले आता। जब कई चांदी के सिक्के जमा हो जाते, तब उनके बदले सोने के सिक्के ले आता। उसे पैसों के सिवाय किसी चीज की चिंता नहीं थी।

जब उसका बेटा जवान हो गया, तब वह उसे भी जंगल में साथ ले जाने लगा।

एक दिन बाप-बेटा जंगल में जा रहे थे। तभी एक बाघ लकड़हारे पर झपटा और उसे मुंह में दबाकर घसीटता हुआ ले जाने लगा। उसकी जान खतरे में देख, बेटा कुल्हाड़ी उठाकर उसे बचाने के लिए दौड़ा।

लकड़हारा खास घायल नहीं हुआ था। ज्यों ही बेटे ने बाघ पर वार करने के लिए कुल्हाड़ी उठाई, लकड़हारा बोल उठा— "न-न, इस तरह तो बाघ की खाल फट जाएगी ! अगर खाल में छेद किए बिना तुम बाघ को मार सके, तो बाजार में उसकी अच्छी कीमत मिल जाएगी।"

बेटा बाप की बात सुन ही रहा था कि बाघ लकड़हारे को लेकर घने जंगल में घुस गया। फिर कभी बेटे को बाप के दर्शन नहीं हुए।

शौकीन शिकारी

शिकारी शेर के पंजों के निशानों का पीछा करता-करता घने जंगल में पहुंचा। वहां एक लकड़हारा लकड़ियां काट रहा था। उसने शिकारी से कहा— "आप बड़े खुशकिस्मत हैं। शेर यहां से बहुत दूर नहीं है। अगर आप चाहें, तो मैं आधे घंटे से भी कम समय में उसे दिखा सकता हूं।"

यह सुनना था कि शिकारी कांपने लगा। घबराते हुए बोला— "नहीं-नहीं, शेर देखने में मुझे कोई दिलचस्पी नहीं। मैं तो शेर के पंजों के निशान देखने का ही शौकीन हूं।"

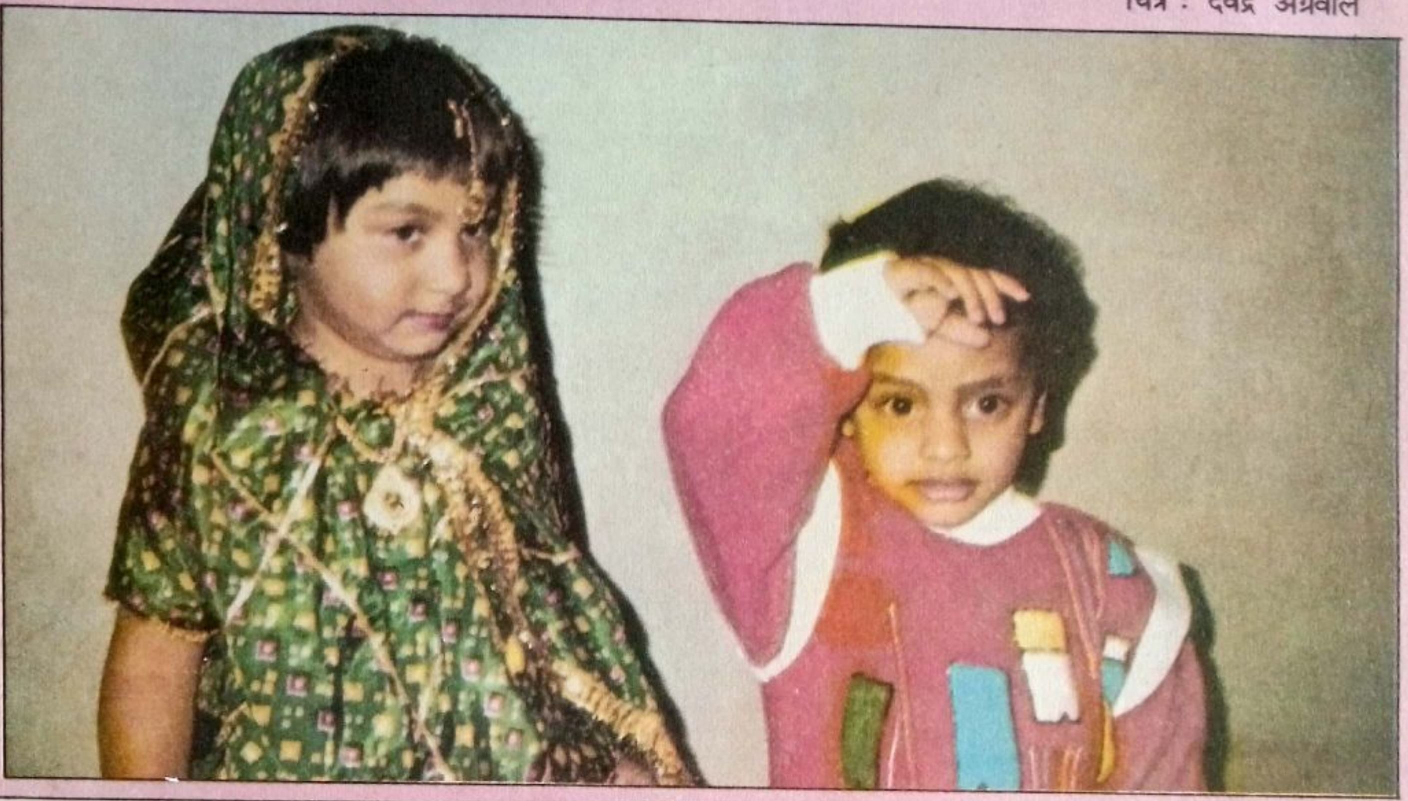

चीटू-नीटू
अहा, कितने सुंदर फूल खिले हैं, काश हमारे घर में भी बसंत...
क्यों नहीं, घर को झाड़-पोंछ कर फूलों से सजाने से...
ये फूल तो मुरझा जाते हैं, क्यों न कागज या कपड़े के फूलों...
... मेरी इस फ्रॉक से फूल और पत्तियां इस कमीज से
यह पुराना छाता कमरे की शोभा बिगाड़ रहा है, क्यों न इसे बाहर...
नहीं, इसमें छेद करके फूल टांक देते हैं, सुंदर पेड़ बन जाएगा
इस जग के हैंडल को तोड़ दें, तो गुलदस्ता..
मम्मी की पीले फूलों वाली साड़ी, इसके पर्दे... देखो बसंत...
मैं चली, बसंत नहीं, मम्मी हैं
मम्मी ने सारा सामान छीन लिया और मुझे घोंघा बसंत कहने लगीं
शायद मम्मी को बसंत से ज्यादा यह घोंघा बसंत अच्छा लगता है

शीर्षक बताइए

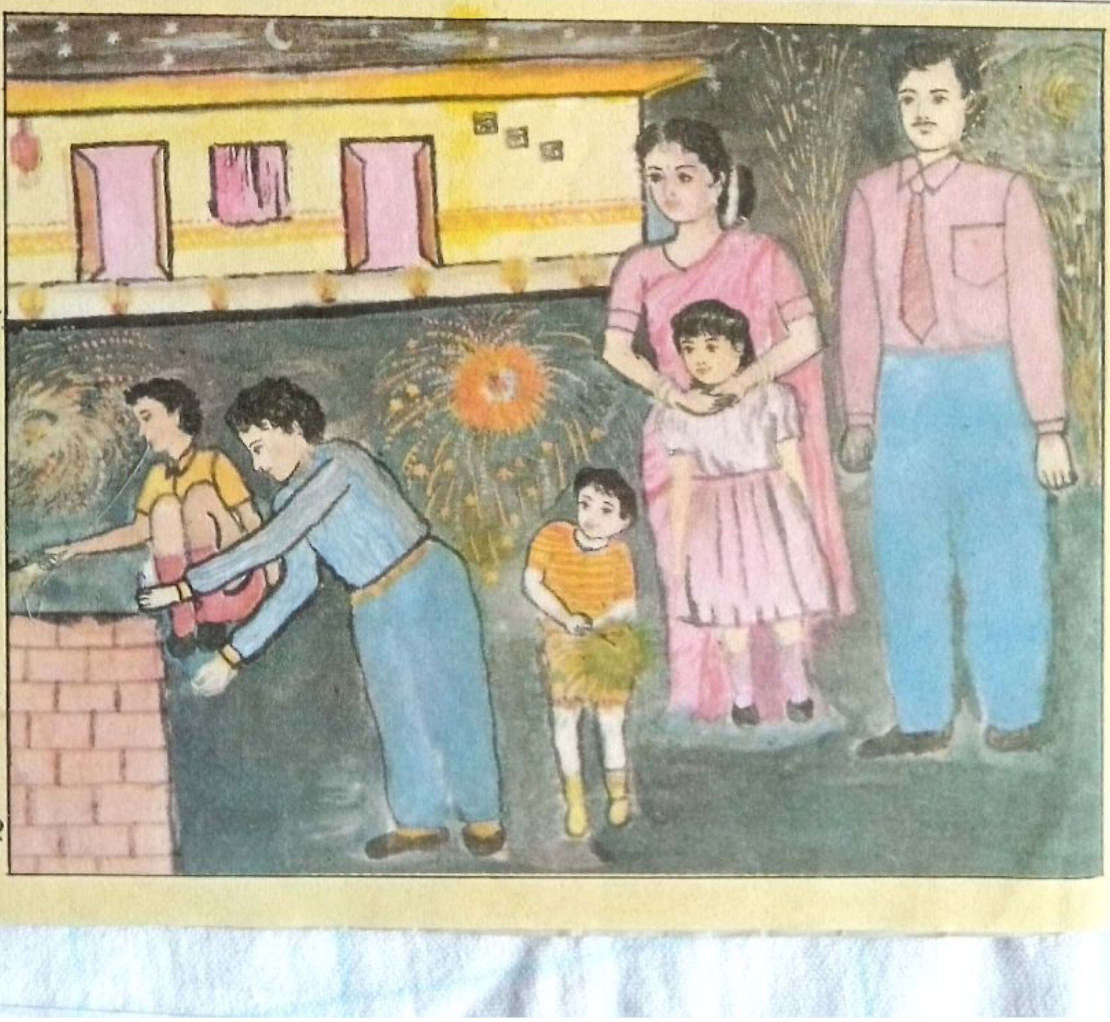
इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई छोटा-सा सुंदर शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ फरवरी '९५ तक **शीर्षक बताइए**, नंदन, मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली – ११०००१ के पते पर भेज दीजिए। चुने गए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : अप्रैल '९५ अंक

चित्र : देवेंद्र अग्रवाल



पुरस्कृत चित्र



रवीशकुमार शर्मा (१३ वर्ष) द्वारा श्री प्रभाशंकर शर्मा, ग्राम—हसन गंज, डाक—साफियाबाद, जिला—मुंगेर (बिहार)

इन के चित्र भी पसंद आए—

सूचना, नई दिल्ली; मासुद हासन चौधरी, मालदा (पं. बंगाल); अंकित रस्तोगी, कानपुर (उ. प्र.); मिथलेश कुमार पाण्डेय, हावड़ा (पं. बंगाल)

Scanned with CamScanner

बाल सभा


टिम्सी


अमित कुमार


प्रियंका अग्रवाल


सोना शर्मा


प्रेम प्रकाश

पत्र मिला

□ दिसम्बर अंक में 'आया पानी', 'हार की जीत', 'चार बहनें', 'सात भाई', 'चलाओ हल' कहानियां अच्छी लगीं। चित्र-कथाएं और कविताएं भी मजेदार थीं। 'नंदन' बच्चों की उत्तम पत्रिका है।

—राजू बादल दास, गुवाहाटी (असम)

□ इस अंक में 'कुतुबमीनार' का चित्र अच्छा लगा। 'भारत के वैज्ञानिक', 'देवलोक का पंछी', 'तेनालीराम' और 'ज्ञान-पहेली' भी अच्छे लगे।

—दिनेशकुमार चौधरी, खुरई (म. प्र.)

□ नए अंक में 'भालू की पोशाक', 'खेल', 'झूठ का सच' कहानियां अच्छी लगीं। भारतीय वैज्ञानिकों के रंगीन चित्र भी संग्रह करने लायक थे।

—भैरूंलाल के. जैन, फेदाणी (राज.)

□ ताजा अंक मिला, तो मन प्रसन्न हो गया। 'तेनालीराम', 'चीटू-नीटू' और भारत के आठ वैज्ञानिकों के चित्र बहुत अच्छे लगे। 'चित्र-कथाएं', 'लो मैं आया', 'देवलोक का पंछी' भी मजेदार लगीं।

—श्यामसुंदर जोशी, कुमालेश्वर, अल्मोड़ा (उ. प्र.)

□ दिसम्बर '९४ का अंक बहुत अच्छा लगा। 'तुम भी गाओ', 'हार की जीत', 'मोम के पंख', 'भगवान का घर', 'झूठ का सच', 'बोलो किसका', 'चार बहनें', व 'पुरस्कृत-कथाएं' दिलचस्प लगीं।

—नीरज जैन, शाहदरा (दिल्ली)

□ 'नंदन' पत्रिका आदर्श ज्ञान का भंडार है। दिसम्बर अंक में कुतुबमीनार का चित्र देखकर प्रसन्नता हुई। 'भारत के वैज्ञानिक', 'चीटू-नीटू', 'तेनालीराम' और 'चटपट' बहुत अच्छे लगे।

—राहुलकुमार बरनवाल, नेचुआ जलालपुर (बि.)

□ इस अंक की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। 'असली जीत', 'चीटू-नीटू', अच्छे लगे। मुझे हर अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है।

—जगदेवसिंह पंवार, ईंडरी, गुड़गांव (हरि.)

□ दिसम्बर '९४ अंक के सभी स्थायी स्तम्भ तथा कहानियां अत्यंत ही रोचक और शिक्षाप्रद थीं। 'हुए सुखी सब', 'वर का ताप', 'हार की जीत' तथा 'भगवान का घर' कहानियां विशेष पसंद आईं।

—हेमलता मोदी, कटक (उड़ीसा)

□ 'नंदन' पत्रिका की मैं नई पाठिका हूं। ताजा अंक पहली बार पढ़ा तो मन खुशी से झूम उठा। सभी कहानियां व 'चीटू-नीटू' एक से बढ़कर एक थे। कविताएं भी अच्छी लगीं।

—कंचन जेदिया, मल्कागंज, दिल्ली

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : गिरीश सिंघल, बयाना, भरतपुर; कोमल चंद्रा, वाराणसी (उ. प्र.); पंकजकुमार, अरेराजधाम (बि.)।

आगामी अंक

मौज-मस्ती के मौसम में मनमोहक अंक—

- **तितली के पंखों-सा सुंदर देश—फ्रांस दो पृष्ठों में वहां की सैर रस-रंग भरी**
- दो बहनें, एक भाई। चले घर बनाने की जगह तलाश करने। घने जंगलों, दुर्गम पहाड़ियों और खूंख्वार आदिवासी कबीलों के बीच। रहस्य-रोमांच से भरा हिंदी संक्षेप—मरियम टोल्स की अनोखी रचना— एडवेंचर्स इन अपाचीलैंड 'विश्व की महान कृतियां में'।
- **एलबम में—कांचीपुरम का आकाश छूता प्राचीन मंदिर**
- अपना देश प्रतियोगिता : किस-किस को पुरस्कार मिले

नई पुस्तकें

माधवी-कन्नगी-लेखिका : चित्रा मुद्गल; प्रकाशक : किताबघर, २४ अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२; मूल्य : २५ रुपए।

तमिल भाषा का महाकाव्य है— शिलप्पधिकारम्। इसके रचयिता थे एक जैन साधु, इलंगो अडिगल। इसी महाकाव्य को आधार बनाकर चित्रा मुद्गल ने बच्चों के लिए माधवी-कन्नगी उपन्यास लिखा है। कोवलन, उसकी पत्नी कन्नगी और नर्तकी माधवी के इर्द-गिर्द ही पूरे उपन्यास की कथा घूमती है। कथा बहुत रोचक है। बच्चे इस पुस्तक को पसंद करेंगे।

बोलते हंस— लेखक : ताराचंद वर्मा; प्रकाशक : वानर प्रकाशन, १५२ चौड़ा रास्ता, जयपुर; मूल्य : १० रुपए।

छह रोचक कहानियां पुस्तक में हैं— बोलते हंस, खिलखिल राम, गुलपरी, भाई-भाई का झगड़ा, बंसी पंडित और भाग गया भूत। लम्बी कहानी गुलपरी खास तौर से बच्चे पसंद करेंगे।

विजय की ओर— लेखक : ताराचंद वर्मा; प्रकाशक : चिन्मय प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर; मूल्य : १० रुपए।

पुस्तक में पांच कहानियां हैं। भरत, राम, हनुमान, मीरा से जुड़ी प्रेरक कथाएं हैं। 'विजय की ओर' जातक-कथा है। चरित्र-निर्माण की ये कथाएं दिलचस्प हैं। भाषा सरल है। चित्र बढ़िया होते तो अच्छा होता।

सात समंदर पार से— लेखक : विनोद शर्मा; प्रकाशक : पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी, ईस्ट पार्क रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-५; मूल्य : १२ रुपए ७५ पैसे।

सात देशों की आठ कहानियां लेखक ने लिखी हैं। इनमें बल्गारिया, पुर्तगाल, यूगोस्लाविया, रूमानिया जैसे देशों की कथाएं भी हैं, जो हिंदी में बहुत कम पढ़ने को मिलती हैं। एक बार पुस्तक पढ़नी शुरू कर दें तो छोड़ने का मन नहीं होता। सुंदर चित्र हैं, छपाई भी अच्छी है।

बादशाह और फकीर, एकता का फल— दोनों पुस्तकों के लेखक : डा. रामलाल वर्मा; प्रकाशक : अनिल प्रकाशन, न्यू मार्किट, नई सड़क, दिल्ली-६; मूल्य : १० रुपए (प्रत्येक)।

दोनों पुस्तकों में छोटी-छोटी कहानियां हैं। कहानियां ऐसी हैं जिन्हें बच्चे खुश होकर पढ़ेंगे। उन्हें पढ़कर भी सुना सकते हैं तो वे रुचि से सुनेंगे। इनसे उन्हें कुछ शिक्षा भी मिलेगी। कई कहानियां कहावतों से जुड़ी हुई हैं। हर पुस्तक में चित्र भी दिए गए हैं।

अजब-अनोखी दुनिया



नन्हे-मुन्ने समुद्री घोड़े : क्या समुद्र में भी घोड़े मिलते हैं ? वैज्ञानिकों ने बहुत पहले ही घोड़े के मुंह वाले नन्हे जीव खोज लिए थे । उनका नाम है—हिप्पोकेम्पस । समुद्रों में उनकी ३५ प्रजातियां मिलती हैं । सबसे छोटा समुद्री घोड़ा केवल दो इंच का होता है । बड़े-से-बड़े समुद्री घोड़े की लंबाई १४ इंच मापी गई है ।

समुद्री घोड़े गिरगिटों की तरह रंग बदल सकते हैं । सफेद, पीला, लाल, हरा या नारंगी, जैसा चाहें वैसा रंग हो जाता है । यह कला उन्हें दुश्मनों से बचाती है । समुद्री घोड़े की दोनों आंखें अलग-अलग काम करती हैं । एक आंख भोजन पर तो दूसरी दुश्मन के हमले पर । समुद्री घोड़े में अंडे सेने का काम नर करता है, मादा नहीं । इस काम के लिए नर के पेट में एक थैली होती है । अंडे उसी में होते हैं । आजकल समुद्री घोड़ों का शिकार खूब हो रहा है । उन्हें बचाने की जरूरत है ।

नया मूल तत्व : कहते हैं दुनिया की हर चीज कुछ मूल कणों से मिलकर बनती है । मूल कण यानी जिनमें किसी और चीज की मिलावट न हो । कुछ साल पहले तक मूल कणों की संख्या सौ से कुछ ऊपर थी । बाद में उनकी संख्या बढ़कर १०९ हो गई । अब जर्मनी के वैज्ञानिकों ने एक और मूल कण खोज निकाला है । इसका नाम रखा है—एलीमेंट-११० ।

जर्मनी की एक प्रयोगशाला में सीसे (लेड) के अरबों परमाणुओं पर निकिल के परमाणुओं की बौछार की गई । उनकी मार से नए परमाणु का जन्म हुआ । यह परमाणु केवल एक सेकंड के हजारवें हिस्से के बराबर समय तक बना रहा, बाद में टूट गया । वैज्ञानिकों का मानना है कि इससे हमें यह समझने में मदद मिलेगी कि दुनिया किन तत्वों से मिलकर बनी है ।

कंप्यूटर से अनुवाद : कंप्यूटर अब अनुवाद भी करने लगे हैं।अंग्रेजी में टाइप करो और हिंदी में टाइप की हुई प्रति प्राप्त करो । भारतीय रेलवे ने अंग्रेजी से अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद के लिए एक कंप्यूटर प्रणाली बनाई है। इसका नाम है—'लिप्यांतरण ।' कंप्यूटर प्रणाली का उपयोग यात्री आरक्षण, टेलीफोन निर्देशिका और विभिन्न नामों के रूपांतरण में आसानी से हो सकता है ।

बाल के बराबर मोटाई की नन्ही मशीनें :

बिजली की मोटर देखी है ? हमारे घर की छतों में लटके पंखे बिजली की मोटर से चलते हैं । सिंचाई पम्प, आटा चक्की और कई मशीनें बिजली की मोटर से ही चलती हैं । अब वैज्ञानिकों ने हमारे बाल की बराबर मोटाई की मशीनें बनाई हैं । ये मशीनें बड़ी चमत्कारी सिद्ध हो रही हैं ।

डाक्टरों ने इन मशीनों को दवा की गोलियों में बंद कर दिया है । निगलने के बाद ये नन्ही मशीनें पेट के भीतर के हाल-चाल का पता लगाती हैं । रोगी को बांधे गए एक बेल्ट में 'रिसीवर' लगा होता है । डाक्टर उसी से सभी सूचनाएं प्राप्त करते हैं । उम्मीद है कि जल्दी ही 'माइक्रो संवेदी' घड़ियां बाजार में मिलने लगेंगी जो दिल की धड़कन, रक्तचाप और तापमान के बारे में बता सकेंगी । हाल ही में एक अमरीकी कम्पनी ने इन नन्ही मशीनों की मदद से एक 'कागजी एयरकंडीशनर' बनाया है । इसे दीवार पर चिपका देने से कमरे के तापक्रम पर नियंत्रण रखा जा सकता है । जब चाहो गर्मी और जब चाहो सर्दी । है न कमाल की मशीन ।

—बृजमोहन गुप्त

हर दिन एक

—जसविंदर शर्मा

गांव में एक निर्धन किसान रहता था। नाम था, मोतीराम। खेती के लिए उसके पास जमीन का एक ही टुकड़ा था। उसका परिवार बहुत बड़ा था, इसलिए हर समय उसे खाने के लाले पड़े रहते। फसल की बुआई के पश्चात मोतीराम मजदूरी किया करता था। बेचारा किसी तरह अपने बाल-बच्चों का पालन-पोषण कर रहा था।

एक शाम वह मकई की गुड़ाई कर रहा था, तो अचानक उसके खुरपे के साथ किसी चीज के टकराने की आवाज आई। मोतीराम ने सोचा शायद पत्थर है, लेकिन थोड़ा खोदने पर उसने देखा, एक बड़ा-सा बरतन मिट्टी में दबा पड़ा है। मिट्टी हटाते हुए बरतन का ढक्कन उठाया, तो उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं। उसके अंदर बहुमूल्य सोने के सिक्के ही सिक्के थे। तभी उसने आसपास डरते हुए दृष्टि डाली। दूर-दूर तक कोई नहीं था। झट से ढक्कन बंद करके पूरे बरतन को मिट्टी से ढक दिया।

मोतीराम ने सोचा कि वह गरीब है। अगर सारे खजाने को घर ले जाएगा, तो राजा के सिपाही उसे पकड़कर ले जाएंगे क्योंकि देर-सवेर उसके धनी होने की खबर पूरे नगर में फैल जाएगी। स्वयं उसकी पत्नी ही उसका भांडा फोड़ देगी। उसके पेट में तो कोई बात कभी पचती ही नहीं।

ऐसे में मोतीराम को अपने बचपन के दोस्त साधुराम की याद आई। उसने सोचा कि साधुराम का व्यापार अच्छा है। राजा के सिपाहियों का शक भी उस पर नहीं जाएगा। साधुराम को आधी दौलत देकर, वह थोड़ी-थोड़ी दौलत रोज घर ले जाया करेगा। इस तरह धीरे-धीरे वह भी अमीर हो जाएगा। इस पूरी योजना में उसे कोई जोखिम नहीं दिखाई दिया। थोड़ा अंधेरा होने के बाद वह खेत से साधुराम के घर की ओर चला गया, ताकि किसी को शक न हो।

शैतान का दूत यह सारा दृश्य देख रहा था। उसने सोचा कि अचानक इतना सारा धन मिलने पर भी मोतीराम को जरा लालच नहीं हुआ। उलटे वह आधा हिस्सा साधुराम को दे देना चाहता है। ऐसे ईमानदार लोगों के होते, हमारा कारोबार तो चौपट हो जाएगा। किसी तरह मोतीराम का ईमान डिगा दूं या दोस्ती से विश्वास हटा दूं, तो अच्छा रहे।

साधुराम अपनी बात तथा ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध था। मोतीराम ने एकांत में ले जाकर उसको सारी बात बताई। साधुराम पहले तो राजी न हुआ। फिर बोला—"दोस्त, उस खजाने पर तुम्हारा अधिकार है। मैं कोई हिस्सा नहीं लूंगा।" लेकिन मोतीराम ने अपनी दोस्ती तथा गरीबी की दुहाई देकर उसे राजी कर लिया। दोनों में तय हुआ कि खजाना साधुराम के पास बतौर अमानत रहेगा। मोतीराम रोज एक सोने का सिक्का ले जाया करेगा। दोनों दोस्तों ने मिलकर सिक्कों से भरा हुआ वह बरतन, घर के अंदर सुरक्षित स्थान पर रख दिया।

इस प्रकार मोतीराम रोज एक सोने का सिक्का ले जाता। अब उसके दिन फिरने लगे। उसने काफी जमीन खरीद ली। पत्नी से वह झूठ कहता कि कोई दानी सेठ उसे यह सिक्का दान में देता है। फिर धीरे-धीरे पत्नी ने भी पूछना बंद कर दिया।

एक बार मोतीराम बीमार पड़ गया। वह साधुराम के पास सोने का सिक्का लेने न जा पाया। अगले दिन,



जब वह अपने दोस्त के घर पहुंचा तो साधुराम ने उसे सिक्के देने चाहे, मगर मोतीराम ने सिर्फ एक सिक्का लिया। यह सब देखकर तो शैतान के दूत के तन-बदन में आग लग गई। उसने उसी क्षण सोचा—'बस, और नहीं सहा जाता। अब कुछ करना ही पड़ेगा।'

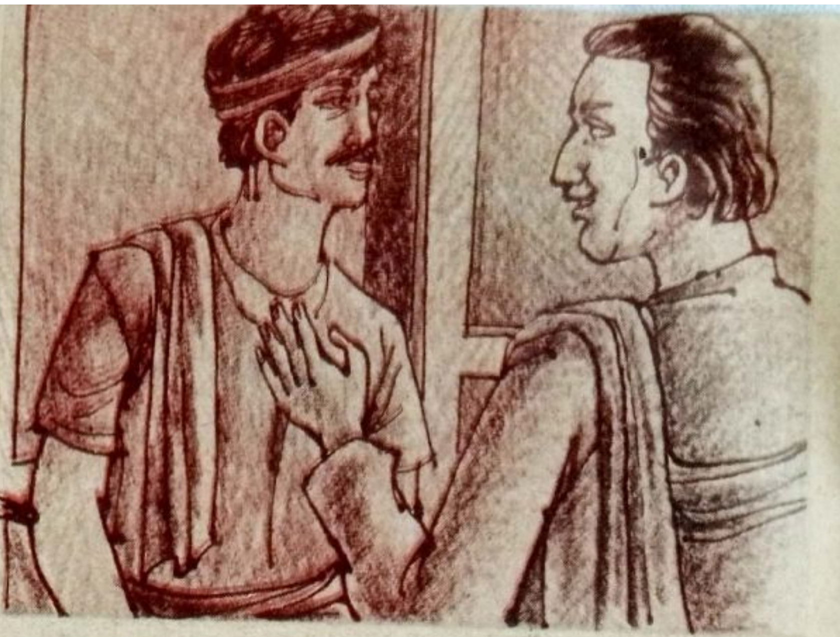
अगले दिन जैसे ही मोतीराम घर से बाहर निकला। शैतान के दूत ने एक भारी-सा पत्थर उसकी पीठ पर दे मारा। मोतीराम लहूलुहान हो गया। दवा करवाने में काफी पैसा खर्च हो गया। सोने के सिक्के का राज भी वह किसी को नहीं बता सकता था। मोतीराम अजीब परेशानी में था। घर में पैसों की जरूरत थी। पत्नी ने पूछा—"वह दानी सेठ कहां रहता है ? क्या नाम है ? बड़े लड़के को भेजकर सिक्का क्यों नहीं मंगवा लेते।"

मजबूर होकर मोतीराम ने उत्तर दिया—"वहां मैं खुद ही जाऊंगा। तुम ऐसा करो कि बड़े लड़के को मेरे दोस्त साधुराम के पास भेज दो। वह कुछ पैसों का इंतजाम कर देगा।"

बड़ा लड़का जब साधुराम के घर से वापस आया तो उसके हाथ में दस सिक्के थे। उतने ही, जितने दिन मोतीराम सिक्के लेने नहीं गया था। मोतीराम की पत्नी का माथा ठनका। 'कहीं कुछ छिपी हुई बात जरूर है।'—उसने सोचा।

अगले दिन ज्योंही उसका लड़का खेतों की तरफ जाने लगा, मोतीराम की पत्नी ने उसे बुलाकर कहा—"बेटा, आज फिर साधुराम जी के घर जा। सोने के दस सिक्के और ले आ। कह देना पिता जी की बीमारी पर कुछ अधिक ही खर्चा आ गया है।" मां ने जैसा कहा था, लड़के ने वैसा ही किया।

उसकी बात सुनकर साधुराम ने सोचा—'उसका मित्र इस समय विपत्ति में है।' इसलिए उसने लड़के को दस सिक्के दे दिए। अगले दिन बीस। फिर तीस, पचास, सौ करते-करते मोतीराम की पत्नी ने काफी दौलत जमा कर ली। शैतान का दूत अपनी विजय पर मन ही मन बहुत खुश हो रहा था।



लगभग एक महीने बाद, ठीक-ठाक होकर मोतीराम साधुराम के घर गया। उसे देखकर वह बहुत खुश हुआ। हालचाल पूछा। कहा—"मैं स्वयं तुम्हें देखने आता दोस्त। लेकिन मुझे कारोबार से ही फुर्सत नहीं मिली। फिर तुम्हारा बड़ा लड़का रोज सुबह आ जाता था, उसीसे हाल-चाल पता चल जाते थे।"

मोतीराम का माथा ठनका। वह समझ गया कि जरूर इसमें उसकी पत्नी की चाल है। साधुराम ने उसे सारी बातें कह सुनाईं। कहा कि बड़ा लड़का रोज ढेरों सिक्के ले जाता था। अब तो ताम्बे का खाली बर्तन ही बचा है।

शैतान का दूत खुश हो रहा था कि बस अभी कुछ देर में उसकी अंतिम विजय होने वाली है। मोतीराम अजीब पसोपेश में था। दोस्त उसे सच्चा प्रतीत हो रहा था। उसने उसकी आंखों में निष्कपट प्रेम देखा तो माफी मांगते हुए बोला—"दोस्त, मैं अपना एक-एक सिक्का लेकर जाने का वायदा पूरा न कर सका। माफ करना। मैं अस्वस्थ था। इसका गलत फायदा मेरे घर वालों ने उठाया है, लेकिन हमारी दोस्ती में विश्वास तथा ईमानदारी है। वह इन सब बातों से ऊपर है।"

दोनों गले मिले—उनकी आंखों से आंसू बहने लगे। शैतान के दूत का कलेजा भी पसीजने लगा। मगर अगले ही क्षण अपने मालिक शैतान का स्मरण कर, वह दुम दबाकर ऐसा भागा कि फिर कभी लौटकर नहीं आया। ●

तीन मित्र

राजू, गोपी और सीमा तीन दोस्त थे। वे सब एक ही कक्षा में पढ़ते थे। वे हमेशा कक्षा में साथ ही रहते थे। तीनों होशियार भी थे। उनको हमेशा अधिक जानने की इच्छा रहती थी। कक्षा में 'विज्ञान मेला' के बारे में चर्चा हो रही थी। कुछ ही दिनों बाद सभी स्कूलों का विज्ञान मेला होने वाला था। वे तीनों भी उसमें भाग लेना चाहते थे। लेकिन उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह किस चीज का माडल बनाएं।

अगले दिन तीनों को पास के बाग में इकट्ठा होना था। वे वहां पर इसी बारे में चर्चा करने वाले थे। तभी राजू ने देखा कि बाग में तीन चीजें रखी हुई हैं। वह सोचने लगा कि ये चीजें क्या हैं ? तभी उन्हें एक आवाज सुनाई दी—'बेटा, यह गोल-सी चीज तुम्हारी पृथ्वी है। ये तीन राकेट हैं तथा सबसे ऊपर उपग्रह है।'

राजू ने पूछा—"यह उपग्रह क्या होता है ?" आवाज बोली—' उपग्रह राकेट द्वारा अंतरिक्ष में छोड़ा जाता है। यह हमें पृथ्वी तथा मौसम के बारे में काफी जानकारी देता है। राकेटों से उपग्रह को पृथ्वी से अंतरिक्ष में भेजा जाता है। इसके अलावा राकेट के द्वारा मनुष्य भी अंतरिक्ष तक जाता है तथा नई जानकारी प्राप्त करता है।'

"उठो राजू, उठो।"—इस आवाज से राजू की आंख खुली। उसने देखा कि वह तो घर में लेटा हुआ है। बाग में जाने का समय भी हो गया था। वह खुशी से दौड़ता हुआ अपने दोस्तों के पास पहुंचा। बोला—"हम उपग्रह व राकेट के माडल बनाएंगे।"

उनका माडल सारे स्कूलों में प्रथम आया। वे तीनों बहुत खुश हुए।

—अनिरुद्ध गुप्ता, राजौरी

जय और विजय

रामपुर नाम का एक गांव था। वहां जय नाम का एक लड़का रहता था। वह बहुत गरीब था, फिर भी



बहुत होशियार, बहादुर व नेकदिल था। सभी गांव वासी उसे बहुत चाहते थे। पर कोई मित्र न होने के कारण वह बहुत दुखी रहता था।

एक दिन, यही दुःख उसे सताने लगा, तो वह उठा और खेतों की तरफ चल पड़ा। अचानक उसे पास वाली सड़क पर एक लड़का जाता दिखाई दिया। लड़का अपने पीछे तेजी से आने वाले ट्रक से अनजान था। जय उस ओर लपका। वह तेजी से गया और उस लड़के को धक्का दे दिया। वह लड़का तो बच गया पर जय चोट लगने से बेहोश हो गया। होश आने पर उसने पाया कि वह अपने घर में था। वह लड़का और उसके माता-पिता भी वहीं थे। उस लड़के का नाम था, विजय। विजय ने कृतज्ञता और प्रेमपूर्वक जय को अपने साथ शहर घुमाने ले जाने का प्रस्ताव रखा। जय के माता-पिता ने स्वीकृति दे दी।

जय के स्वस्थ होते ही वे दोनों दिल्ली शहर चले गए। विजय के घर पहुंच जय को अपनत्व-सा महसूस हुआ। नाश्ता करने के बाद वे दोनों विजय की बहन के साथ दिल्ली घूमने निकल पड़े। लाल किला, कुतुब मीनार, जंतर-मंतर आदि होते हुए वे अंत में विज्ञान संग्रहालय पहुंचे। दोनों की आंखों में उत्सुकता व प्रसन्नता थी।

संग्रहालय के अंदर का माहौल कुछ अलग ही था। दोनों को लगा जैसे दूसरी दुनिया में आ गए हों। उत्सुकता के कारण थकान उनसे कोसों दूर थी। वहां उन्होंने अनेक वैज्ञानिक उपकरण, उपग्रह आदि के माडल तथा अनेक चित्र देखे। फिर वे एक ऐसे कक्ष

में पहुंचे जहां एक उपग्रह का माडल रखा था। जय को यह जानकर देश पर गर्व हुआ कि उसका भारत देश भी अंतरिक्ष में अपनी छाप छोड़ चुका है। उत्सुकतावश उन्होंने उसी माडल के साथ अपनी फोटो खिंचवाई। जय ने यादगार के रूप में फोटो की एक प्रति अपने पास रख ली।

दो दिन बाद जय गांव के लिए रवाना हो गया। विजय ने बोझिल मन से उसे विदा किया। जय की आंखों में भी मित्र के लिए प्रेम व इस यात्रा की सुनहरी व मधुर यादें थीं।

—मनोज जैन, अलवर

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : चारु भटनागर, शिमला; ममता कुमारी, सुंदरवन; सुभाषचंद्र गुप्ता, यमुनानगर।

नंदन ज्ञान-पहेली : ३१२

परिणाम



इस बार पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया, लेकिन कोई सर्वशुद्ध हल नहीं आ सका। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

एक गलती : नौः प्रत्येक को एक सौ दस रुपए

१. रुचि खरे, वाराणसी; २. यतेंद्र सिंह, भरतपुर; ३. अपर्णा मिश्रा, भिंड; ४. फाजिला खान, किरतपुर (बिजनौर); ५. रत्नेशकुमार सिंह, हसनपुरा (सिवान); ६. सुनीलकुमार पूनियां, झुंझनू; ७. पल्लवी अग्रवाल, पुन्हाना (गुड़गांव); ८. पंकज दुबे, कनखल (हरिद्वार); ९. राहुल गुप्ता, कोटा।

शीर्षक बताइए

परिणाम



'नंदन' दिसम्बर '९४ में छपे रंगीन चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए—

जन्म दिन के शुभ अवसर पर, फोटो खिचवाऊंगी मैं हंसकर।

—लालमणि जोशी, गोपालसिंह नेगी, ग्रा. डहरिया, पो. मानपुर, हलद्वानी, नैनीताल (उ. प्र.)।

यहीं उम्र है कुछ करने की, बांहों में नभ को भरने की।

— सोनल चड्ढा, ८९९, रानी बाग, दिल्ली-३४।

कब से बैठी हूं आस लगाए, आकर कोई मुझे बहलाए।

—राजू तामंग, धन बहादुर तामंग, ग्रा. मेथीबारी, पो. सुकमा, जि. दार्जिलिंग (प. बं.)।

मेरी बहना बहुत उदास, देख रही पापा की आस।

—विकास राहुल, द्वारा लक्ष्मीकांत, अधिवक्ता, रघुवीर सदन, नवलकिशोर रोड, कदम कुआं, पटना।

इनके शीर्षक भी सराहे गए : मुकेशकुमार, शाजापुर (म. प्र.); मीना देवी, कटक (उड़ीसा); सुमन दीप, पानीपत (हरि.); मुकेशकुमार, झुंझनू (राज.); शशि अग्रवाल, मैसूर।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं ओर के दरवाजे का हैंडल नहीं है।

२. सामने शो विंडो में तीन की जगह चार कप रखे हैं।

३. सामने खड़ी महिलाओं में से एक का पर्स छोटा है।

४. दूसरी महिला का टोप चपटा है।

५. दूकान के बोर्ड पर स्थापना का सन बदल गया है।

६. अंदर आने वाली महिला के बाल सफेद हैं।

७. दाईं ओर के मकान की खिड़की पर लगी एक पट्टी नहीं है।

८. कार में साइड वाला शीशा लगा है।

९. उसका मडगार्ड अधिक लम्बा है।

१०. कार के पीछे लगे खंभे के ऊपरी भाग पर पुता काला रंग कम स्थान में है।

पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ______________________ आयु __________

पूरा पता ______________________________

____

रुचि ______________________________

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. लक्ष्मी बिष्ट, १३ वर्ष, के. के. एम. कालोनी, ११, नाला पानी रोड, देहरादून; २. नवीनकुमार, १३, १४ यू एफ, तानसेन मार्ग, नई दिल्ली; ३. कमलकुमार, १५, ग्रा. सिमरिया, जि. रामपुर (उ. प्र.); ४. संदीप कांडपाल, १४, प्रेम कुटीर, जाय विला कम्पाउंड, तल्लीताल, नैनीताल; ५. अमित पोद्दार, १३, पी ११, देवेंद्र दत्त लेन, ठाकापट्टी, कलकत्ता; ६. मो. गुलामहैदर खां, १४, ग्रा.+पो. हृदय चौक, वाया कलेर, जि. जहानाबाद (बि.); ७. अमितकुमार, १६, ए ५०१/आर, चर्च रोड, सदर, करनाल; ८. दीपककुमार, १२, बी ५५३, संग्राम साईं कैम्प, नोवामुंडो बाजार, सिंहभूम (बि.); ९. रोहतासकुमार, १३, ई/१८, मजनूं का टीला, दिल्ली; १०. अभिजीत सिंह, १३, आई. टी. आई. रोड, सिविल लाइन, निकट एग्रो फतेहपुर (उ. प्र.); ११. हर्षवर्धन जायसवाल, ९, १२५ ए. एस. एफ. एस., गुलाबीबाग, दिल्ली; १२. [illegible] वाड़ी, १२, सर्वोदय हाईस्कूल के निकट, भोगलपुरा, दरभंगा (बि.); १३. विनीत भंसाली, १३, मातृभवन, प्रधान बिल्डिंग के निकट, हाकिमपाड़ा, सिलीगुड़ी; १४. विकास भारद्वाज, १६, राजेंद्र शर्मा, सुदामापुरी, गंजडुडवारा, जि. एटा (उ. प्र.); १५. मनोजकुमार अग्रवाल, १२, वैरागपुरा, गली नं. ९, मथुरा (उ. प्र.); १६. मुनव्वर इरफान अख्तर, १४, नुमान अख्तर, ए/३४६, ए. जी. कालोनी, पो. आशियाना (बि.); १७. विकास खोब्रागढ़े, १५, जी. एस. खोब्रागढ़े, इंदिरा कालोनी, दल्ली राजहरा, जि. दुर्ग (म. प्र.); १८. पंकजकुमार, १५, डा. जयंतकुमार, राजेंद्रनगर, बस स्टैंड के निकट, नवादा (बि.); १९. धर्मेंद्रकुमार पाल, १४, पी १५५/१, एम. ई. एस. कालोनी, चेथम लाइन, प्रयाग, इलाहाबाद; २०. योगेशकुमार, १५, निकट छोटा बिजलीघर, रेलवे रोड, कांधला (उ. प्र.); २१. शीनू जोन, १६, ६०२/३, न्यू प्रोजेक्ट, आई. ए. एफ. स्टेशन, पुणे; २२. ऋषिकुमार सोनी, १२, २३/ए, रिसाली सेक्टर, भिलाई (म. प्र.); २३. राजू कुंडू, १६, ए. बी. कुंडू, पो. वीरमितरांपुर, सुंदरगढ़ (उड़ीसा); २४. रिप्पी भट्टाचार्य, १०, ४७ ए. पी. कालोनी, गया (बि.); २५. मो. रेहान रजी, १३, मो. जावेद रजी, ग्रा+पो. अंधऊ, जि. गाजीपुर (उ. प्र.) ।

खेल, संगीत और चित्रकला में रुचि :

१. दिव्या गुप्ता, १६ वर्ष, सोहनप्रसाद, सी. डब्लूयू. एस. बड़काकाना, हजारीबाग (बि.); २. अमर गोस्वामी, १६, राजमहल के पास, तैलंग भवन, टीकमगढ़ (म. प्र.); ३. संजय अग्रवाल, १६, अग्रवाल साइकिल स्टोर, रेलवे रोड, डोईवाला, जि. देहरादून; ४. सैयद अदीबुज्जमा, १६, न्यू कालोनी, धर्मपुर, समस्तीपुर (बि.); ५. राहुल शर्मा, १६, घनश्याम शर्मा, वकील कालोनी, भीलवाड़ा (राज.); ६. सुधीरकुमार जैन, १५, म. न. १४८, वार्ड न. ३, राबर्ट्सगंज, सोनभद्र; ७. सुमित मिश्र, १२, ५७ बी, मिश्र निवास, नारायणनगर, एटा; ८. अवि माथुर, १०, ६५ एन, गौतमनगर, नई दिल्ली; ९. अमला श्वेता, १५, उर्मिला निवास, दहियावा टोला, छपरा (बि.); १०. वरुण गुप्ता, १५, बिंदेशकुमार गुप्ता, एडवोकेट, भोलानाथ गार्डेन, कालाडुग्गी रोड, हलद्वानी (उ.प्र.); ११. पंकज केड़िया, १५, ई/एल ७९, बस्ती कालोनी, राउरकेला (उड़ीसा); १२. राजन, ६, एच ४०९, श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली; १३. अनूप गौरव, १२, उर्मिला निवास, दहियावा टोला, छपरा (बि.); १४. संदीप बंसल, १५, २२/ए, पुराना जवाहरनगर, जालंधर शहर (पं.); १५. डालीकुमारी, ११, डा. रमाकांत झा, ग्रा. +पो. बसहा, जि. सुपौल (बि.); १६. आजाद सिंह चौहान, १५, देवेश्वरी पाथरी, अजबपुर कलां, माता मंदिर के निकट, पो. अजबपुर, जि. देहरादून; १७. सपनाकुमारी, ६, ममताकुमारी, ११, स्वदेशी दवाखाना, साहिबगंज, छपरा (बि.); १८. राजीव शर्मा, १६, ए ३९, सेक्टर ६२, नोएडा, जि. गाजियाबाद (उ. प्र.); १९. अब्दुल रहमान खान, १३, मो. हनीफ खान, झंडा गली, हमाम, रामपुर (उ. प्र.); २०. कुमार अभिषेक, ९, जी. एन. तिवारी, महाइंदु कुटीर, न्यू कालोनी, जगजीवन नगर, धनबाद; २१. विजयपाल सिंह, १२, तेजपाल सिंह, टेलीफोन कालोनी, हाथरस, जि. अलीगढ़ (उ.प्र.); २२. निशा शर्मा, १६, जीतू शर्मा, ब्रह्मपुरी, फफराना रोड, मोदीनगर (उ. प्र.) ।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित ।

कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन


The Nicest Class Mate you could have!
MICKEY MOUSE NEO FOUNTAIN PENS
In exciting body colors, with a modern injection filling system that puts the fun back into filling ink!
Now, your mate Mickey Mouse can be with you wherever you are. Cheering up your classwork (and homework) with Mickey Mouse Neo Fountain Pens.
And adding a whole lot of color to your day with Mickey Mouse Colorstix!
So, get your Mickey Mouse pens from Stic. And you've got the greatest mate of them all.
MICKEY MOUSE COLORSTIX
MICKEY MOUSE COLORSTIX
In 12 exciting colors including never-befores like Flesh Tint, Sky Blue and Light Pink. Plus a set of FREE MICKEY MOUSE STICKERS with every pack of 12 or 6 Colorstix Pens.
MICKEY MOUSE PENS
Stic
Stic Pens Pvt. Ltd. C-101, Mayapuri Industrial Area, Phase II, New Delhi 110 064.


पारले
अब पारले पॉपिन्स का मज़ा चलता जाए...
भले ही पैकेट खत्म हो जाए
पारले पॉपिन्स के रैपर भेजिए, धमाकेदार उपहार पाइए.
मुफ्त : पारले पॉपिन्स के 20 रैपर भेजने पर शरारत भरा पज़ल किट. पारले पॉपिन्स के 10 रैपर भेजने पर फन पेड और जंगल बुक स्टिकर.
पारले पॉपिन्स के 4 रेपर भेजने पर जंगल बुक स्टिकर.
* पॉपिन्स इस भेंट के बिना भी मिलता है.
PARLE
POPPINS
अब फलों के नए-नए स्वाद में
फ्रूट जूस या पल्प रहित,
अतिरिक्त फ्लेवर सहित.
जल्दी करो
उपहार बहुत कम हैं.
डाक टिकट लगे लिफाफे पर अपना नाम और पता लिखें और पारले पॉपिन्स के खाली रेपर के साथ इस पते पर भेजें. पॉपिन्स पॉइन्ट, पी. ओ. बॉक्स 907, बम्बई-400057.
everest/94/PP/